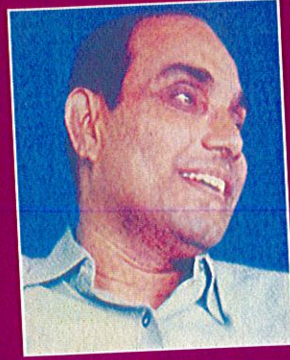
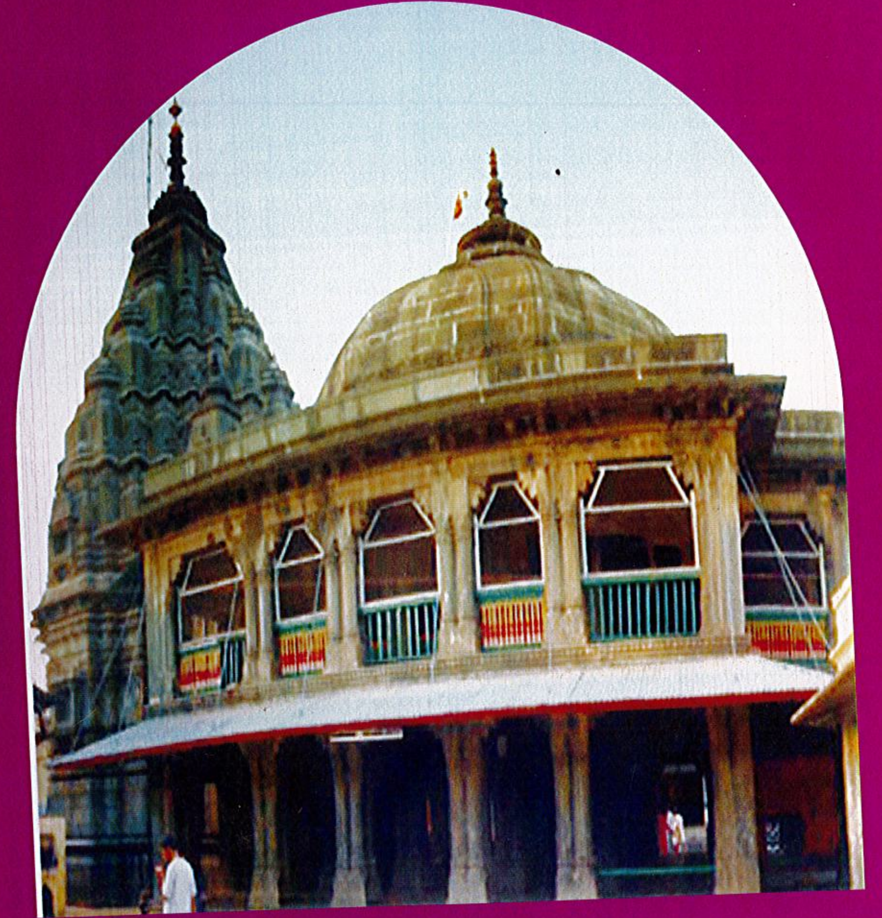


नरेन्द्र झा

दरभंगा जिलाक तरौनी ग्राम मे अनन्त चतुर्दशीक' 1934 मे जन्म। तरौनी, दरभंगा, दिल्ली और कोलकता मे अध्ययन । कोलकत्ते स' चार्टर्ड एकाउटेंटक डिग्री आ ओतहि दस वर्ष अपन पेशाक संगहि मिथिला दर्शन, मिथिला मिहिर आ अन्य पत्रिका मे मिथिलाक उद्योग-धंधा आ अर्थव्यवस्था पर नियमित लेखन । मिथिला -मैथिलीक आन्दोलन आ सांस्कृतिक गतिविधि मे संलग्न । 1976 स' पटना मे अपन पेशा स' जुड़ल रहैत मैथिली पत्र-पत्रिका आ आकाशवाणी पटना स' मिथिलाक अर्थव्यवस्था आ अर्थतंत्र पर - लेखन आ निम्न पोथीक प्रकाशन

1. मिथिलाक आर्थिक विकास (2000)
2. मिथिलाक जनपदीय विकास (2005)
3. मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन (2006)
4. विकास ओ अर्थतंत्र (2008)
5. अर्थतंत्र ओ भ्रष्टाचार (2012)
6. परिभ्रमण (2012)

स्मृति



नरेन्द्र झा

स्मृति

नरेन्द्र झा

अपर्णा प्रकाशन
पटना

प्रकाशक	:	अपर्णा प्रकाशन झा एण्ड एसोसिएट्स 406-407 ग्रैन्ड प्लाजा फ्रेजर रोड, पटना-800 001
©	:	राजीव कुमार झा, (एफ.सी.ए.)
प्रति	:	300
मूल्य :	:	100/- टाका
प्रथम संस्करण	:	2013
मुद्रक	:	शंभू प्रिन्टर्स नयाटोला, यादव टिम्बर, पटना-800 004 Mob. 9386858536
आवरण	:	गयाक विष्णुपद मन्दिर

SMIRITI

By

NARENDRA JHA

अपन बात

मिथिला अपन भाषा-संस्कृति ओ जीवन शैलीक विशिष्टताक कारणेँ जानल जाइछ । मनुष्यक जन्म मात्र अपनहि हेतु नहि होइछ । हमरा सँ हमर परिवार आ समाज सब जुड़ल अछि । तेँ हेतु मनुष्य एक सामाजिक प्राणी थिक । समाज मे जे नव मार्गक अन्वेषण करैछ, नवनिर्माण करैछ । हुनक सोच अनका सँ पृथक होइछ। हुनका दोसरा सबकेँ जोड़बाक शक्ति होइछ तथा अन्यकेँ अपन विचार पद्धति मे सम्मिलित करबाक सामर्थ्य होइछ । अपन विचार एवं भावनाकेँ दोसरा तक पहुँचयबाक वाक्क्षमता, अपना कार्यक प्रति दृढ़ निष्ठा, अदम्य उत्साह एवं आत्म अनुशासन आदि गुण एहेन व्यक्तिकेँ अन्य साधारण व्यक्ति सँ पृथक करैछ । सर्वोपरि होइछ सेवा भाव एवं समर्पण भावना, निःस्वार्थता एवं अहंकार निवृति । कृतिक सही मूल्यांकनक हेतु एहेन व्यक्तिक जीवन-वृत्त ओ हुनक व्यक्तित्वक ज्ञान परमावश्यक । कृतित्व विवेचन मे व्यक्तित्व-विशलेषणक आवश्यकता महत्त्वपूर्ण छैक । 1954 सँ मिथिला-मैथिलीक काजमे हम अद्यपर्य्यन्त संलग्न रहलहुँ । एहि अवधि मे अनेको व्यक्तिक संग काज करबाक मौका भेटल । एहिमे सफलता सेहो भेटल। हम आठ व्यक्ति संग काज कयल । हिनका लोकनिक सात्विक सेवा भावना, विलक्षण कार्यदक्षता अप्रतिम कर्त्तव्यनिष्ठा, स्पष्ट दूरगामी लक्ष्य, मिथिलाक नवजागरणक सफल नेतृत्व कयलनि । अपन वैशिष्ट्य सँ सदा चमत्कृत करैत रहलाह मिथिला-मैथिलीक ई अमर सपूत लोकनि । जखनहि मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकास हैत एहि महामानव लोकनिक असली श्रद्धांजलि हैत । जाधरि मिथिला राज्य नहि बनत एहि अंचलक शोषण दिल्ली ओ पटनाक सरकार करबे करत । कोन देश, कोन समाज आलस्य, औदासीन्य मे सम्पन्न भेल अछि ? कर्म मे चित्त हृदयमे वैराग्य राखि चलू, कल्याण के छीनि सकत।

—नरेन्द्र झा

अनुक्रम

महामहोपाध्याय परमेश्वर झा–
वैयाकरण केसरी ओ कर्मकाण्डोधारक

महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक जन्म बलिया सय सकुरी मूलक काश्यप गोत्र पण्डित मैथिली ब्राह्मण कुल मे 27 दिसम्बर 1856 ई. केँ दरभंगा जिलाक तरौनी गाम मे भेल छलनि । तरौनी गाम सकरी रेलवे स्टेशन सँ पाँच किमी दक्षिण मे अवस्थित अछि । ई गाम प्राचीन कालसँ मिथिलाक विशिष्ट गामक प्रसिद्ध भ' गेल छल । एहि परिवारक पूर्वज लोकनि विद्या–बुद्धिमे प्रकृष्ट बुझल जाइत छलाह आ जनिक परम्परागत विद्या–व्यवसाय स' विशेषत: व्याकरण शास्त्रक दृष्टिएँ तरौनी विशिष्ट विद्यापीठक रूपमे मान्य भ' गेल छल। पांचम वर्षक अवस्था मे अक्षरारम्भ करा देल गेलनि । शीघ्र अक्षर ज्ञान प्राप्त कयलनि तथा अपन पिता सँ अनेकानेक नीति–सूक्ति कण्ठगत कय लेलनि । मौखिक रीतिऐं व्याकरणक आरम्भिक ज्ञान लाभ कयलनि । आठ वर्षक अवस्था मे दसौत ग्राम निवासी बाबू सूर्यनारायण चौधरीक संस्कृत पाठशाला मे व्यवस्थित रीतिसँ एवं विधिपूर्वक व्याकरण तथा साहित्यक पाठ ग्रन्थ सबहक अध्ययन आरम्भ कयलनि । एहि पाठशालामे पण्डित प्रवर चिरंजीव मिश्र सँ पढ़य लगलाह । हिनका सँ आठ वर्ष अध्ययन कयला पर व्याकरण आ साहित्य मे पूर्ण ज्ञान प्राप्त क' लेलनि । विशेष अध्ययनक हेतु काशी गेलाह आ क्वीन्स कॉलेज मे नाम लिखौलनि । एतय हिनका महापण्डित राजाराम शास्त्रीसँ पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेलनि । एतय पूर्व पठित विशिष्ट व्याकरण आ साहित्यक अतिरिक्त धर्मशास्त्र, मीमांसा, सांख्य तथा न्यायशास्त्रक शब्द खंडक गम्भीर अध्ययन कयलनि । न्याय शास्त्रक अनुमान खंडक सेहो अध्ययन कयलनि ।

क्वीन्स कॉलेजमे अध्ययन अवधि मे अनेको बेर अपन विलक्षण मेधा ओ अद्भुत प्रत्युत्पन्न प्रतिभाक परिचय अपन गुरुवर लोकनिकेँ चकित कय देने छलाह । कोनो सामयिक परीक्षामे एकटा प्रश्न अशुद्ध छलैक । अन्य छात्र लोकनि उत्तर-पुस्तिका मे लिख देलखिन जे प्रश्न अशुद्ध छैक । किन्तु म. म. झा ओहि प्रश्नकेँ शुद्ध कय लिख देलखिन । संगहि ओकर उचित प्रश्नोत्तर लिखलैन्ह । एहि सँ हिनक गुरु द्वारा प्रशंसित भेलाह । वार्षिक परीक्षामे व्याकरण ओ॰ धर्मशास्त्र विषयमे सर्वोत्तम रीतिए उत्तीर्ण भेला आ 14 मार्च 1874 केँ गवर्नर जेनरल ओ भाइसराय लौर्ड नौर्थबुक ससम्मान पारितोषिक प्रदान कयलथिन । एहिना एकबेर तत्कालीन दक्षिण प्रान्तीय शिक्षा विभागक प्रतिनिधि डा. बुलर क्वीन्स कॉलेज निरीक्षण मे आयल छलाह । म. म. झा संस्कृत मे धाराप्रवाह सम्भाषण एवं गूढ़ प्रश्नक समीचीन उत्तर सँ ई महाशय प्रसन्न भ' गेलाह आ उपस्थित गुरुजनसँ सेहो प्रशंसित भेलाह ।

उन्नैस वर्षक अवस्थामे अपन अध्ययन पूरा क' म.म. झा अध्यापन द्वारा जीविका उपार्जनक हेतु राजस्थानक झालरापाटन मे एक पाठशालामे संस्कृतक अध्यापकक पद पर कार्यरत भ' गेलाह । 1877 ई. मे एहि क्षेत्रमे घोर अकाल पड़ि गेल । अकालक विनाश लीलाकेँ देखि हिनक मोन उचटि गेलनि । संगहि एक करुण दुर्घटना सेहो घटल । एक प्रवासी मैथिल कन्या सँ विवाह कय लेलनि, जनिक देहान्त किछुए दिन मे भ' गेलनि । एहिसँ शोकित भ' 1880 ई. के आरम्भमे स्वेच्छया त्याग पत्र द' गाम घुरि अयलाह । किछु दिन गाममे रहलाह । 16 मई 1880 ई. के बनैली राज्यक राजपण्डित नियुक्त भ' गेलाह। परन्तु एतहु अपन स्वर्गीय पत्नीक मृत्यु तथा पूर्णियाक जलवायु सेहो अनुकूल सिद्ध नहि भेलनि । बनैली राजपण्डितक पदकेँ त्यागि पुन: गाम घुरि गेलाह। गाममे स्वास्थ्य ठीक भ' गेलनि । मुदा मानसिक विक्षिप्तता बनल रहलनि । एते तक जे सामने सँ कोनो महिलाकेँ जाइत देखि कहैत छलथिन जे बजा दिअ । एहू अवस्थामे हिनक शास्त्र-साधना चालू छलनि ।

गन्धबारि गाममे चन्द्रवती बहुआसिन साहेबक संस्कृत पाठशाला मे प्रधानाध्यापक मे नियुक्ति भेलनि आ 1899 ई.क मध्यधरि 12 वर्ष तक एतहि अध्यापन वृत्ति मे रहलाह । ई बहुआसिन महराज कुमार बाबू वासुदेव सिंहक पत्नी छलखिन्ह । ई सब महाराजाधिराज दरभंगाक परिवारक छलखिन्ह । एतय म.म. परमेश्वर झा अनेक महत्वपूर्ण धर्मशास्त्र ग्रन्थक सम्पादन कयल तथा बहुआसिन सँ अर्थ साहाय्य प्राप्त क' तकरा सबकेँ प्रकाशित सेहो करौलनि। बाबू वासुदेव सिंह तरौनी गामक वैयाकरण केशरी पण्डित चन्द्रमणि झा सँ सम्पूर्ण व्याकरण ग्रन्थक अध्ययन कयने छलाह तथा धर्मशास्त्र मे सेहो विलक्षण प्रतिभा छलनि । किन्तु अल्पायु भेलाह । हिनक देहावसानक बाद खण्डवला कुलक नियमानुसार बबुआनी सम्पत्ति दरभंगा राजमे अन्तर्भूत कय लेल गेलनि । किन्तु, हिनक अपन उपार्जित सम्पत्ति प्रचुर छलनि आ बहुआसिन साहिबा अन्य व्ययक संग विद्या ओ विद्वान सबहक पोषण करैत रहलीह । 1899 मे बहुआसिन साहिबाक मृत्यु भ' गेलनि आ हिनक निजी उपार्जित सम्पत्ति सेहो दरभंगा राज मे मिला लेल गेलनि । एक जुलाई 1899 ई. केँ महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह म.म. परमेश्वर झाकेँ राजपण्डितक पद पर नियुक्त क' लेलखिन । एकर बाद अपन शेष जीवन राज दरभंगाक सेवा मे बितौलनि ।

महराज रमेश्वर सिंह पाठावस्थाहुमे अतितीक्षण बुद्धिमताक कारणें अत्यन्त स्वल्प वयसमे संस्कृत, अंग्रेजी तथा पारसी मे पूर्ण विद्वता हासिल क' लेने छलाह । हिनक विद्वता देखि ब्रिटिश सरकार सिविल सर्विस मे प्रवेश देलकनि। पहिने दरभंगा मे असिस्टेन्ट मजिस्ट्रेट भेलाह । बादमे छपरा-भागलपुरक मजिस्ट्रेट भेलाह । 1878 से 1885 ई. तक सरकारक सर्विस मे रहलाह । 1889 ई. मे राजाक पदवी भेटलनि । धर्ममे अटूट विश्वास छलनि । तीर्थ यात्राक अत्यन्त प्रेमी छलाह । सम्पूर्ण भारतक तीर्थ चतुर्धाम, सप्तपुरी आदि सर्वत्र सँ परिभ्रमण कयने छलाह । 30 दिसम्बर 1898 ई. मे राजतिलक भेलनि। 23 जनवरी 1899 मे के. सी. एस. आईक पदवी भेटलनि । एहि वर्ष

विद्वत्वर्ग मे धोती परीक्षा प्रारम्भ कयलनि । परीक्षोतीर्ण व्यक्तिकेँ धोती मात्र भेटैत छलनि । अपन विषय मे सर्वप्रथम भेला पर दोसाला सेहो देल जाइत छलनि । म.म. परमेश्वर झाकेँ व्याकरणमे धोती आ दोसाला देल गेलनि । धौत परीक्षाक आयोजन राजपरिवारमे विवाह-उपनयन आदि शुभ अवसर पर होइत छल । म. म. परमेश्वर झाकेँ कर्मकाण्ड विषयमे सेहो धोती आ दोसाला देल गेल छलनि । म. म. डा. गंगानाथ झा जे दरभंगा राजक पुस्तकालयक मुख्य व्यवस्थापक छलाह । 1900 ई. मे महराज रमेश्वर सिंह गणेश पूजाक पूरा भार डा. झाकेँ देलखिन्ह । डा. झा स्वीकार नहि कयलनि आ पूर्व स' निश्चित बरहगोड़ियाक ड्यौढ़ी मे पूजा करयबाक हेतु चल गेलखिन । महाराज एहि पर तमसाय डा. झाकेँ पुस्तकालयक काज सँ वर्खास्त क' देलखिन आ अबिलम्ब अंग्रेजी विभागक भार बाबू केशी मिश्रकेँ आ संस्कृतक म. म. परमेश्वर झाकेँ द' देवाक आदेश देलथिन । म. म. परमेश्वर झा पदभार नहि लेलखिन्ह कारण डा. झाकेँ सम्मान करैत छलथिन । टाल-मटोल करैत रहलखिन आ अन्तमे डा. झा कुंजीक झाबा हिनका सामने फेंक देलखिन आ कहलखिन, 'इयह हम चललहुँ ।'

गन्धबाड़ि ड्यौढ़ी मे अध्यापन कालमे व्याकरण विषयमे अपन गम्भीर विद्वताक कारण 'महावैयाकरण'क रूप मे मान्य भ' गेल छलाह तथा अनेक कर्मकाण्ड ग्रन्थक प्रणयन, सम्पादन ओ प्रकाशन काजक हेतु विद्वत्मंडली द्वारा 'कर्मकाण्डोद्वारक' उपाधि सँ विभूषित भेल छलाह म. म. परमेश्वर झा । भारत धर्ममहामंडलक विराट सभामे 1908 कें 'वैयाकरण केसरी' ओ 'महोपदेशक'क उपाधि प्राप्त भेलनि । 1914 ई. मे 'महामहोपाध्याय'क उपाधि ब्रिटिश सरकार दिससँ देल गेल छलनि । पटनामे आयोजित पण्डित सभा द्वारा 'विद्यानिधि'क उपाधि देल गेल छलनि । 1974 ई. मे महाराज रमेश्वर सिंहक अध्यक्षता मे मिथिलाक विशिष्ट पण्डित लोकनिक एक सभामे हिनका अभिनन्दन पत्र समर्पित भेल छल तकर रचयिता वैयाकरण शिरोमणि खुद्दी झा छलाह । संस्कृतक हिनक विद्वता ओ व्यवहार कुशलताक कारण बिहारक राज्यपाल

हिनका सिनेट आ सिन्डिकेटक सदस्य नियुक्त कयलखिन । पटना विश्वविद्यालय स्थापनाक बाद प्रथम सिनेट सदस्य नियुक्त भेलाह । एहिना मुजफ्फरपुर मे धर्म समाज संस्कृत महाविद्यालयक स्थापना भेला पर कार्यकारिणी मे सम्मिलित कयल गेलाह । शिक्षाक उन्नतिक क्षेत्रमे अपन महत्त्वपूर्ण योगदान दैत रहैत छलाह ।

मिथिलाक विद्वत्परम्पराक जाज्वल्यमान नक्षत्र छलाह म. म. परमेश्वर झा। हिनक ख्याति व्याकरण ओ धर्मशास्त्र विषयक विद्वताक हेतु विशेष छलनि। हिनका सब शास्त्र पर समान रूपसँ अधिकार छलनि ।. योजनाबद्ध रीति स' संस्कृतक अनेक दुर्लभ ग्रन्थक सम्पादन प्रकाशन दिस अधिक अभिरुचि देखौलनि । हिनक रचित ग्रन्थमे संस्कृतमे धर्मशास्त्रक 23 पोथी प्रकाशित भेल छल । संस्कार (दशकर्म) पद्धित मे छन्दोग पद्धति आ वाजसनेयि संस्कार पद्धतिकेँ संशोधित सम्पादित क'अपन सारगर्भित टिप्पणीक संग प्रकाशित कयलनि । वर्षकृत्य, मासनिर्णय, दशकर्म पद्धति, वृषोत्सर्ग पद्धति, सदाचार पद्धति, श्राद्धरत्न टिप्पणी, शिवस्थापन विधि, मास निर्णय, नक्षत्र निर्णय, राज्याभिषेक पद्धति एवं एहि तरहक 23 पोथी प्रकाशित छल । साहित्यमे 6 पोथी जाहिमे ऋतुवर्णनम्, यक्षसमागम, कुसुम कलिका आख्यायिका एवं अन्य व्याकरण मे 6 पोथी जाहिमे आर्य सिद्धान्त संग्रह, परमेश्वर कोष, प्रयोग दर्पण, संस्कृत पाठ आदि । एहि तरहें संस्कृत मे 35 पुस्तक प्रकाशित छलनि । वस्तुतः हिनका समय मे कोनो संस्कृत भाषा ओ उत्थानक काज भेल ताहि सबमे हिनक कृतित्वक छाप सहजता सँ दृष्टिगोचर हयत । संस्कृत साहित्यक मर्मज्ञ पण्डित छलाह । एहिकाल मे अनुसन्धान ओ अनुशीलनक काज बिना हिनकर परामर्श संभव नहि होइत छल । हिनक परमेश्वर पुस्तकालय गाममे छलनि । सुयोग्य उत्तराधिकारीक अभावमे सब नष्ट भ' गेल ।

मिथिलामे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक राज्य कालक समयमे शिक्षित महानुभाव लोकनि मैथिली भाषाक प्राचीन पुस्तक सबहक अनुसन्धान ओ ओकर प्रकाशन तथा नव-नव रचना दिस प्रवृत भेलाह । मैथिली भाषा ओ

साहित्यक उन्नतिक एकटा नवजागरण प्रारम्भ भेल । दरभंगामे 'मिथिला अनुसन्धान समिति'क स्थापना भेल जेकर मुख्य उद्देश्य छल मिथिलाक प्राचीन वस्तुक अनुसन्धान द्वारा एकर गौरवक सम्पादन । एहि समितिमे मुकुन्द झा वख्शी, गणनाथ झा, मुंशी रघुनन्दन दास, तुलापति सिंहक नाम विशेष उल्लेखनीय अछि । मैथिली साहित्य क्षेत्रमे म. म. परमेश्वर झाक प्रवेश 'मिथिला मोद'क प्रकाशनक अनन्तर 1906-07 ई. मे भेल । एकर प्रथम अंकमे म. म. मुरलीधर झा हिन्दीक शैलीकेँ प्रयोग कयने छलाह जेकर खुब खिदान्स भेलनि । मिथिला मोदक लेखनशैली स' वैमत्य होइतहुँ म. म. परमेश्वर झा अपन प्रगतिशील उदार व्यक्तित्वक अनुरूप एकर प्रकाशनक हार्दिक स्वागत कयल एवं अपन रचना द्वारा एकरा सहयोग देबय लगलाह । मिथिला मोदक हेतु 'सीमन्तिनी आख्यायिका'क रचना प्रारम्भ कयलनि । मैथिली साहित्यक प्रथम उपन्यास धारावाहिक रूपमे छपैत छल । पुस्तकाकार नहि भ' सकल । सीमन्तिनी आख्यायिका हम मिथिला मोदमे थोड़ेक पढ़ने छी। एहिमे प्रसंगानुकूल बहुतो विषयक वर्णन भेल छैक । चौंसठि कलाक वर्णन, यौवनोद्भव ओ क्रमिक आंगिक ओ स्वाभाविक परिवर्तनक, निषध देशक राजधानी, वैवाहिक व्यवहार आ कोबराघर, बरियाती-सरियाती मध्य रोचक शास्त्रार्थ, उचिती आ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नवीन ज्योतिषी स' सीमन्तिनीक चौदहम वर्षमे सम्भावित वैधव्यक विषय बुझला पर हुनक माता-पिताक विवादक वर्णन, जाहिमे आधुनिक कथाक मनोवैज्ञानिक तत्वक सन्निवेश सेहो कयने छथि । सीमन्तिनीक जन्म स' विवाह पर्य्यन्तक कथाक वर्णन छैक। मिथिलाक लोक-संस्कृतिक वर्णन भेल अछि । जखन मैथिलीक गद्यशैली संस्कृतस' उद्भूत भ' अपन स्वतंत्र विकासक अनुसन्धान कयलक । म. म. परमेश्वर झा मात्र कथाकारे नहि गद्यकारक रूपमे सर्वप्रथम एहि 'सीमन्तिनी आख्यायिका'केँ लयकेँ मैथिली साहित्यकेँ नव अवदान कयलनि ।

'मिथिला-तत्व-विमर्श' केँ मिथिलाक प्रथम ऐतिहासिक पुस्तक होयबाक गौरव प्राप्त भेल छैक । 1909-10 ई.क मिथिला मिहिरक मासिक पत्रमे

धारावाहिक रूपमे प्रकाशित होमय लागल । ई पोथी मिथिलाक ऐतिहासिक चित्रक ओ एलवम थीक, जकर एक-एक पृष्ठ मिथिलाक गौरवकेँ सुरक्षित रखने अछि । प्रथम ऐतिहासिक पुस्तकक रूपमे एकर महत्त्व सर्वदा अक्षुण रहत । मिथिलाक राजनीतिक, सामाजिक एवं साहित्यक ऐतिहासिक सामग्री विशद ओ सूक्ष्म रूप मे सन्निहित अछि । मिथिलाक इतिहास ओ पुरातत्वक प्रसंग, एहि पोथीक लेखनक रूपमे हिनका से पहिने कियो नहि कयने छथि। तेँ ई पोथी एहि विषयक आधार-ग्रन्थ अछि । मैथिलीक हुनक सेवा मिथिलाक विभूतिक रूपमे परिगणित करबामे पूर्णतः समर्थ अछि । हिनक 'सदाचार दर्पण' प्रतिष्ठित मैथिली समाजमे प्रचलित न्यूनतम दैनिक उपासना विधि सरलतम मैथिली मे वर्णित अछि । एहि पोथीमे प्रातः स्मरण, सन्ध्यावन्दन तर्पण आदि अछि । ई पोथी उपनयनोत्तर प्रत्येक मैथिली बटुकक हाथ मे देल जाइत छल । हिनक चारिम पोथी 'महिषासुरवध' अछि । नाट्यशास्त्रक अनुकूल अभिनय दृष्टिएँ मातृभाषा मैथिली मे ई नाटक । ई पोथी अप्रकाशित छनि ।

म. म. परमेश्वर झा मैथिली साहित्यक एक विशिष्ट पण्डितक रूपमे सुधी समाजक द्वारा मान्य भ' गेल छलाह । 1917 ई. मे कलकत्ता विश्वविद्यालयक सर्वेसर्वा सर आशुतोष मुखर्जीक मैथिली प्रेम एवं बनैली (पूर्णिया)क राजा कीर्त्यानन्द सिंहक उदार अर्थसाहाय्यक फलस्वरूप ओहि विश्वविद्यालय मे मैथिलीक चेयर स्थापित भेल तथा 1919 मे स्वतंत्र भाषा साहित्यक रूपमे एम.ए.क पाठन आरम्भ भेल तँ सर आशुतोष मुखर्जी मैथिली साहित्यक अध्यापकक पद पर महामहोपाध्यायजीकेँ बजबाओल । ओ ओहि समय दरभंगा राज लाइब्रेरीक पुस्तकाध्यक्ष ओ द्वार पण्डित सेहो छलाह । प्रथम छअ मास डेढ़ सय रुपया आ एकर बाद दुसय रुपया मासिक तय भेल छलनि । एक वर्ष व्यतीत भेला पर सरकारी वेतनमान भेटवाक वचन भेटलनि । महामहोपाध्याय सहर्ष कलकत्ता जयबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह । महाराजाधिराज से अनुमति परमावश्यक । निवेदन कयलनि । पुछल गेलनि जे मासिक कतेक

भेटत । उत्तर छलनि डेढ़ सय रुपया । महाराज कहलथिन–डेढ़ सय रुपया मे खाईत-पीबैत आ घर भाड़ा देलाक बाद साठि रुपया बांचत । आइ सँ साठि रुपया मासिक भेटत । कलकत्ता जुनि जाउ। महाराज सर आशुतोष मुखर्जीकेँ तार देलखिन्ह जे हमर द्वार पण्डितकेँ फुसियाकेँ लय जयवाक प्रयास नहि कयल जाय । एहिसँ स्पष्ट होइछ जे म. म. परमेश्वर झाक विद्वताक ख्याति चरम पर छलनि आ एकर गौरव महाराजकेँ छलनि । राय बहादुर श्यामनारायण सिंह 'हिस्ट्री ऑफ तिरहुत 1922' मे लिखलनि आ भूरि-भूरि प्रशंसा आ कृतज्ञता ज्ञापित कयने छलथिन महामहोपाध्यजीक प्रति ।

म. म. परमेश्वर झाक कृतित्व सूक्ष्मतापूर्वक अनुशीलन कयल जाय तखनि सहजहि स्पष्ट भ' जायत जे हुनक समग्र जीवन अनुसन्धान कर्त्ताक रूपमे बितलनि । प्राचीन पाण्डुलिपिक अनुसन्धान, सम्पादन ओ प्रकाशनमे जीवनभरि समर्पित रहलाह । सबसँ बेशी धर्मशास्त्र विषयक प्राचीन ग्रन्थ दिसँ विशेष ध्यान देलनि तेँ कर्मकाण्डोद्धारक उपाधि सँ विभूषित भेलाह । महामहोपाध्याय मैथिल समाजक कुरीतिक प्रखर आलोचक छलाह । हुनक विचार परम्परागत नहि, प्रगतिशील छल । ओ गुणकेँ महत्त्व दैत छलाह, हरिसिंह देवक पांजि व्यवस्थाकेँ नहि । हिनका अनुसारें पोंजिमे जे श्रेष्ठ मानल जाइत छथि, किन्तु गुण ओ कर्म तादृश नहि छनि एहेन व्यक्तिक प्रति हुनक मत छल 'ब्राह्मण कुलीन व्यक्ति सँ निवेदन जे अपने सबहि ताहि गुण सभक उपार्जन करैत जाउ, जाहिसँ महाराज हरिसिंह देवक समयक पूर्व पुरुष सभ कुलीन कहाए निज-निज वंशकेँ उज्जवल कयलन्हि । आब ओहन समयनहि धयल अछि जे कुलाभिमाने चुऐत रहब ततबहिमे सबलोक श्रेष्ठ मानैत रहत । मैथिल ब्राह्मण समाज मे प्रचलित कुलीनता-प्रथाक कटु ओ तीव्र आलोचना कयने छथि ।पुनः कहैत छथि जे नवीन संशोधन मण्डली जकाँ जाति-पाँतिमे अनास्था बुद्धि अछि वा मेटाए देबाक इच्छा अछि, से कथमपि नहि, हम कुलशीलक परम पक्षपाती छी । मिथिला मे समुद्र यात्रा करब घोर अधार्मिक कृत्य मानल जाइत छल । एकर विरोध लोकमत एतेक विरूद्ध छलैक जे महाराज लक्ष्मीश्वर

सिंहकेँ अपन अस्वस्थता निवारणक हेतु इंगलैन्डक यात्रा स्थगित करय पड़लनि। प्राचीन रीतिक धर्मशास्त्रक प्रकांड विद्वान रहैत महामहोपाध्याय सर्वप्रथम समुद्र यात्राक प्रबल समर्थक भेल छलाह । एहि हेतु लोकमतक विरूद्ध ऋग्वेद, अथर्बवेद, मनुस्मृति, याज्ञवल्क्य स्मृति प्रभृति सँ वचन उद्धृत क' सिद्ध कयलनि जे ब्राह्मण एहेन प्रभावशाली होथि जे देशान्तर गेला सँ धर्मक रक्षा क' सकैथ तँ जयबामे कोनो दोष नहि । किन्तु, मिथिलाक परम्परावादी संस्कृतिक विरूद्ध महाराज कामेश्वर सिंह समुद्र यात्रा कयलनि आ इंगलैण्ड गेलाह । फिरलाह पर घोर कोपभाजन भेलाह आ समाजसँ बारि देल गेलाह । हमर पिता विद्यावाचस्पति उपेन्द्र झा महाराजक शिक्षण संस्था मे कार्यरत छलाह तथापि हिनकर सिद्ध अन्न ग्रहण नहि करैत छलखिन। कारण महाराजकेँ मैथिल समाज बारि देने छलनि। महामहोपाध्यायक तर्क केँ नहि मानल गेलनि । निष्कर्ष यैह जे स्वयं परम्परावादी होइतहुँ हुनक व्यक्तित्व मे निहित प्रगतिशीलता ओ नवयुगीन दृष्टिकेँ द्योतक अछि । मिथिलाक रूढि-रीति ओ मूर्खताक कटुआलोचक होइतहुँ अपन मातृभूमिक उत्कर्षपूर्ण विद्या परम्पराक प्रति गौरवक गम्भीर भावनासँ ओत-प्रोत छलनि । ओ मिथिलाक प्राचीन पण्डित परम्पराक एक महत्त्वपूर्ण शृंखला छलाह तँ दोसर दिस नवजागरणक संवेदनशील अग्रदूत छलाह । ओ प्राचीनताकेँ नवीनताक संग पूर्वापर संबंध स' समृद्ध करबाक हेतु तत्पर रहैत छलाह। विद्या व्यवसाय ओ शास्त्र-साधनाक प्रति समर्पित एक महापण्डित छलाह । एक दिस महामहोपाध्यायजी प्राचीन पण्डित परम्पराक महत्त्वपूर्ण व्यक्ति छलाह त' दोसर दिस संगहि-संग नवजागरणक अग्रदूत छलाह ।

मिथिला तत्त्व विमर्शक प्रथम संस्करण जे हुनक भातिज हरिश्चन्द्र झा 1949 मे प्रकाशित कयने छलाह, तकर भूमिका सुरेन्द्र झा 'सुमन' लिखने छलाह । एहि भूमिकाक अन्तमे विद्यावाचस्पति मधुसूदन झाक महामहोपाध्याजी उक्तिकेँ सुमनजी उद्धृत कयने छथि जेकर अर्थ ओ स्वयं लिखने छथि। 'अहाँक रचनाक माधुर्यक तुलना ककरा स' देल आय ? अमृतक माधुर्य

प्रख्यात अछि किन्तु ओहिमे दोष छैक जे बिना मुइने क्यो नहि प्राप्त कय सकैछ । मधुमीठ अछि मुदा अगवे मीठ प्रयुक्त जो उमठि जाइछ । अधरक मधुरता सुविदित अछि, किन्तु कानक हेतु ओकर कोनो उपयोग नहि । अतएव अहाँक रचनाकेँ अतुलनीय बुझैत छी। एहिसँ अधिक कहबाक ने उक्तिभंगी भेटत ने एहिसँ कम कहलाह मे सन्तोष होयत ।' महामहोपाध्यायजीक जीवनी जे 'मिथिला-विभूति' शृंखलाक अन्तर्गत पोथीक अन्तमे डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' लिखैत छथि 'देवभाषा संस्कृतक कतबो महान सेवा ओ किएक ने कयने होथि, मिथिलाभाषाक हुनक कृति सएह हुनक स्थायी यशक मेरुदण्ड बनि गेल अछि।

म. म. परमेश्वर झाक पारिवारिक जीवन सुखमय नहि छलनि । पिता पूर्णनाथ झा महावैयाकरणी छलखिन । हिनक दु पुत्र मे महामहोपाध्यायजी जेठ छलथिन । हिनक एकमात्र सहोदर भाई प्रयाग झा छलथिन । हिनका दु पुत्र देवचन्द्र झा हरिश्चन्द्र झा । हिनक पिता आ छोट सहोदर भाईक देहान्त भ' गेल छलनि । अपना कोनो पुत्र नहि भेलनि । मात्र एक कन्या जनिक नाम छलनि सत्यभामा । वृद्धामाताक देहान्तक पश्चात् जे पारिवारिक बन्धन छलनि ताहुसँ मुक्त भ' गेलाह । पुत्री सत्यभामाक सेहो अकाल मृत्यु भेलनि जे एक मात्र कन्या छोड़ि गेल छलथिन । तें पारिवारिक माया-मोहसँ विरक्त भ' अपनाकेँ समग्र भावे विद्या-व्यवसायक साधना मे लगा देलनि आ 68म वर्षक अवस्थामे 30 जून 1924 ई. केँ एहि असार संसारकेँ त्यागि देलनि । मिथिलाक परम्परागत पांडित्यक क्षेत्रमे हिनक निधन सँ जे क्षति भेल तकर क्षतिपूर्ति प्राय: एखन तक संभव नहि भ' सकल छैक ।



विद्यावाचस्पति पं० उपेंद्र झा : हमर पिता

मिथिलाक पावन भूमिक उत्कृष्टता जनक, याज्ञवल्क्य, शंकर, वाचस्पति, उदयन, मंडन, विद्यापति आदि मनीषि द्वारा रचित शास्त्र-पुराण मे वर्णित ओ प्रभावित अछि । एहि अंचलक कतेको विश्वविख्यात विद्वान विद्या रस प्रवाह स' आप्यायित कयने छथि । एहि अंचल मे अवस्थित तरौनी गाम (दरभंगा जिला अंतर्गत) संस्कृत शिक्षा मे विशिष्ट स्थान स्थापित कयने छल । गामहि मे संस्कृत टोल ओ संस्कृत विद्यालय छल। हमर पिता विद्यावाचस्पति पं० उपेंद्र झा बलिया स' सकुरी मूल वंशोद्भव म. म. पं. परशुराम झा आ अही कुलक अंतिम म.म.पं. परमेश्वर झाक वंशज। संस्कृत विद्वानक शृंखला मे, जाहि स' एहि गामक प्रसिद्ध समस्त मिथिला मे छल, हमर पिता अंतिम विद्वान भेलाह । हमर पितामह बबुआ झा ज्योतिषक प्रख्यात विद्वान छलाह, जनिक वाक्सिद्ध परोपटा मे चर्चित छल ।

हमर पिता उपेंद्र झाक जन्म 13 सितंबर 1903 केँ भेलनि । कृशकाय रहबाक कारण दुलारक नाम फुद्दी बाबू । प्रारंभिक शिक्षा गामहि मे भेलनि । अपन पितिऔत भायक,जे प्रतापनारायण संस्कृत विद्यालय मे ज्योतिषक आध्यापक छलाह, संग लक्ष्मीपुर, भागलपुर गेलाह । बंगालक मध्यमा परीक्षा देलनि एवं प्रथम श्रेणी मे उत्तीर्ण भेलाह । लक्ष्मीपुरे मे विकराल चेचक बीमारी स' आक्रांत रहला । भाय जेना-तेना उठा क' तरौनी अनलथिन । हिनक भयंकर रूप देखि हमर माई (पितामही) बड़का ककाकेँ कहलथिन जे ई कि उठाक' अनने छी । कतहु फेकि दितियैक । तदुपरांत बताहि भ' गेलीह । 11म दिन स' सुधार हैब शुरू भेलनि । छः मास स्वस्थ हेबा मे लगलनि । पुनः अध्ययनक हेतु लक्ष्मीपुर नहि गेलाह । म. अ. रमेश्वरलता महाविद्यालय दरभंगा मे व्याकरणाध्यापक मुक्तिनाथ मिश्र (पं. श्री चंद्रनाथ मिश्र अमरजीक

पिता) स' व्याकरण आ षट्शास्त्राचार्य रविनाथ झा स' मीमांसा पढ़ब प्रारंभ कयलनि । धर्म समाज महाविद्यालय मुजफ्फरपुर मे चनौर ग्राम निवासी महामहोपाध्याय शशिनाथ झा स' शब्दरत्न पढ़लनि । अपनहु पढ़थि आ 30टा विद्यार्थी केँ पढ़ेबो करथि । लक्ष्मीपुर, भागलपुर मे व्याकरणक अध्यापक सर्वप्रथम नियुक्त भेलाह । मुदा ओहिठामक परिस्थिति उपयुक्त नहि देखि पुनः दरभंगा सात दिनक अन्दर घुमि गेलाह । 1929 मे रमेश्वरलता महाविद्यालय दरभंगा मे व्याकरणक द्वितीयाध्यापक नियुक्त भेलाह । 1958 मे एहि महाविद्यालय मे प्राचार्य पद पर प्रतिष्ठित कयल गेलाह । 1975 मे कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगा मे स्नातकोत्तर विभाग खोलल गेल एवं व्याकरण विभागक अध्यक्ष नियुक्त कयल गेलाह । विश्वविद्यालय मे विभागाध्यक्ष पद स' निवृत्त भेला पर केंद्रीय सरकार द्वारा संचालित 'शास्त्र चूड़ामणि' योजनान्तर्गत प्रख्यात विद्वानक रूप मे कार्यरत रहलाह । व्याकरण, न्याय बिहार स', व्याकरण तीर्थ बंगाल स' तथा दर्शन, साहित्य, कर्मकांड ओ मीमांसक गहन अध्ययन कयने छलाह।

सर्वप्रथम 1930 मे बड़ौदा मे दक्षिणा परीक्षा देबाक हेतु गेलाह । सफल भेलाह । बढ़िया राशि प्राप्त कयलनि । राज दरभंगा द्वारा संचालित धौतपरीक्षा मे प्रतिष्ठा प्राप्त कयलनि । अक्टूबर 1948 मे महाराजा कामेश्वर सिंह दरभंगा मे ओरिएण्टल कॉनफ्रेंस आयोजित कयने छलाह, जकर मुख्य संचालक छलाह विश्वविख्यात विद्वान अमरनाथ झा । देश-विदेशक विभिन्न भाषाक विद्वान लोकनिक जमघट भेल । मिथिला कॉलेज मे सब भाषाक चर्चाक आयोजन कयल गेल । व्याकरणक अध्यक्षता क' रहल छलाह वैयाकरण मूर्द्धन्य निरसन मिश्र एवं सचिव छलाह हमर पिता उपेंद्र झा । भयंकर शास्त्रार्थ भेल छल। हिनक छात्र पटसा निवासी रामदेव झा सर्वप्रथम भेल छलाह । ओपेन सेसन मे रामदेव जी केँ पुरस्कार देल गेलनि । हम अपन पिता केँ एतेक प्रसन्न पहिने कहियो नहि देखने छलियनि । संस्कृत साहित्य मुख्य क' व्याकरण विषयक शास्त्रीय विशिष्टता स' प्रभावित भ' विश्वविद्यालीय अनुशंसाक आधार पर कुलाधिपति 'विद्यावाचस्पति'क विशिष्टोपाधि स' अलंकृत कयने छलथिन । संस्कृत वाङ्मय मे विशिष्ट योगदानक कारण राष्ट्रपति गणतंत्र

दिवसक अवसर पर संस्कृत भाषाक लेल हिनका पुरस्कृत कयने छलथिन । अस्वस्थताक कारण समारोह मे उपस्थित नहि भ' सकलाह। ओना पूर्व मे राष्ट्रपतिक अतिथि होयबाक सौभाग्य कतेको बेर भेल छलनि । एहि बेर राष्ट्रपतिक प्रतिनिधि स्वयं दरभंगा आबि विधिवत पुरस्कार समर्पण कयने छलथिन । ओहि मे एकटा उन्नी शाल सेहो छल जे हम एखन तक व्यवहार क' रहल छी । चेतना समिति पटना 1979 मे विद्यापति पर्वक अवसर पर मिथिलाक एहि उद्भट विद्वान केँ सम्मानित कयलक । हिनक सम्मान मे कहल गेल जे हम अपन संस्था केँ सम्मानित क' रहल छी । कारण हिनक सम्मान त' राष्ट्रपति स्वयं क' चुकल छथि ।

संस्कृत शिक्षाक प्राचीन पद्धति स' अध्ययन एवं अध्यापन मे अपन समस्त जीवन लगा देलनि । भोर स' राति तक पाठ लगैत छल । विद्यालयक बाद निवास स्थान पर । अपन छात्रक अतिरिक्त मिथिला कॉलेजक संस्कृतक छात्र ओ अध्यापकक धरोहरि लागल रहैत छल । गुरुकुल परंपरा । गुरु-शिष्यक बीच एहन तादात्म्य भाव जे एक दोसरकेँ अपन परिवारक अंग बुझैत छलाह। पढ़बो-पढ़यबा लेल ने त' ककरो समय निर्धारित होइत छलै आने अवधि । भोर-दिन-सांझ-राति जखन छात्रकेँ आवश्यकता होनि पोथी लेने गुरुक ओतय पहुँचि जाथि आ गुरुओ आन कोनो प्रश्न नहि क' एतबे कहथिन 'बांचू' । शिष्य एक पाँती बांचथि आ ओकर बाद गुरु बाजथि आ शिष्य सुनथि । शिष्य शंका करथिन आ गुरु समाधान । ने कोनो पीरियडक झंझट आ कोनो नोट तैयार करबाक प्रयोजन । जखन शिष्य पहुँचि जाथि त' गुरु विद्यादान हेतु सदैव प्रस्तुते । गुरुकेँ शाष्टांग करब, हुनक सेवा करब शिष्य अपन धर्म बुझैथ आ गुरुक इच्छा यैह रहनि जे हमर शिष्य हमरा स' पैघ विद्वान होथि । मनमे रहैत छलनि 'शिष्यादिच्छेतु पराजयम' । भोजनक समय शिष्य ओ अन्य शिक्षक उपस्थित रहला पर सब संगहि भोजन करैथ । देखल अछि जे वर्ष 1971 स' 1982 तक टभका (समस्तीपुर जिला)क एक छात्र दुनू समय संगहि बैसि क' भोजन करैथ । गुरुकुल परम्पराक ई अंतिम चिन्ह हमर पिताक अवसान भेला पर मिथिला मे शेष भ' गेल ।

प्रतिदिन स्नानादिक बाद संध्या-तर्पण, देवार्चन एवं गोदुग्ध स' शिवस्नापन आदि कार्य मे लगभग दू घंटा समय लगैत छलनि । एक हजार गायत्रीक मंत्रक जप एवं विष्णुपादोक स' पितरकेँ तृप्त क' स्वयं चरणोदक ल'क' प्रकारपूर्ण एवं स्वादिष्ट भोजनक लेल अतिथि एवं संग रहयबला छात्रक संग भोजन करैत छलाह । गृहस्थ रहितहुं विदेहवत । अर्थाभाव मे त्यागी ओ अयाची । अपन सीमित आवश्यकताक संग अपंकिल मार्ग पर अबाध गति स' चलबाक कारण अनुज, पुत्र, बंधु एवं परिजन केँ अपना संग राखि समुचित रूप स' शिक्षित क' प्रतिष्ठित बनायल जे सब संप्रति उच्च पद पर आसीन भ' प्रतिष्ठित छथि । संध्याकाल मे दुर्गासप्तशतीक पाठ नियमित करैत छलाह । संगहि पार्थिव महादेवक विधिवत पूजा । दुर्गा पूजा ओ अन्य अवसर पर लाख महादेव वनैत छलाह एवं हुनक पूजा-अर्चना । निशारात्रि मे एक हजार इष्टमंत्र जप करैत छलाह । मिथिलाक आचार ओ परंपराक प्रबल समर्थक ओ पोषक केँ अनवरत अर्चना, साधना ओ अध्यापन मे संलग्न रहबाक कारण समयाभाव छलनि किंतु अपना बथान पर गोसेवा मे तत्पर रहैत छलाह । गोग्रासक लेल कोमल घासक क्रय करब हुनक दैनिक काज छल । शारीरिक कमजोरी ओ आयु वार्धक्य भेला पर गाय केँ हटा देलथिन । कारण, बुझि पड़लनि जे गोसेवा उचित नहि भ' सकतनि । विद्यानुरागंक फलस्वरूप समयाभाव रहितहुँ पुस्तक लिखलनि एवं कतेको टीका कयलनि । काव्यप्रकाश ग्रंथक मैथिली अनुवाद लगभग पूर्ण भ' गेल छल । एकर रचनाकाल मे निवासक समीप अमलतासक गाछक नीचा बैसार होइत छल एवं ओहि मे तंत्रनाथ झा, ईशनाथ झा ओ सुरेंद्र झा सुमन बैसि क' एहि पर चर्चा करैत छलाह, से हमरा देखल अछि । मैथिली मे दोसर पोथी 'मणिद्वीप वर्णन' लिखने छलाह । अर्थाभावक कारण दुनू पोथी प्रकाशित नहि भेल । दुखक संग कहय पड़ैत अछि जे काव्यप्रकाशक मैथिली टीका नष्ट भ' गेल । बाद मे हजारो बिसरल-भूलल संस्कृत श्लोकक संग्रह कयलनि । जकर प्रथम भाग मे 501 श्लोक हिंदी अनुवादक संग कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, दरभंगा

'सुभाषितावली' प्रथम भाग 1982 मे प्रकाशित कयलक । दोसर भाग हिनक प्रिय शिष्य स्वर्गीय उपेंद्र झा 'विमल'क पास छल । नहि जानि सम्प्रति कोन अवस्था मे अछि ।

संस्कृत शिक्षा प्रचार-प्रसारक हेतु महाराज दरभंगा द्वारा पोषित बिहार संस्कृत एसोसिएसन बिहार सरकारक शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित प्राचीन पद्धति स' शिक्षण-परीक्षाक व्यवस्था करैत छल । एकरा द्वारा प्रथमा, मध्यमा, शास्त्री ओ आचार्य परीक्षा संचालित होइत छल । बिहार प्रदेशक कतेको भाग मे संस्कृत विद्यालय छल । सरकारक दिस स' निदेशक, संस्कृत, एकर मुख्य प्रशासक । चुनाव पद्धति स' संस्कृत विद्वानक कमेटी बनैत छल जे साहित्य, व्याकरण, न्याय, मीमांसा, आयुर्वेद, कर्मकांड, वेद ओ ज्योतिष विषयक सिलेबस ओ शिक्षाक पद्धति निर्णय करैत छलाह । हमरा पिता सब बेर चुनाव जीत क' अबैत छलाह आ प्राचीन पद्धति स' संस्कृत शिक्षाक प्रचार-प्रसार मे सक्रिय योगदान दैत छलाह । पुनः प्राच्य शिक्षाक प्रचार-प्रसारक उद्देश्य स' मिथिला मे एक संस्कृत विश्वविद्यालयक आवश्यकता पंडित समाज केँ बुझि पड़लनि । महाराज कामेश्वर सिंहक समक्ष विशिष्ट संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना मे सक्रिय सहयोग कयल । महाराज मात्र अपन आनंद बाग पैलेस नहि, एहि भवनक सन्निकट खाली जमीन ओ अपन पुरखा द्वारा संग्रहित संस्कृत पुस्तकालय सेहो एहि विश्वविद्यालय केँ दान स्वरूप भेटि गेलै । किंतु, बिहार सरकारक शिक्षा विभाग एहि विश्वविद्यालयक संचालन व्यवस्थित रूप मे नहि क' रहल अछि, ई दुखक बात ।

दैनिक 'आर्यावर्त्त'क भूतपूर्व संपादक पं. श्री हीरानंद झा शास्त्री अपन एक संस्मरण मे लिखैत छथि जे एक उपनयन कार्यक्रम मे दुनू गोटे निर्मंत्रित छलहुँ। 'ओहिठामक कार्यकलाप देखि जखन हम जिज्ञासु भाव स' गुरुदेव दिस देखलौं जे अहाँ बैसल छी तखन ई की भ' रहल अछि, त' ओ हाथ दबाय हमरा चुप रहबाक संकेत त' करबे कयलनि, परंच हम लक्ष्य कयलौं जे हुनक दुनू आंखि किछु नोरा गेलनि । ओहि दिन लागल जे युग बदलि गेलै। यथार्थ पण्डित आंगूरो पर गनबा योग्य कहाँ दृष्टिगोचर भ' रहल छथि । एक-एक क' सब पाछा ढहि गेल आ हमर गुरुदेव एहि क्रमक हमरा

लोकनिक क्षेत्रक आखिरी पाया छलाह । विद्यावाचस्पति उपेंद्र झा–स्मृत्यङ्क मे, डा. मदनेश्वर मिश्र भूतपूर्व कुलपति मिथिला विश्वविद्यालय, लिखैत छथि, "अध्ययन और अध्यापन ही उनके जीवन के प्रमुख कार्य थे परंतु ईश्वर-भक्ति के लिए उनके पास सदैव अवकाश था । वस्तुतः पं. झा मिथिला और संस्कृत विद्वानों की उस गौरवमयी परंपरा के प्रायः अंतिम स्तंभ थे जिसमें विद्वान अपनी विद्वता के कारण तो पूज्य होता ही था, उसकी सरलता और सादगी भी अनुकरणीय होती थी और इन दोनों गुणों से बढ़कर अभिनंदीय होता था उसका स्वाभिमानी स्वभाव । सरल प्रकृति के होने पर भी पं. झा ने अपने स्वाभिमान को कभी समझौते की वस्तु नहीं वनने दिया । महाविद्यालय तथा विश्वविद्यालय में सेवारत रहते हुए भी कभी किसी ने उन्हें उच्चाधिकारी के दरबार की शोभा बनते नहीं देखा आ कि सुना। उन्होंने अपनी भौतिक आवश्यकताएँ इतनी सीमित रखी थी कि उन्हें कभी किसी के समक्ष याचक बनने की आवश्यकता ही नहीं हुई ।" महाराज कामेश्वर सिंहक संस्कृत विद्यालय मे कार्यरत रहितहुँ जखन महाराज समुद्र लंघन कयलनि (विदेश यात्रा) घोर विरोध कयलथिन एवं महाराजकेँ बारि देल गेलनि । हुनका ओतय निमंत्रण देला पर सिद्ध भोजन नहि करैत छलथिन । पक्का भोजनी निवास स्थान पर पठा देल जाइत छलनि ।

हम संप्रति जे किछु छी, सब हुनके बदौलति । हुनक इच्छा छलनि जे हम चार्टर्ड एकाउंटेंट बनी । 1956 मे बी. कॉम. परीक्षा पास कयला पर साहस कयल। एहि हेतु हम कलकत्ता गेलहुँ । जीविकोपार्जन करैत सफल भेलहुँ । जखन हम इंटरमीडिएट सी. ए. कयल तखन हमरा बिहार सरकारक एक कंपनी मे उत्तम मासिक आयक नोकरी भेटल । नहि करय देलनि एवं पत्र लिखलनि जे पहिने महात्मा लोकनि केँ सिद्ध भेटय लगैत छलनि, एहिना हुनक तप-तपस्याकेँ नष्ट कयल जाइत छलनि । नोकरी नहि कयल । पास कयला पर कहलनि जे योग्यता अनुकूल द्रव्योपार्जन करब । एहि विभाग मे गलत आयक स्रोत छैक । ओकरा दिस ध्यान नहि देब । हम अक्षरशः पालन कयलहुँ एवं आइ सब तरहें आनंद छी । हमर चरित्र निर्माण मे हुनक बड्ड पैघ हाथ छनि ।

जीवनक उत्तरार्द्ध मे वातव्याधिजन्य कायिक कंपन भ' गेल छलनि । शारीरिक दुर्बलता ओ कंपनक कारण असौविध्यक अनुभव करैत छलाह । मुदा मानसिक रूप स' पूर्णतः स्वस्थ । कतेको विषय जिह्वाग्र छलनि ओ शास्त्रीय चर्चा ओ अध्यापनक उत्सुकता सब दिन व्याप्त रहलनि । अध्यापन काल मे कतेक छात्र लाभान्वित भेलाह एकर आकलन नहि भ' सकल । मुदा लगभग 20 छात्र हिनक निर्देशन मे शोध प्रबंध प्रस्तुत क' विशिष्टोपाधि स' भूषित भेलाह । अंतिम काल मे योगीक सदृश शिवलोक जयबाक हेतु प्रस्तुत भ' गेल छलाह । मुखमंडल पर आभा पूर्ववत छलनि । जीवन मे सत्संकल्पक सिद्धि प्राप्त क' चुकल छलाह । जीवन मे परवशता कखनो नहि अयलनि । माया-मोह स' मुक्त भ' गेल छलाह । भाद्रकृष्ण षष्ठी तदनुसार सितंबर 1988केँ शिवलोक प्रस्थान क' गेलाह । हुनक प्रातः कालिक पूजाक अंत–

सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः ।
सर्वेभद्राणिपश्यंतुमाकश्चिददुःखभाग्भवेत॥ स' होइत छलनि ।

हम ऊं शिवाय शिवरूपाय पिते नमः 'स' अपन श्रद्धासुमन अर्पित करैत छी ।



प्रो० डा० कां श्रीनाथ झा किरण-मिथिला-मैथिलीक क्रान्तिदूत

सूतल जागल अहर्निश प्रतिपल मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकास मे लागल समाजसेवी चिंतक पुरुष मे एक महान व्यक्ति छलाह प्रो. कांचीनाथ झा 'किरण' । हिनक जन्म भेल छलनि एक दिसम्बर 1906केँ अपन मातृक बछौड़ परगना मे अवस्थित 'छोड़हो' गाम मे । हिनक बाल्यावस्थाक अधिकांश भाग मातामह इन्द्रमणि ठाकुरक सानिध्यमे मातृके मे बीतलनि । अपन गाम छनि लोहना रोड स्टेशन सँ लगभग एक किलोमीटर पश्चिम स्थित उजानक 'धर्मपुर टोल' जे ओहि क्षेत्रमे सुविख्यात विदेश्वर महादेवक स्थान सँ एक किलोमीटर दक्षिण मे छैक । हिनकर विवाह पाही टोलक रूपेश्वरी देवी संग भेल छलनि । हिनक मातृक पक्ष 'कुसमांजलि' नामक विख्यात न्याय ग्रन्थक प्रसिद्ध टीकाकार मेघ ठाकुर, जे महाराज महेश ठाकुरक अग्रज रहथिन्ह। हिनक अपन जन्म ओहि श्रोतिय कुल मे भेल छलनि जाहिमे महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झाक ससुर महामहोपाध्याय हर्षनाथ झा भेल छलाह । किरणजी सोतिक समाज मे बारल छलाह । किन्तु किरणजी मे मनस्विता आ स्वाभिमानक निधि छलनि । सोतिक ओतय सामान्य ब्राह्मण भाठा आ भिन्न पंक्ति मे बैसि भोज खएवाक अधिकारी होइत छलाह, किन्तु बारल सोति जँ काज-कर्त्तव्यताक समय सोति ओतय धोखहुँ पैर देताह तँ सोतिक सभ कुटुम्ब भोजनक पात पर सँ उठि जयताह । किरणजीक संग ऐहेन घटना तंत्रनाथ झाक उपनयनक दिन भेल छलनि । एहि घटनाक कारण किरणजी आ रमानाथ बाबूक बीच अश्वमाहिष संबंधक बीज हिनका हृदय मे रहि गेलनि । एहि बातक साक्षी अछि जे सोतिक भूत हिनका जीवनभरि लागल

रहल । किरणजी अत्याधुनिक विचारक प्रगतिशील व्यक्ति छलाह, तें ई संभव। यैह कारण छल हयत जे ई वर्गभेद-विध्वंसन अपन जीवनक लक्ष्य बना लेलनि।

किरणजी लोहना संस्कृत विद्यालय मे विद्याध्ययन प्रारम्भ केलनि । 1922 मे प्रथमा परीक्षा पास कयलनि । अपन अग्रज पं. काशीनाथ झा जे दिनाजपुर (आब बांग्लादेश) मे शिक्षक छलाह आग्रह कयलथिन तखनि किरणजी ओतहि चल गेलाह आ 1928 मे प्रवेशिका परीक्षा (इन्ट्रेन्स परीक्षा) मे प्रथमश्रेणी मे उत्तीर्ण भ' गेलाह । एतय कालाजार भ' गेलनि आ अपन गाम घुरि अयलाह । 1929मे दरभंगाक मेडिकल स्कूल (तखनि कॉलेज नहि भेल छल) मे प्रवेशक हेतु चुनल गेलाह । मुदा अर्थाभावक कारण ओतय शिक्षा ग्रहण करब हिनका लेल संभव नहि भेलनि । 1930 मे मध्यमा परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह आ विवाह भ' गेलनि । ससुरक आर्थिक सहयोग सँ एहि वर्ष काशी हिन्दू विश्वविद्यालयक आयुर्वेदिक महाविद्यालय मे प्रवेश लेलनि, जतय सँ 1933 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे स्थानान्तरण करा लेलनि । वर्ष 1935 मे ई. एल. ए. एस (लाइसेन्सिएण्ट इन आयुर्वेदिक मेडिसिन एण्ड सर्जरी)क परीक्षा मे उत्तीर्ण भेलाह । 1936मे काशीक रानी चन्द्रावती डिस्पेन्सरी मे चिकित्सक पद पर नियुक्त भेलाह । दर्शानन्द आयुर्वेदिक कॉलेज मे प्राध्यापक सेहो भेलाह । 1943 मे किरणजी साहित्य शास्त्री तथा 1934मे आइ. ए. क परीक्षा पास कयलिन । 1961 मे पचपन वर्षक अवस्थामे बिहार विश्वविद्यालय सँ बी. ए. तथा 1964 मे एम. ए. (मैथिली)क परीक्षा पास कयलनि । 1969मे मैथिली साहित्यक आदि पुरुष ज्योतिरीश्वर ठाकुरक कालजयी कृति 'वर्ण रत्नाकर' पर 'वर्णरत्नाकर: काव्य शास्त्रीय अध्ययन' नामक विस्मयकारी शोध -प्रबंध पर पीएच.डीक उपाधि प्राप्त कयलनि । अपन अटूट लगन तथा अक्लान्त अध्यव्यवसायक बल पर अपन भाग्यरेख कैँ बदलि देनिहार महापुरुष छलाह किरणजी । स्वयं स्वीकार कयने छलाह जे ज्योतिषी टिपैन मे लिखने रहैथ जे हिनका हाथ मे विद्याक रेखा नहि छनि । जे अभाव हुनका पढ़य नहि

देलकनि, तेकरा ओ देखा देलखिन जे लाखो विपत्ति आबय दृढ़ निश्चयक बल पर ओ विजय प्राप्त करबे करताह । किरणजीक शैक्षणिक उपलब्धि हुनक दृढ़ता तथा संघर्षशीलताक परिणाम थिक । पूंजीवादी व्यवस्था मे पढ़वाक लेल धन कतेक महत्वपूर्ण होइछ से हुनका जानल छलनि । भोगल छलनि । एहि तरहें सबसँ पैघ बात अछि जे नाना प्रकारक विघ्न बाधाक अछैत ओ शिक्षाक अन्तिम पौदान धरि पहुँचलाह ।

1936मे किरणजी काशी मे चिकित्सक नियुक्त भेलाह । 90 रु. मासिक दरमाहा भेटलनि । परन्तु पत्नी दुखित भ' गेलथिन । बहुत दवाइ करौलथिन, परन्तु हुनका रोग नहि छुटलनि । अन्तमे गाम ल' अनलथिन गामक जलवायु अर्पूव लाभ कयलकनि । किरणजी हुनके स्वास्थ्यक कारण गामे मे रहि गेलाह। सरिसव बाजार मे आयुर्वेदक औषधक एकटा दोकान खोललनि । दोकान बढ़िया चलैत छलनि । मुदा मिथिला-मैथिलीक काज मे असौकर्य होइत छलनि । एम. एल. एकेडमी सरिसव-पाही हिनका शिक्षकक हेतु आग्रह कयलकनि आ किरणजी 1948मे स्कूल ज्वाइन कय लेलनि । मासिक दरमाहा 35 रु. भेटय लगलनि । स्कूल मे मैथिली आ सामान्य विज्ञान पढ़वय लगलथिन । 1948 सँ 1966 तक सरिसव हाई स्कूल मे मास्टरी कयलनि । 1967 सँ 1972 धरि सी. एम. कॉलेज दरभंगा मे मैथिलीक प्राध्यापक रहलाह। यू. जी. सी. प्रोफेसर एमेरिटसक रूप मे दू वर्ष धरि काज करवाक गौरव सेहो प्राप्त भेलनि ।

1930 मे किरणजी अध्ययनक हेतु काशी अयलाह । एहि वर्ष मिथिला मैथिलीक क्षेत्र मे आबि गेलाह । स्वराज्य आन्दोलन चलि रहल छल । ओतय दुनू काज चलय लगनि । हड़तालो होइ, जुलूसो बहराइ आ अपन-अपन भाषा साहित्यक सेहो काज होइ । मराठी, गुजराती, मलायलम आदि भाषा साहित्य-परिषद्क सम्मेलन बहुत उत्साहस' मनायल जाइत छलैक । मैथिलीक कोनो संस्था नहि छलैक आ हिन्दू विश्वविद्यालयमे मैथिली स्वीकृत नहि छलैक। मैथिली छात्रक संघोड़ कयलनि आ मैथिली छात्र समितिक स्थापना

कयलनि । किरणजी मैथिलीक मान्यताक लेल भाइस चान्सलर महामना मालवीयजीक ओतय पहुँच गेलाह । मालवीय कहलखिन 'घर मे मैथिली बोलो' आ 'बाहर हिन्दी मे पढ़ो' । मैथिली-हिंदी मे कोनो अन्तर नहि छैक। किरणजी उत्तर देलखिन जे दुनूमे जमीन-आसमानक अन्तर छैक । मालवीयजी कहलखिन जे 'हम तो मैथिली सभझ जाते हैं ।' चट दय चन्दा झाक रामायण स' एक पाँति सुना देलखिन । किरणजी कहलखिन जे केओ अर्थ बुझा देने हयत । नहि तँ अपने नहि बुझितियैक । तुरन्ते जीवन झाक कविताक एक पद सुना देलखिन–ई नेना अछि परम उकाठी, उचकि पड़ायल हमर फराठी ।' मालवीयजी नहि बुझलखिन आ पुछि बैसलखिन 'उकाठी-फराठी' किसको कहते हैं ।' किरणजी बुझा देलखिन । किरणजी कल्पैत कहलखिन 'आपके जीते जिस भारतीय संस्कृति की रक्षा नहि होगी तो फिर कभी नहि होगी । मालवीय जी कहलखिन 'रोतें क्यों हो' अर्जो देदो, स्वीकृति हो जायेगी ।' 1933 ई. क नवम्बर मासक सीनेट मे मैथिली हिन्दू विश्वविद्यालयक पाठ्यक्रम मे स्वीकृत भ' गेल । ई हम किरणजीक लेख 'हम कवि कोना बनलहुँ' किरण समग्र पेज 233सँ उद्धत कयलहुँ अछि । एतय कतेक पैघ विडंवना अछि जाहि विश्वविद्यालयक निर्माण मे मिथिलेशक महत्वपूर्ण सहयोग सँ स्थापना भेल, ओतय मैथिलीकेँ स्वीकृत नहि । एहि विश्वविद्यालयक स्थापना मे महाराज रमेश्वर सिंहक महत्वपूर्ण योगदान, जकर संविधान समिति मे महामहोपाध्याय डा. सर गंगानाथ झा छलाह ओतय मैथिली भाषा नहि । किरणजी एक छात्र एहिमे सफल भेलाह । हिनक जीवनक लक्ष्य छलनि मातृभाषाक लेल लड़ब आ अपन प्रथम प्रयास मे सफल भ' गेलाह ।

हिन्दू विश्वविद्यालय काशी मे मैथिली स्वीकृत भ' गेलनि लेकिन एकोटा पत्र-पत्रिका नहि छलनि । सबकियो मिलिक' हस्तलिखित पत्रिका 'मैथिली सुधाकर' निकालनि । ई पत्रिका पं. कुलानन्द मिश्रक सम्पादन मे बहरायल । एहिमे मधुप, यात्री (पहिने वैदह), किरण, आनन्द झा एवं अन्य एहिमे लिखय लगलाह आ कोठे-कोठा काशीमे घुमैत छल । महामहोपाध्याय मुरलीधर झा

पहिने 'मिथिला मोद' नामक पत्रिका हिन्दीमे प्रकाशित करय लगलाह । किन्तु अपना गलतीक अनुभव भेलनि आ मिथिला मोद द्वारा मैथिलीक श्रीवृद्धि कयल । 1906-1923 धरि लड़खड़ाइत चलैत रहल । किरणजी एहि पत्रिकामे जोर-शोर सँ लागि गेलाह जखन मुरलीधर झाक भातिज पं. आनन्द झा बारह वर्षक बाद काशीमे चालू कयलनि । किरणजी, वैदेह, उपेन्द्र झा मोहन एहि पत्रिका मे आलेख कविता आदिक व्यवस्था कयलनि । 1931मे सर्वप्रथम काशीमे किरणजी 'विद्यापति जयन्ती' मनाएब प्रारम्भ कयलनि । बादमे मिथिला आ मिथिलाक बाहर मनायल जाय लागल । काशी सँ जखन गाम फिर गेलाह तखन हिनका साइकिल मे सतरंजी बान्हले रहैत छलनि आ गामे-गाम विद्यापति जयन्तीक नाम पर मिथिला-मैथिलीक अलख जगबैत रहलाह । एकर सूझ देने छलखिन वैदेहजी (यात्रीजी) ताहि पर किरणजी कहब छलनि हिनका प्रति 'चेहरे-मोहरे लटपटाह रहितहुँ भितरका बिन्हा बुधि यार छथि ।' 1933क जुलाई मे किरणजी काशी सँ टी.सी. ल'क' कलकत्ता चल गेलाह । अपन डेरा-डंडा ठीक भेला पर मैथिलीकेँ झोरय लगलाह । एतय चितरंजन एभेन्यू स्थित मैथिल भवनक छत पर विद्यापति पर्व मनोलनि । कलकत्ता स्थित प्रबुद्ध मैथिल मे उत्साह उमड़ल । मृतप्राय शिक्षित 'मैथिल समाज'क पुनर्गठन कयलनि । तरौनीक महेशकान्त मिश्र सचिव निर्वाचित भेलाह । विशुद्धानन्द हाई स्कूलक छत पर सभा भेल छल । वैदेह पहिने काशी सँ कलकत्ता पहुँच गेल रहैथ । जयदेव बाबू तखन ओतहि पढ़ैत छलाह। एहि तरहें किरणजी 1930 सँ लयकेँ मिथिला-मैथिलीक एक सचढ़ क्रान्तिकारी जीवन पर्यन्त बनल रहलाह । हिन्दी-मैथिलीक संबंध हुनक मत सुस्पष्ट छल ।1951 मे सरिसव पाही मे सभा छल । सभापतित्व क' रहल छलाह कविशेखर बद्रीनाथ झा ओ घोषणा कयने छलाह-'अब सभा की कार्यवाही आरम्भ होगी ।' हमर मत आरम्भे सँ स्पष्ट रहल जे हिन्दीक विरोध आवश्यक अछि । जाधरि एहि अलच्छीकेँ बाढ़नि मारि घर सँ निकालब, मैथिली प्रतिष्ठा नहि होयतीह । हिन्दी आ उर्दूक आत्मा एक अछि आ हम कहि जाइ छी जे

हिन्दीक साम्राज्यवाद समाप्त भ'क' रहत । ई उक्ति किरणजीक छनि जे11 जुलाइ 1983क रहिका मे उदयचन्द्र झा 'विनोदक' संग भेट भेल छलनि । पुनः कहलखिन-मिथिला मिहिर सोलह पृष्ठक बहराइत छल, मुदा ताहि मे तेरह पृष्ठ हिन्दी आ मात्र तीन पृष्ठ मैथिली मे रहैत छल । लक्ष्मीपति सिंह आ गंगापति सिंह हिन्दी मे लिखैत छलाह । मिहिरक सम्पादकीय हिन्दी मे रहैत छल । सुमनजीक समस्त कृति हिन्दी मे रहैत छल । मिथिला मोद एकर घोर विरोध कयलक । साहित्य तहिया सामन्तक हाथ मे छल ।

किरणजी मिथिला राज्यक समर्थक छलाह । 1952 मे दरभंगा टाउन हॉलमे डा. लक्ष्मण झाक नेतृत्व मे पहिल बेर मिथिला राज्यक उद्घोषणा भेल। एकर आयोजक छलाह-डा. लक्ष्मण झा, सुरेन्द्र झा 'सुमन', कांचीनाथ झा 'किरण' आ लक्ष्मीनारायण सिंह । तकर बाद अयलाह जानकी नन्दन सिंह । डा. श्रीकृष्ण सिंह सँ विरोध भेलनि तँ मिथिलाक धुतहू बजौलनि फेर जखन मेल भ' गेलनि तँ चुप भ' गेलाह । कलकत्ता अखिल भारतीय मिथिला संघ, प्रो. प्रबोधनारायण सिंह आ बाबू साहेब चौधरीक नेतृत्वमे सब दिन आवाज उठवैत रहलाह । एखनो ई आवाज बन्द नहि भेलैए । मैथिलीके अपन स्वरूप छै, साहित्य छैक, भूभाग छै आ लोक छैक । एकरा दबाक' बहुत दिन राखल नहि जा सकैछ । सूतल, जागल अहर्निश प्रतिपल मिथिला मैथिलीक सोचमे लागल रहैत छलाह ।

किरणजी एक संग कवि-कथाकार-नाटककार, निबंधकार, आलोचक, अध्यापक, समाज-सुधारक, वैद्य तथा मिथिला राज्य ओ मैथिली भाषा आन्दोलनक दुर्द्धष सेनानीक भूमिका अकूत उर्जा संग आधा शतक सँ अधिक समय धरि भिरल रहलाह । अपना पीढ़ीक कवि समुदाय मे किरणजी अतिशय आदर तथा स्नेहक संग लेल जाइत एकटा कविक नाम थिक, जिनक दृष्टि प्रगतिकामी रहलनि अछि आ जे परम्पराक विकसित ओ उदार चेतना संग आत्मीयता राखब तथा कट्टरपंथी मान्यताक डटि क' विरोध करब, एकटा मनुष्य ओ

साहित्यकारक दृष्टिएँ अपन धर्म बुझैत छलाह । अभिजातक मैथिलीमे किरणजी छोटका लोकक लेल जगह बनौलनि जे हुनका समय मे ई एकटा बेस दुरूह काज छल । एहेन पात्र सभक कथा लिखलनि । जिनकर जगह हमरा सबहक सवर्ण समाजक मोनक सीमान सँ बाहर अछि । हम ओहि सोलकन्ह समाजक गप्प कहि रहल छी जेआइ-काल्हि भारतीय साहित्य आ राजनीतिक केन्द्र मे अछि । आन-आन भाषा साहित्य मे दलित साहित्यक जोर अछि । किरणजीक एखनधरि मात्र पन्द्रह कथा उपलब्ध आ प्रकाशित छनि । सभसँ चर्चित कथा छनि 'मधुरमनि' । विकलांग पतिक जिनगीक गाड़ी खींचैत कामगार पत्नीक मोनक कथा । पति भोजन लेल पुछैत अछि 'भानस भेलै ? मधुरमनि तामस स' माहुर भ' जाइछ । हँ भनसे ठा ? नअटा तीमन संचार लागल राखलए । काज ने धंधा, तीन रोटी बंधा । दरबज्जा पर बैसल बात गढ़ैत रहता । मुदा आन जखन ओकरा उकसाब चाहैत छैक तँ मधुरमनिक मोन मोचनक प्रति मुलायम भ' जाइत छैक । ओ भीख मांगत तँ हम हाथी सनक देह राखिक' की करब । ओ हमरा कमा क' खुअबैत से बड़ बढ़िया आ ओकर हाथ पैर भगवान हरि लेलखिन्ह तँ भीख मांगत ? ओकरा सन लूरि ककरा मे छैक । डाली, पथिया, पटिया आदि ओकरा सनक ककरा होइछै । पिट्ठा पहलमान ल'क' हम की करब, जे भरि दिन डेंगबिते रहत । हमरा एकटा कथो नहि कहियो कहैत अछि । वैह अछि जे हमरा सन मुंहजोरक बास भ' सकल । ई कथा एकटा एहेन पात्रक कथा थिक जे दलित अछि, अपना जीवनक आधार अपने अछि आ ओ पुरान पारम्परिक समाजक ओहि चलनकेँ सेहो कोसै अछि जे स्त्री सभकेँ पुरुखक बादक पाँती मे राखैए । ई सभटा विमर्श कथा मे सहज रूपसँ आयल अछि । जे सिद्ध करैत अछि किरणजी अपन समाज, अपना भाखाक सरोकार स' कतेक प्रवाहमय ढ़ंग सँ सम्पकृत छलाह। किरणजीकेँ मधुरमनि मैथिली कथाक इतिहास मे अमरत्वक अधिकारी बना देने छनि । कथाकारक रूपमे हुनक वैचारिकता कि कथा संवेदना सँ अधिक हुनक भाषा-संवेदना ध्यान आकर्षित करैछ । हुनक अभिव्यक्ति अत्यन्त

संक्षिप्त तथा 'डाइरेक्ट' होइछ, जकर प्राणवत्ता हुनक भाषा पर आश्रित होइछ जे ठेठ होइत छैक तथा पात्रानुकूलो होइछ । कम शब्द मे बहुत बात कहब किरणजीक अप्रतिम व्यवस्था थिक जाहि लेल ओ अपन कोनो पूर्ववर्त्तीक ऋणी नहि छथि। किरणजी क दू गोट कथा-ध्रुव आ अभिमन्यु 'बीर-प्रसून' मे प्रकाशित भेल छनि जे मैथिली प्रचारक संघ काशी द्वारा 1938 मे प्रकाशित भेल छल। किरणजीक मधुरमनि कथाकेँ निदेशक कुणाल लघु रेडियो फिल्मक रूपमे पटनाक रवीन्द्र भवनक प्रेक्षागृहमे प्रदर्शित कयने छलाह ।

किरणजी पाँच टा नाटक सेहो लिखने रहैथि । ई अछि 1. विजेता विद्यापति 2. सीता 3. शकुन्तला 4. भगवान श्रीकृष्ण, 5. पलाशीक पाशा आ 6. जय लिच्छवी । एकांकी छलनि–.1 जय जन्मभूमि, 2. कर्ण, 3. शीतलसेनी 4. महराज शिवसिंह 5. बन्दी राजकुमार । किरणजीक निबन्ध आ समलोचनात्मक लेख सबहक एकमात्र संकलन 'किरण बिन्धावली 1990 मे प्रकाशित भेल छल जाहिमे हुनक एगारह टा निबन्ध संकलित अछि । योगानन्द झा कर्णामृत (1989) मे 26 गोट निबन्धक विवरण देने छथि आ जाहि पत्रिका मे छपल छैक तिथिवार लिखने छथि । किरणजीक निबन्ध साहित्यक मादे योगानन्द झा लिखैत छथि–निबन्ध सभमे किछु साहित्येतिहास सँ समब्ध अछि आ किछु मैथिलीक भाषा समस्या सँ काव्यशास्त्रीय ओ समीक्षाशास्त्रीय दृष्टिकोण सँ सेहो किछु निबन्ध छनि । किरणजीक अठासी गीत ओ कविता दू पोथी मे संकलित अछि–किरण कवितावली आ कतेक दिनक बात । एकर अतिरिक्त गीत आ कविता पत्र-पत्रिका मे छिड़ियाएल छनि ।

चन्द्रग्रहण उपन्यासकेँ पत्र मैथिली सुधारकरक हेतु लिखने छलाह । बादमे प्रकाशित भेल । प्रकाशनक बाद पण्डित लोकनि अप्रसन्न भ' गेलखिन्ह । किरणजीके धर्म विरोधी घोषित क', जाति बहिष्कारक धमकी भेटलनि । किरणजी स्पष्ट कयलनि जे चन्द्रग्रहण धर्म विरोधी नहि, विधर्मी द्वारा हिन्दू नारीक कयल जाइत अपहरणकेँ रोकथामक प्रयास मात्र । पराशर महाकाव्य लिखलनि । वर्ण आ रंग पर आधारित सामाजिक व्यवस्थाकेँ किरणजी स्वयुगीन सोचक अनुरूप सर्वथा नकारि मानव-मानवक बीच मौलिक समानताक

बहुसम्मत सत्यकेँ प्रतिष्ठित कयने छथि । पराशर महाकाव्य पर साहित्य अकादमी सम्मान भेटलनि–मरणोपरान्त । भाषा आन्दोलन एवं साहित्य-संस्कृतिक अभियान केँ अति उत्तम ढ़ंग स' संचालित करयवला व्यक्ति छलाह किरणजी। मैथिली भाषाकेँ साहित्य आ संस्कृतिकेँ मिथिलाक महाराजी समाज आ प्रभुवर्गक वाग्विलास केन्द्र सँ बाहर क' खेत-खरिहानमे ल' जयवाक एकमात्र श्रेय किरणजी केँ छनि । साहित्य कोनो व्यक्तिक नहि समाजक होइत छैक । सामन्ती संस्कार स' सदिखन बचय पड़ैत छैक । किरणजीक व्यक्तित्वक संबंध मे प्रो. डा. भीमनाथ झाक उक्ति सोलहो आना सटीक अछि । 'साहित्यक सर्वांगीण विकासक प्रयास हो कि राजनीतिक माध्यमे क्षेत्रक उद्धारक आयास, मैथिली केँ विश्वविद्यालय मे प्रवेशाधिकारक लड़ाइ हो, कि भाषा आन्दोलनक युद्ध मे प्रतिपक्षी पर चढ़ाइ, जन-जन मे स्वभाषा प्रेम जगयबाक अभियान हो, कि गाम-गाम मे साहित्यिक-सांस्कृतिक चेतनाक शंखनाद करबाक सन्धान, मिथिला-मैथिली द्रोहीकेँ ताकि-ताकि क' माटि चटेनाइ हो, कि माटिये लेढ़ायल रत्नके अपने झाड़ि-पोछि क' समाजक सोझां रखनाइ किरणजी सभकाज स्वयं कयलनि, ककरो अढ़ौलनि नहि कहियो।' किरणजीक संबंध मे सुरेन्द्र झा 'सुमन'क उक्ति–'वाणी मे स्पष्टता, विचारमे प्रौढ़ता, चिन्तनमे मौलिकता, सामाजिक जीवन मे सुधार करबाक दुर्दान्त आग्रह आ तदनुकूल आचरण, दलित-पीड़ितक प्रति सहज सहानुभूति, कान्तिक प्रखरता तथापि शान्तिक रम्यता, सिद्धांत मे कठोर अथच व्यवहार मे कोमल किरणजीक चरितक रूपरेखा थिक । प्रौढ़ निबंध, निर्लेप आलोचना, वास्तविकता आ कल्पना सँ समन्वित प्रगतिवाद कवित्व, नाट्य एकांकीक रससिद्ध विन्यास, समाज-सुधार पर आधारित सुरूचिपूर्ण उपन्यास-गल्प किरणजीक कलमक जादूक उदाहरण अछि । किरणजी रमानाथ बाबू संबंध मे एक भेट वार्त्ता मे कहने छलाह 'रमानाथबाबू केँ काव्य चीन्हबाक अवगति नहि छलनि । संगहि हुनका मे दोष ईहो छलनि जे ओ निष्पक्ष नहि छलाह।' किन्तु, किरणजीक संबंध मे रमानाथ बाबू लिखने छथि–'किरणजीक स्थान मैथिलीक प्रगतिशील

कवि सभ मे अग्रगण्य अछि । हिनक काव्यक प्रेरणा मिथिलाक ग्राम-जीवन थिक जकरा तदनुरूप भाषा-शैली मे व्यक्त करब अपन कवि-कर्म बुझैत छथि। हिनक रचना मे ने तँ कवि-कल्पनाक चमत्कार पूर्ण उत्कर्ष भेटत ने अभिव्यक्ति-शिल्पक पाण्डित्यपूर्ण प्रकर्ष, किन्तु जहाँधरि लोक जीवनक भाव-भूमिक यथार्थ अभिव्यक्तिक प्रश्न अछि, ताहिमे ई बजोड़ छथि।'

किरणजी हमरा लेल अनचिन्हार छलाह । हम हुनका संगे मिथिला-मैथिलीक काज नहि कयने छी । मुदा हिनक मिथिला-मैथिलीक सब काज मे जीवन भरि लागल छी । किरणजी एकटा आन्दोलनकारी छलाह । विद्यापति समारोहक मादे हमरा सभक सर्वश्रेष्ठ स्मृति अछि, ओकर नींव किरणजी रखने छथि । यैह आयोजन हिनक मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु आयोजन छलनि । सोझरायल विचार आ निर्भीक कथनक हुनक जीवनेक नहि, साहित्योक सर्वाधिक उल्लेखनीय घटक थिक । अपन भूमि आ भाषा साहित्यक एहन अनुरागी आ संगहि मानवीय समानताक एहने घोषित पक्षधर विरले भेटैत अछि । किरणजी क्रान्तिक अग्रदूत, संघर्षक साकार मूर्त्ति, असमताक विरोधी, मुखरतम वक्ता ओ मिथिला-मैथिलीक निर्भीक आन्दोलनकर्त्ता छलाह । हम मात्र ***'एषश्रद्धांजलिःतेमयादीयतेतृप्यताम'।***

एहि महामानवक मृत्यु 09 अप्रैल 1989 केँ भ' गेलनि ।

—o—

श्रीकान्त मंडल –
आधुनिक मैथिली रंगमंचक प्रणेता

रंगमंचक शलाका पुरुष श्रीकान्त मंडल सरिसव पाही गामक विख्यात मंडल परिवारक एक सदस्य छलाह । मिथिलाक हॉलीवुड सरिसव पाही जतय कलक्टर विभूतिनाथ झा 'वेणी संहार'क छह रसक सफल भंगिमा मे निष्णात भेल छलाह, डा. गौरीनाथ झा 'शाहजहाँ' भूमिका मे चमत्कारी प्रभाव देखौने छलाह आ डेपुटी कमिश्नर युक्तिनाथ झा 'दुर्योधनक' भूमिका मे विलक्षण प्रतिभाक परिचय देने छलाह । ओकरे मध्यवर्ती टोल मे विलक्षण प्रतिभाक परिचय देने छलाह 1936 मे जन्मल श्रीकान्त । आरम्भिक चरणक पढ़ाइ-लिखाइ सुचारू रूपे गामक चटिसार मे भेल छलनि जतय महान विद्वान परिवारक बालक लोकनि अध्ययन करैत छलाह। श्रीकान्त देखबा-सुनबामे गन्धर्व, प्रियवक्ता ओ मधुरभाषी छलाह । हिनका अपनहि गाममे अनेक मंचित नाटक, प्रहसन देखबाक अवसर भेटल छलनि । राज दरभंगामे सेहो नाटक एवं प्रहसन देखबाक अवसर भेटल छलनि । तें हेतु नाट्य कलाक प्रति विशेष अभिरूचि प्रौढ़ावस्था भेला पर जगलनि । शिक्षा अल्प भेटल छलनि मुदा नीक परिवेश, स्वच्छ वातावरण आ सुयोग्य व्यक्तिक प्रभावक कारणें मातृभाषा मैथिलीक प्रति विशेष अनुराग प्रस्फुटित भेलनि । ओ भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक एहि दोहाकेँ कंठस्थ कयने छलाह–

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को भूल ।
बिन निज भाषा ज्ञानके, मिटत नहि हियके सूल ।

यैह जानि श्रीकान्त अपन अधिकारक संग कर्त्तव्यक हेतु जीवन पर्यन्त मैथिली नाट्य-कला ओ रंगमंचक विकासक हेतु जागरूकताक संग काज करैत रहलाह ।

सरिसवक सिद्धेश्वरी स्थान, पाही टोलक भैरव स्थान ओ तारा मन्दिरक फूल एवं नीरस' पालित-पोषित श्रीकान्तक प्रतिभा तथा पटुता प्रतिष्ठित भेल पश्चिम बंगक कलकत्ता महानगरी मे । कलकत्ता नहि, आब कोलकाता । 1950-51 मे आजीविकाक जोगार मे इ कोलकाता अयलाह । भगवतीक आर्शीवाद लयकेँ आयल छलाह तें नीक स्थान आ काज भेट गेलनि । यादवपुरमे भारत सरकारक संस्था 'सेन्ट्रल ग्लास रिसर्च एण्ड शिरेमिक इन्स्टीच्यूट' मे कार्यरत भ' गेलाह । अल्प विद्याक कारणें साधारण पद पर काज शुरू कयलनि । बादमे पदोन्नति भेलनि । सरकारी निवास सेहो आबंटित भेलनि । केन्द्रीय सरकारी जीविकापन्न रहतो हिनक पारिवारिक परिस्थितिजन्य जीवन सुखमय नहि रहलनि । हमरा लग एहि संबंध मे कहियो कोनो चर्चा नहि कयलनि । हंसमुख चेहरा आ सब समय प्रसन्नचित देखबामे अबैत छलाह। व्यावहारिक लोक छलाह । भावुकताक आवेशमे बहनिहार किंवा क्षणिक उत्तेजनाक कारण कोनो अनर्गल डेग उठैनिहार नहि छलाह श्रीकान्त। कलाकारक कद्रदान, कोनो अनर्गल डेग उठैनिहार नहि छलाह श्रीकान्त । कलाकार मित्रक लेल शारीरिक ओ आर्थिक सहयोगक हेतु ओ सतत् प्रस्तुत रहैत छलाह । सुख-दुखमे सतत् हाजिर रहयबला छलाह । लोककेँ खुअयबा आ स्वागतमे परमानन्दक अनुभव होइत छलनि । हिनका हिनक आवास स्थान एकदम चिक्कन देखमे अबैत छल । तखनि ओ लेक गार्डेन्स मे एक कोठली लयकेँ रहैत छलाह । कोनो व्यक्तिगत काज या सामाजिक काजमे अपन अंश ग्रहण करबाक लेल उद्यत -लालायित रहैत छलाह । अद्‌भुत कर्मठ व्यक्ति हमरा बुझने ओ छलाह । चिन्तित होइत छलाह जखन कोनो नाटक मंचनक समय कलाकार द्वारा अड़ंगा लगायल जाइत छलनि । ई चर्चा ओ सब समय प्रो. डा. अणिमा सिंह संग करैत छलाह आ हुनक विचार सँ सहमत भ' सबकेँ संग लय जयवाक प्रयास मे तल्लीन भ' जाइत देखलियनि ।

मैथिली रंगमंचक उन्नयन एवं विकास मे कोलकाताक अन्यतम योगदान छैक । अव्यवसायी रंगमंचकेँ स्थिरता प्रदान करबामे एतुक्का लोकक अहम भूमिका छनि । एतय एक स' एक नाटककार, निर्देशक आ अभिनेता-अभिनेत्रीक जुटान देखयमे अबैत छल । ताहिमे एकटा चर्चित-प्रतिष्ठत नाम, एकटा पूर्ण

समर्पित रंगकर्मी श्रीकान्त मंडल रहलाह अछि । एतय कोनो संस्थाक कोनो नाट्य मंचन हो श्रीकान्तक उपस्थित अवश्य मेव । मैथिली नाट्य परम्परा सँ हटिकय, मैथिली रंगमंचकेँ सर्वथा एक नव आयाम प्रदान कयनिहार, सदा-सर्वदा मंच-सज्जा, आलोक संवात आ नाट्य प्रस्तुति मे प्रयोगधर्मी निर्देशकक रूपमे सतत श्रीकान्तकेँ देखने छी । एतय मैथिली नाट्य मंचन मे किछु अद्‌भुद प्रयोग सब भेल जकर सम्पूर्ण श्रेय श्रीकान्तकेँ छलनि जे प्रवीर मुखोपाध्याय, गोपाल दास तथा किछु बांग्ला कलाकार लोकनिक सहायता सँ मैथिली रंगमंचक विकास मे कार्यरत रहलाह । अनेको सामाजिक नाटक प्रदर्शित भेल। एहि सफलताक श्रेय निश्चित रूपें 'स्टेज टेकनिक' तथा 'स्टेज क्राफ्ट' (यथा रूपशय्या, मंचश्य्या, ध्वनि, प्रकाश संयोजन, मंच संगीत) एवं कुशल निर्देशन क़े छैक जे लोकमे परम्परागत परसियन स्टाइलक नाटक सँ फराक करय लगलैक आ वास्तवमूलक सामाजिक नाटक दिस आकृष्ट कयलकै । ई अपना मे बहुत पैघ प्रयोग एवं प्रक्रिया छलैक जाहि मे श्रीकान्त मंडलक अहम भूमिका छलनि । मैथिली नाटकक इतिहास मे एहि तथ्यकेँ कहियो विसरल नहि जा सकैछ ।

1955 स' 1975 क दु दशक मे कोलकाताक मैथिल द्वारा जे नाटक एवं रंगमंचक विकास मे काज कयल गेल ओ सब दृष्टि स' स्तुत्य ओ वरेण्य अछि। मिथिला-मैथिली संस्था द्वारा मैथिली मे नाट्य-मंचन होइत छल; जाहिमे अखिल भारतीय मिथिला संघ, ऑल इंडिया मैथिल संघ, मिथिला विकास परिषद्, मिथिला सेवा संस्थान, वैदेही कलामंच, कर्ण गोष्ठी (जयंत लोकमंच), कूर्मि क्षत्रिय छात्रवृत्तिकोष, उदय पथ प्रमुख छल । 30 दिसम्बर 1954 केँ मिथिला कला केन्द्र'क स्थापना भेल । ई मैथिलीक पहिल नाट्य संस्था छल । एहि संस्थाक गठन मे श्रीकान्त मंडल, शुकदेव ठाकुर, मोहन चौधरी आ लक्ष्मीनारायण मिश्रक अग्रणी भूमिका छल । एहि संस्थाक सचिव बनाओल गेलाह श्रीकान्तजी । 1960 मे प्रो. डा. प्रबोध नारायण सिंह लिखित 'हाथीक दाँत' सँ सर्वप्रथम नाट्य-मंचन प्रारम्भ कयलक । अभिनीत स्थान छल रवीन्द्र स्टेडियम आ निर्देशक छला प्रवीर मुखोपाध्याय । मिथिला कला केन्द्रक प्रधान उद्देश्य नाट्य अभिनय, नाट्य लेखन ओ तकर प्रकाशन छल।

यैह संस्था स्त्री-पात्रक अभिनय पुरुष पात्र द्वारा कराओल जयवाक परम्परा केँ तोड़लक आ बांग्लाक कुशल अभिनेत्री केँ मैथिली मे प्रशिक्षित क' रंगमंच पर उतारलक । ई संस्था 1960-1969 तक 12 नाटकक मंचल कयलक, जाहिमे हाथीक दाँत, चोर, पियासल धरती उताहुल नोर, कांचन रंग, चारि पहर, शैव्या हरिश्चन्द्र, छींक, पाथेय, कनिया-पुतरा एवं अन्य । उपरोक्त कालावधि मे ई संस्था अनेको झंझावात केँ सहन करैत मैथिली रंगमंचक हवन-कुंड मे जे आहुति देलक से निश्चित रूपें ऐतिहासिक महत्त्व रखैछ । रंगमंचक सर्वांगीण उन्नयन ओ संवर्द्धनमे दोसर संस्था 1960 मे दक्षिण कोलकता मे बनल जकर नाम छल 'मैथिली रंगमंच' । एकर नाट्य सचिव बनायल गेल छलाह श्रीकान्त मंडल । नवलिखित नाटकक मंचन ओ तकर प्रकाशनक भार ई संस्था अपना उपर लेलक जे कोलकताक अन्यान्य मैथिली संस्थाक लेल प्रेरणा-स्त्रोत बनल। मैथिली रंगमंच सितम्बर 1966 सँ फरवरी 1976 तक 22 नाटक मंचित कयलक जाहिमे सुखायल डारि नव पल्लव, प्रेम एक कविता, कुहेस, बेभातर, एक छल राजा, नाटकक लेल, नशबन्दी, मधुयामिनी, बताह, जा दूभर, रिहर्सल ओ अन्य । डा. प्रेमशंकर सिंहक मतानुसारें मैथिली रंगमंचकेँ अत्यधिक लोकप्रिय बनयबाक सब श्रेय श्रीकान्त मंडलकेँ छनि । एहिना अखिल भारतीय मिथिला संघ सितम्बर 1965 सँ दिसम्बर 1972 तक एगारह नाटकक मंचल कयलक । सबमे श्रीकान्तक अहम भूमिका छलनि । हम स्वयं एहि संस्था सबसँ निकट संबंध रखने छलहुँ, तें श्रीकान्तक योगदान ओहिना मोन अछि। हिनका बांग्ला नाटकक सिद्धहस्त रंगकर्मी प्रवीर मुखोपाध्यायक निरन्तर सहयोग प्राप्त छलनि । श्रीकान्तक विषयमे शौकत रियाज महोदय हिनक नाट्य-निष्ठा आ प्रतिवद्धताक चर्चा करैत लिखैत छथि-'ए छाड़ा आछोआर एकटि तरुण-नीरव कर्मी श्रीकान्त मंडल । एर प्रत्यक्ष ओ परोक्ष सहयोगिता छाड़ा एकटिक मैथिली नाटक कलकत्ताय मंचस्थ हयनि ।'

श्रीकान्तक पहिल अभिनय 'हाथीक दाँत' 1960 मे भेल छल । एकर पश्चात् पियासल धरती उताहुल नोर, चारि पहर, अन्हेर नगरी चौपट राजा, जमीन, चन्द्रगुप्त, चीनीक लड्डू, कांचन रंग, सुखायल डारि नव पल्लव, कुहेस, प्रेम एक कविता, निष्प्रदीप, आगन्तुक, बेभातर, सन्तान, पाथेय, इजोत,

मधुयामिनी, नायकक नाम जीवन आ एक छल राजा आदि विभिन्न मंच पर अपन कलाक प्रदर्शन कय प्रचुर ख्याति अर्जन कयलनि । मैथिली मोनोड्रामा 'बताह' मे श्रीकान्तक अभिनय देखि मैथिली नाट्य प्रेमी हिनक लोहा मानि लेलक । रत्नाकर प्रणीत 40 मिनटक मैथिली मोनोड्रामा बताह परिशोधन परिवर्द्धन करैत श्रीकान्त भितरे-भीतर एकर अभिनय आ प्रस्तुतिक ओरियान मे व्यस्त छलाह । 1974 मे रवीन्द्र सरोवरक प्रेक्षागृहमे दर्शक दीघा सँ प्रवेश करैत एकटा बतहा मंच दिस भागल छल, हॉल मे हरविर्रो मचि गेल छल, 'मार-मार...बैला बतहा केँ' शब्द सँ प्रेक्षागृह अनुगुंजित भ' उठल छल, लोक दलमलित भ' गेल छल । ई बतहा श्रीकान्त मंडल छलाह । मंच पर हाथ मे कुर्सी उठौने, दर्शक मारबाक लेल तैयार, अपन अभिनय सँ प्रेक्षक केँ मंत्र-मुग्ध कयने, मैथिली नाटकक दिग्गजकेँ विस्मय-विमूढ़ बनौने, सहृदय सामाजिक केँ साधारणीकरणक अवस्था मे पहुँचौने छल । मैथिली नाट्याभिनयक इतिहासमे हिनक ई अभिनय 'माइल स्टोन' प्रमाणित भेल छल । निर्देशनक क्षेत्र मे ओ प्रवेश करैत छथि । 1966 मे 'सुखायल डारि नव पल्लव' नाटक स'। प्रवीर मुखर्जी एहि नाटकक मुख्य निर्देशक छलाह आ श्रीकान्त हुनक सहायक । एकर बाद चन्द्रगुप्त, निष्कलंक, पाथेय, चारि पहर, नायकक नाम जीवन, एक छल राजा, प्रेम एक कविता, नाटकक लेल, मधुयामिनी, व्यक्तिगत, बताह ओ अन्य नाटकक निर्देशक छलाह श्रीकान्त । पूर्वाभ्यास मे जाधरि परफेक्शन नहि अबैत छलैक, ताधरि ओ नाट्य प्रस्तुतिक हैतु तैयार नहि होइत छलाह । नाट्य प्रस्तुतिक पूरा लिखित चार्ट (पात्र, काश्टयुम्स, प्रॉपरटीज, मंच सज्जा, परिवर्तन आदि) बनौने रहैत छलाह । श्रीकान्त मंडल मात्र एकटा कुशल निर्देशक नहि, एक मांजल अभिनेतो छलाह ।

श्रीकान्त कोनो साहित्यकार नहि छलाह । मुदा साहित्यकार लोकनि सँ हुनका अद्भुत सम्पर्क-साहचर्य छल । कोलकता मे रहनिहार वीरेन्द्र मल्लिक, रामलोचन ठाकुर, कुणाल, अग्निपुष्प, 'देशकोस'क विनोद जी आ सत्तन सबहक संग अभिन्न आ आत्मीय छलाह । नवतुरिया साहित्यकारक लेल हुनक आवास साहित्यक मन्दिर छल । एकर द्वारि सतत् खुजल रहैत छल, आश्रय स्थल छल, स्वागतक निमित्त अभिनन्दनक हेतु । गुणनाथजी केँ नव-नव

नाटक लिखबाक लेल उत्प्रेरित कयलनि, नचिकेताकेँ कोठली मे बन्न क' हुनका सँ अनेको नाटकक रचना करौलनि, महेन्द्र मलंगिया सँ चर्चा कय एकसँ एक नाटक लिखबाक प्रेरणा देलनि । कुणालकेँ विशेष स्नेह प्रदान कय निर्देशनक दिशा मे प्रेरित कयलनि, कौशल कुमार केँ कुशल रंगकर्मी बनबाक लेल बाध्य केलनि । निर्देशनक क्षेत्र मे कुणालक प्रगति सँ आह्लादित प्रमुदित छलाह, तहिना कौशल कुमार दासक सुनाम सँ कृत-कृत्य छलाह । अग्निपुष्पकेँ फिल्म निर्देशक रूपमे देखबाक आकांक्षी छलाह । उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' केँ बारहम वर्षक वयस मे मंच पर उतरबाक उत्साह देने छलथिन। हिनका अभिनेता सँ नाट्यकार बनेबाक श्रेय सेहो श्रीकान्तकेँ छनि । नचिकेताक पहिल नाटक 'नायकक नाम जीवन'केँ अत्यन्त साहसिकताक संग दर्शकक समक्ष सफल रूप स' प्रस्तुत करबाक श्रेय श्रीकान्तकेँ छनि । मैथिली मे 'ड्राइंग रूम ड्रामा'क सब प्रक्रियाक आयोजन श्रीकान्तकेँ छनि । प्रो. डा. प्रवोध नारायण सिंहक अध्ययन कक्ष आ तकर सामनेक खुजल बरन्डा मे पहिल ड्राइंग रूम ड्रामाक आयोजन कयने छलाह । कुणालकेँ निर्देशक बनौने छलथिन । दर्शक छलहुँ, खुब सफल नाटक भेल छल । तहिना लोक गार्डेन्सक फुटपाथ पर (श्रीकान्तक निवास स्थान लग) रामलोचन ठाकुर द्वारा 'स्ट्रीट ड्रामा'क मंचन करौने छलाह । मैथिली नाटकक क्षेत्र मे नव-नव प्रयोग करैत रहलाह श्रीकान्त ।

श्रीकान्त मात्र नाटक नहि मैथिलीमे सिनेमा आ टीभी सिरियल बनयबाक हेतु उद्धत छलाह । राजकमलक 'ललका पाग'क फिल्म निर्माणक दिशामे बहुत आगू बढ़ि गेल छलाह । एहि सिनेमाक गीत सबहक कैसेट बाजार मे उपलब्ध भ' गेल । हमरा पास एक कैसेट अछि । 'मेनाक बच्चा सुरलिया रे एगो जामुन गिरा' अत्यन्त मोहक गीत सब छल । फिल्मक स्क्रीप्ट तैयार छल, 'डब' सेहो भेल छल । कलाकारक चयन तथा शूटिंग सेहो प्रारम्भ भ' चुकल छल । मुदा फिल्मक प्रोड्यूसर पाइन मैथिली फिल्मकेँ छोड़ि बांगलाक फिल्म बनयबामे अग्रसर भ' गेलाह । फिल्मक निर्माण रुकि गेल । श्रीकान्त एहि फिल्मक निर्माण हेतु अथक परिश्रम कयलनि । असफल रहलाह । सोमदेवजीक 'अंगा'केँ 16 एम. एम. पर उतारि देबाक लेल उद्यत भेलाह । नचिकेता

'अंगा'क चित्रनाट्यक काज पूरा कय लेने छलाह । एकर आधा अंश सुना चुकल छलथिन । पूरा नहि सुना सकलखिन । तें नचिकेता निश्चय कयलनि जे 'अंगा'क चित्र नाट्यक रूपमे अवश्य प्रकाशन हैत आ तकरा उत्सर्ग करवन्हि श्रीकान्तेक नाम । श्रीकान्त मायानन्द मिश्रक 'आगिक मोम पाथर' लिलीरेक 'मरीचिका' तथा प्रभास कुमार चौधरीक 'हमरा लग रहब' क मेगा फिल्म बनेबाक नियार भास कयने छलाह ।

मैथिली नाटकक एक पत्रिका 'रंगमंच' कोलकाता सँ प्रकाशित भेल रहय जाहिमे श्रीकान्तक भूमिका ओ योगदान उल्लेखनीय छल । सम्पादक छलखिन रामलोचन ठाकुर । ई पत्रिका अल्पायु रहल । 1993 मे चेतना समिति, पटना मैथिली रंगमंचक क्षेत्रमे श्रीकान्तक विशिष्ट उपलब्धि आ योगदानक हेतु अभिनन्दन कयने छलनि । बांग्ला एवं हिन्दी नाट्य मंच मे सेहो काज करैत छलाह । हिन्दीक नाटककार श्यामानन्द जालानक परम अपेक्षित छलाह । हिन्दीक प्रसिद्ध नाटकक संस्था 'रंगकर्मी'क संस्थापक सदस्य ओ उप-सभापति छलाह। बांग्ला नाटकक संस्था 'नान्दीकार' स' सेहो संम्बद्ध छलाह । मैथिली फिल्म निर्माण मे असफलता हिनका सब तरहें झकझोरि देने छलनि । अस्वस्थ रहि रहल छलाह । ब्रेन हेमरेजक कारण 7 जनवरी 1994 कँ कोलकाता मे हिनकर अकाल मृत्यु भ' गेलनि । हमरा विश्वास नहि भेल । कर्मयोगी, परिश्रमी, उत्साही, हिम्मती एवं मातृभाषा मैथिलीक अनन्य उपासक, मैथिली समाजक विकासक लेल सतत् समर्पित आ मैथिली साहित्य एवं पत्रिकाक लेल सदा प्रस्तुत श्रीकान्त स्वयं मे एकटा जीवन्त व्यक्तित्व छलाह। हमरा ओहिना मोन अछि हमर कोलकता प्रवास स' पटना आगमन । हमर गृहपयोगीक सब सामान सुरक्षित ढ़ंग स' लदबाकय हमर अनुज अग्निपुष्पक संग भोर मे बिदा कय देलनि आ संध्याकाल हमरा सपरिवारकेँ हावड़ा रेलवे स्टेशन छोड़य अयलाह । गाड़ी ससरला पर हुनक क्रन्दन ओहिना मोन अछि। कँ रोकि सकैत अछि हमरा स्मरणक एक आंजुर नोर बहावय सँ एहि मिथिला मैथिलीक सपूतक प्रति ।



बाबू साहेब चौधरी : मिथिला-मैथिलीक अमर ओ निर्भीक सेनानी

आकाशवाणी पटनाक 23 अगस्त 1998 कँ प्रादेशिक समाचार मे सुनल जे मिथिला मैथिलीक निर्भीक सेनानी ओ एक विलक्षण स्तंभ बाबू साहेब चौधरी नहि रहलाह । हमरा विश्वास नहि भेल । तीन-चारि दिनक पश्चात हिनकर एक ग्रामीण हमरा ओतय अयलाह आ हुनके मुँहें एहि महान सपूतक मृत्युक संपुष्टि भेल । शुक्र दिन 21 अगस्त 1998कँ जन्मस्थान दुलारपुर मे ई अप्रिय घटना घटल । करीब डेढ़ वर्ष स' अस्वस्थ रहि रहल छलाह । आँखि काज नहि क' रहल छलनि ओ स्मरण शक्ति सेहो क्षीण भ' गेल छलनि।

हमरा हिनका स' कलकत्ता प्रवास मे भेंट प्रो. प्रबोध नारायण सिंहक नरेंद्र सेन स्कावायर मे 1956 मे भेल । ओहि दिन ओहिठाम मिथिला संघक कार्यकारिणीक बैसार छलै । मिथिला-मैथिलीक प्रति हिनक अटूट प्रेम पहिल बेर देखल-सुनल । 1956 स' 1975 धरि कलकत्ता मे हिनका संग सक्रिय रूपें काज करबाक मौका भेटल एवं दिनानुदिन दुनू गोटे सन्निकट होइत गेलहुँ।

बाबू साहेब चौधरीक जन्म दरभंगा जिलाक दुलारपुरक एक निर्धन परिवार मे 1916क भाद्र कृष्ण द्वितीया दिन भेल छलनि अरैवार नानपुर मूलक ब्राह्मण कुल मे । पिताक नाम छलनि रामप्रसाद चौधरी । शिक्षा बेसी नहि । मैट्रिक तक। अपन पहिल प्रकाशित पोथी 'कुहेस' पिताकेँ समर्पित कयने छलाह जाहिमे स्वयं लिखैत छथि "अपनेक ई अभिलाषा छल जे हमर बुच्ची (दुलारक नाम) पढ़ि-लिखि एहन व्यक्ति बनथि जाहि स' समाज मे प्रतिष्ठा प्राप्त होइन्ह । अपने तदर्थ एकटा आदर्श अभिभावकक रूप मे आंतरिक चेष्टा कयल । परंच हमहीं अकर्मण्य सिद्ध भेलहुँ ।" पिताक ई मनोभाव प्राप्त भेलनि । सामाजिक प्रतिष्ठाक शिखर पर पहुँच गेलाह । मुदा नामक अनुरूप

नहि सिद्ध भेलाह । ने बाबू छलाह, ने साहेब छलाह । समाजक निम्न वर्गक लोक स' संपर्क मे जे आनंद आ उत्साह रहैत छलनि, सैह बांग्ला अखबारक संपादक ओ विद्वान, सरकारी उच्च पदाधिकारी राजनेता आदि स' । तखन चौधरी जरूर छलाह । सब तरहक भोजन पसिन्न छलनि । मांस-माछ खाक'साबुन स' हाथ नहि धोइत छलाह । कारण, माछक गमक खतम भ' जयतनि । गौर वर्ण, कृशकाय, मोट शीशावला चश्माक तर स' झलकैत हुनक पैघ-पैघ आंखि प्रखर, मुखर, शिखर, रंगमंचक सूत्रधार, कर्मठ मैथिली सेनानी चौधरी जी छलाह व्यक्ति रूप नाम स' अधिक एकटा संस्था ।

जीवन-यापनक हेतु सिंतबर 1943 मे कलकत्ता गेलाह । संयोग स' प्राइवेट बस एसोसियेशन–टिजला बस एसोसिएशन मे कार्यरत भ' गेलाह ओ एहि बस एसोसिएशन–टिजला बस एसोसिएशन मे 1960 तक सुपरवाइजर पद पर कार्य कयलनि । ओहि समय मे कलकत्ता महानगरी मे परिवहनक मुख्य साधन निजी बस छल । सड़क यातायातक राष्ट्रीयकरण नहि भेल छल। एहि मार्गकेँ सरकार 1960 मे अपना हाथ मे ल' लेलक । चौधरी जी अपन त्याग-पत्र द' देलनि । 6/1 बामन पाड़ा लेन, कलकत्ता मे रहैत छलाह । बाद मे बागुई हाटी, मे रहय लगलाह । बसक राष्ट्रीयकरणक बाद जे किछु टाका भेटलनि ओहि स' मैथिली आर्ट प्रेस, 9/1 खिलात घोष लेन, कलकत्ता-6 मे खोललनि जे शेष जीवन पर्यंत भेल हिनक जीबाक आधार । शुरू मे जीवन-बीमाक विशिष्ट एजेंट सेहो रहथि किंतु जहिना मिथिला-मैथिलीक आंदोलन मे सक्रिय भेलाह, ई धंधा खतम भ' गेलनि । आर्थिक कष्ट मे बरोबरि रहैत छलाह । परिवार केँ आर्थिक सुख नहि द' सकलथिन मुदा आजीवन खुश फैल स' जीबाक हेतु कोनो समझौता नहि कयलनि । करितथि कोना–प्रगतिशील वाम विचारक लोक छलाह ।

मिथिला–मैथिलीक क्षेत्र मे सर्वप्रथम 31 दिसंबर 1947 केँ कालीघाट पार्क मे आयोजित अ. भा. मैथिल संघक सभा भेल छल जकर अध्यक्ष हरिश्चंद्र मिश्र 'मिथिलेंदु' रहथि । तखन मात्र दहेज-काटरक विरूद्ध मे काज होइत छल । मिथिला मैथिलीक आंदोलनक राजनैतिक रूप तखन नहि छल।

डॉ. लक्ष्मण झा केँ चौधरी जी मिथिला-मैथिलीक आंदोलनक एक मात्र गुरु मानैत छलाह । स्टेट्समैन डा. झा. जे आधुनिक राजनीतिज्ञ नहि छलाह, 1951 मे भाफि गेलाह जे मिथिला-मैथिलीक समस्या–भूख, बाढ़ि, पटौनी, शिक्षा, स्वास्थ्य, यातायात आदिक समाधान वर्त्तमान सरकार स' संभव नहि । तें हेतु पटना मे एहि वर्षक प्रारंभ मे मिथिला मंडलक स्थापना कयलनि । जाहिमे प्रगतिशील मैथिल लोकनि संग देलथिन । एहि क्रममे कलकत्ताक गिरीश पार्क मे सभाक आयोजन 22 नवंबर 1953 केँ कयल गेल । मिथिला राज्यक हेतु आधा मील लंबा प्रदर्शन कयल गेल छल । एहि आयोजन मे सक्रिय भूमिका छल चौधरीजी, प्रबोध बाबू ओ देवनारायण बाबूक । मिथिला-मैथिलीक आंदोलन मे ई आयोजन मीलक-पाथरक काज करैछ जकरा कलकत्ताक मिथिला मैथिली प्रेमी कहियो नहि बिसरि सकताह । चौधरी जी मे एक उत्कृष्ट संगठनकर्त्ताक सब गुण छलनि । राति-दिन मे कोनो फर्क नहि छलनि । कलकत्ताक मैथिली भाषी कोनो जाति धर्मक छलाह, सब मैथिल । जाहि समय मे दरभंगा-मधुबनीक मूर्धन्य विद्वान ओ एक संस्था मैथिल माने ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ एवं शुद्ध मैथिली भाषी मात्र पंचकोशी केँ कहैत छलाह, प्रवासी कलकत्तिया सब मैथिल ओ मैथिलीकेँ व्यापक बुझैत रहलाह आ एहि हेतु व्यापक आंदोलन कयलनि । तकरे प्रभाव भेल जे आब पूर्णतः मैथिल ओ मैथिलीक परिभाषा बदलि गेल अछि ।

अखिल भारतीय लेखक संघक सम्मेलन कलकत्ताक महाजाति सदन मे आयोजित छल । मैथिली लेखकक नामोनिशान नहि छल। चौधरी जी एहि हेतु सक्रिय भ' गेलाह । प्रयास सफल भेलनि । मैथिली भाषाक लेखक केँ स्थान भेटलनि । ओहि मे हरिमोहन झा, लक्ष्मण झा आ मणिपद्म केँ आमंत्रण भेटलनि । प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरूक उपस्थिति सेहो निर्धारित भेल। पुनः चौधरीजी एवं देवनारायण बाबू सक्रिय भेलाह जे प्रधानमंत्रीक उपस्थिति मे मैथिली भाषी लेखक केँ अपन भाषाक व्यथा कहबाक अवसर भेटनि। सफल भेलाह । नेहरूजीक समक्ष डा. लक्ष्मण झा केँ तीन मिनट मे अपन विचार प्रस्तुत करबाक मौका भेटलनि । डा. झा अढ़ाइ मिनट मे सब बात सुना देलथिन, जकर समीचीन उत्तर नेहरूजी अपन भाषण मे द' देलथिन । यैह छलनि काजक पद्धति । चौधरीजी असंभव केँ संभव करबाक सब समय प्रयास करैत रहैत छलाह ।

साहित्य अकादेमी मे मैथिलीक मान्यताक प्रसंग दिल्ली मे बैसार आहूत छल। एहि स' पहिने हिनका प्रयास स' लाखो स' उपर पोस्टकार्ड मिथिलांचल स' अकादमीक कार्यालय मे पहुँचायल गेल । एहि हेतु डा. प्रबोधनारायण सिंह एवं डा. अणिमा सिंह देवघर स' यात्रा प्रारंभ कयलनि । जगह-जगह चौधरीजी, देवनारायण बाबू आ मिथिला संवक कार्यकर्त्ता एहि पावन काज मे सक्रिय भूमिका निभौलनि । समस्त मिथिलांचल घूमि गेलाह । अकादमीक बैसारक दिन जखन नजदीक भेल, चौधरी जीकेँ सूचना भेटलनि जे एक सदस्य मैथिली विरोधी छथि । जेना-तेना प्रबोध बाबूक प्रयास स' कलकत्ता विश्वविद्यालयक काज मे हुनका फंसा देल गेल । ओही बेर मैथिली के साहित्य अकादमी मे मान्यता भेटि गेल ।

दरभंगा मे आकाशवाणी केंद्र एवं समस्तीपुर धरि बड़ी लाइनक निर्माण हेतु विद्यापति जयंतीक अवसर पर सत्यनारायण सिंह जे ओहि समय केंद्रीय सरकार मे मंत्री छलाह, उद्घाटन कयने छलाह ओ रामेश्वर ठाकुर स्वागताध्यक्ष छलाह । अपन भाषण मे रेडियो स्टेशनक निर्माण स्वीकार कयलनि । रेडियो स्टेशन दरभंगा मे खुजि गेल आ मैथिली प्रोग्राम सेहो चालू भेल । डाक विभागक क्षेत्रीय कार्यालय सेहो खोलबायल गेल जे संप्रति दरभंगा राजक बेला पैलेस मे कार्यरत अछि । बड़ी लाइनक अनुशंसा सेहो करायल गेल जकरा ललित बाबूक कार्यकाल मे समस्तीपुर धरि पूरा कयल गेल । मोकामा मे गंगानदी पर पुल ओ मिथिला एक्सप्रेस ट्रेनक हेतु सेहो आंदोलन भेल छल । मैथिलीकेँ बिहार लोक सेवा आयोग मे ऐच्छिक विषयक रूप मे सम्मिलित करयवा लेल बराबरि प्रयास होइत रहल । बिहार सरकार 1972क पूर्वार्द्ध मे एकरा स्वीकृत कयलक । दुखक संग कहय परैछ जे राजद सरकार एकरा आव ऐच्छिक विषय नहि रहय देलक । पटना उच्च न्यायालय मे सरकार हारि गेल आ उच्चतम न्यायालय मे एहि मामिलाकेँ ल' गेल अछि । मिथिला विश्वविद्यालयक हेतु सेहो आंदोलन भेल जे ललित बाबूक सत्प्रयास स' पूरा भेल । एहि तरहे मिथिला मैथिलीक विकास मे चौधरी जी सब दिन अगुआ रहलाह ।

चौधरी जी मैथिली साहित्यक सृजन ओ समृद्धि मे सब दिन प्रयत्नशील रहलाह । मैथिली प्रकाशन हेतु मैथिली आर्ट प्रेसक स्थापना कयने छलाह । विभिन्न प्रकाशनक नाम स' मैथिली साहित्यक विभिन्न विधा मे-कथा, उपन्यास, एकांकी, गद्य संग्रह, पद्य संग्रह, नाटक आदि । जेना श्री ललितक 'प्रतिनिधि' (गल्प संग्रह)क 1964 मे प्रकाशन । नैमिकानन प्रकाशन द्वारा 5 पोथी प्रकाशित भेल छल । एहिमे साझीदार छलाह-चौधरीजी, प्रभाकर झा, रामकृष्ण ठाकुर आ एहि पंक्तिक लेखक । तहिना सिंदरी, जमशेदपुर, ओ अन्य जगहक लोककेँ उत्साहित क' प्रकाशन करवैत छलाह । नवतुरिया लेखकक पहिल पुस्तक प्रकाशित कयल जे आव मूर्द्धन्य मैथिली लेखक प्रमाणित भ' चुकल छथि । यथा मायानंद मिश्रक 'बिहाड़ि पात पाथर' (उपन्यास) 'आगि मोम पाथर' (कथा 1960मे) राजकमलक 'आदि कथा' (उपन्यास) (1958) एवं अन्यक । मूर्द्धन्य लेखक मे राधाकृष्ण चौधरीक 'शारान्तिधा', हरिमोहन झाक 'चर्चरी', ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म'क 'विद्यापति', मधुपक 'झंकार' (कविता संग्रह), आरसी प्रसाद सिंहक 'माटिक दीप' (कविता संग्रह) एवं अन्यक । नवतुरिया मे गौरी मिश्रक 'ठेहिआयल मोन शीतल छाहरि' (कथा संग्रह), श्री प्रवासीक 'अरुणिमा' (कविता संग्रह), नित्यानंद झाक 'धरती जागि उठल', श्याम चंद्र झाक 'उदय आ अस्त', बिंदेश्वर मंडलक 'बाटक भेंट जिनगीक गेंठ' आ 'समाधान', जनार्दन झाक 'निष्कलंक' नाटक, घनचक्र संपादित 'स्वास्तिका' (कथा संग्रह), सीताराम चौधरीक 'सुखायल डारि नव पल्लव' (नाटक), मोहन चौधरीक 'संतान' (नाटक), एवं अन्य साहित्यकार। लिस्ट पैघ अछि जकरा एहि छोट लेख मे समेटब संभव नहि ।

मैथिलीक सब विधा मे नव ओ मूर्द्धन्य साहित्यकारक सहयोग स' भंडार भरलेनि । नव लेखक आब शीर्ष स्थान प्राप्त कयने छथि, किंतु चौधरी जी अयश अपना माथ पर सेहो लेलनि । कारण रायल्टी ओ पारिश्रमिक लेखक लोकनि केँ नहि द' सकलाह । यद्यपि कलकत्ता मे परिपाटी छल जे मैथिली पुस्तक बिना मूल्य देने नहि पढ़ब । किंतु चौधरीजी पाइ वोसूलइ मे मोगल नहि भ' सकैत छलाह । कलकत्ता स' बाहर प्रकाशित पोथी-पत्रिका सेहो घूमि क' बेचैत छलाह । पत्रिकाक आजीवन सदस्य बनवैत छलाह । मैथिली

पत्रिका स्थायी प्रकाशित नहि भ' सकल । पुनः जिनका सब अंक नहि भेटैत छलनि, हिनका स' अयशक भागी भेलाह ।

हमरा जनैत चौधरीजीक तीन टा पोथी प्रकाशित भेल छलनि । 'अछिंजल' (कथा संग्रह), बामन पाड़ा लेन कलकत्ता–19स' मैथिली प्रकाशन द्वारा प्रकाशित। एहि मे नौ गोट कथा संग्रहीत अछि । एकर ओ स्वयं संपादक आ भूमिका लिखने छथि । डी. एल. राय कृत चाणक्य नाटकक भावानुवाद 1965 मे दोसर रचना छपल जे 23 नवंबर 1965 कैँ महाजाति सदन कलकत्ता से मंचस्थ भेल छल । तेसर हुनक लिखल 'कुहेस' मौलिक सामाजिक नाटक 1967 मे प्रकाशित भेल । ई नाटक बहुत समादृत भेल एवं 13 मइ 1967कैँ नैताजी सुभाष इंस्टीच्यूटक प्रेक्षागृह, कलकत्ता, मे मैथिली रंगमंच संस्था द्वारा मंचस्थ कयल गेल छल । चौधरजी स्वयं कन्याक पिता–जनकक पार्ट कयने छलाह । प्रदर्शन खूब सफल भेल छल ।

नाटकक प्रति चौधरजी अपन प्रारंभिक जीवन काल स' समर्पित छलाह । प्रत्येक वर्ष दुलारपुर–मकरमपुर मे दुर्गापूजा ओ अन्य उत्सव पर हिनका प्रयासे 1953 धरि नाटक होइत रहल । स्वयं 'कुहेस'क भूमिका मे लिखैत छथि जे क्रमशः एहि स' उदासीन होमय लगलहुँ, कारण मिथिला संघ द्वारा संचालित मैथिली आंदोलन मे हम तेना ओझरा गेलहुँ जे गामक एहि आयोजन पर सांस्कृतिक कार्यक्रम मे नाटकक प्रदर्शन नहि कय सकलहुँ । किंतु स्त्री-पात्रक रूप मे पुरुष द्वारा अभिनय अखरैत छलनि । दोसर मंचोपयोगी नाटकक अभाव बुझना गेलनि । स्वयं प्रबोध बाबू, अणिमा सिंह, इलारानी सिंह, नचिकेता, सीताराम चौधरी, गुणनाथ झा एवं अन्य लोकनिसँ मूल नाटक एवं अनुवाद प्रस्तुत कयलनि । मैथिली नाटककैँ आधुनिक बांग्ला नाटकक समकक्ष ल' जयबा मे डा. अणिम सिंह, प्रबीर मुखर्जी, सीताराम चौधरी, श्रीकांत मंडल, नचिकेता आदिक मुख्य सहायता भेटलनि । श्रीमती वीणा राय बंगालिन कैँ पहिले पहिल मैथिली नाटक मे स्त्री पात्रक रूप मे उतारल गेल । बाद मे बहुतो मैथिली नाटक मे हिनका स' काज करायल गेल । नव–नव कलाकारकैँ चौधरजी तैयार कयलनि ।

मैथिली आंदोलनकैँ विकसित करबा मे 'मिथिला दर्शन' पत्रिकाक पैघ योगदान छैक । 1952 स' ई मासिक पत्रिका कलकत्ता स' प्रकाशित होमय लागल, मिथिला संघक मुखपत्रक रूप मे । दर्शनक मुखपृष्ठ पर कविवर सीताराम झाक ई पंक्ति, 'पायब निज अधिकार कतहुँ की बिना रगड़ने, अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने ।' मिथिला संघ मिथिला-मैथिली आंदोलनक हेतु सब समय यैह मंत्र अपनौने छल । शुरू मे 'मिथिला दर्शन' सिंह प्रेस स' प्रबोध बाबूक संपादकत्व मे प्रकाशित होइत रहल । कैक खेप बंद भेल–चालू भेल । संपादक सेहो बीच-बीच मे बदलल गेलाह । जेना बाबू साहेब चौधरी, अणिमा सिंह, इलारानी सिंह । मिथिला दर्शन प्राइवेट लिमिटेड सेहो बनल । नव लोककैँ सेहो व्यवस्था मे आनल गेल । जेना राजनंदन लाल दास ओ एहि पंक्तिक लेखक कैँ । मुदा कोनो प्रयास एकरा दीर्घजीवी नहि बना सकल । अंत मे चौधरी जी प्रायः 1975-76 स' 'मैथिली दर्शन' प्रकाशित करय लगलाह । पुनः असफल भेलाह । आ ई पत्रिका बंदे भ' गेल।

साहित्य अकादमी मे पुरस्कृत पोथीक संबंध मे फरवरी 1973क अंकक संपादकीय 'मिथिला दर्शन अद्यावधि मैथिलीक किछु तथाकथित पंडा सब द्वारा (अकादमीक प्रतिनिधि वा टेक्सटबुक कमिटीक सदस्यगण होथि, खाहे परीक्षक होइथ) मैथिलीक नाम पर जे कुकृत्य कयल जाइत अछि ताहि संबंध मे कम-बेश अवगत रहितहुँ मात्र अहि दृष्टि स' जे एखन पारस्परिक घोंघाउज भेनाइ ठीक नहि नीति अपनौने छल, मुदा आब चुप्पी सधने कर्त्तव्य च्युत हेबाक संभावना । प्रारंभे स' ई संदेह सुच्चा मैथिली भक्तक हृदयमे स्थान बनौने छल जे अकादमी मे पूर्ण पक्षपात होइत अछि ।' चौधरजी के 1973 मे पक्षतापूर्ण रवैया दृष्टिगोचर भेलनि । 2002 मे एहि पक्षपातपूर्ण रवैया पर किछु उत्साही युवक साहित्य अकादमी कार्यालय दिल्ली मे धरना-प्रदर्शन कयल–मूल ओ अनुवाद दुनू पोथी मे उचित निर्णय नहि होयबाक कारण । सचिव साहित्य अकादमीकैँ दिल्ली पुलिसक सहयोग स' शांति स्थापित करबाक हेतु पुलिसकैँ बजबय पड़लनि ।

'विद्यापति पर्वक नव रूप चाही' अक्टूबर-नवंबर 1973क 'मिथिला दर्शन' संपादकीय मे लिखैत छथि, ''हमरा लोकनि भले ही प्रत्येक शहर मे

विद्यापति भवन बना ओहि मे विद्यापतिक सोनाक मूर्तियो स्थापना क' ली, परंच जों मिथिला आ मैथिली नहि रहत त' विद्यापति नहि जीवित रहि सकैत छथि । सरकार केँ स्पष्ट भाषा मे सबकेँ कहि देबाक चाही जे मैथिलीक समस्याकेँ टारने नहि बनत । भाषाक संग आंदोलन मे मिथिलाक अन्यान्य समस्या सबकेँ (यथा औद्योगिक विकास, यातायात, शिक्षा आदिक प्रबंध) सेहो सम्मिलित करय पड़त ।'' ई मैथिली सेवी संस्था स' अपील कयल गेल छल 1973 मे । किंतु एखनो पटना ओ दरभंगाक मूर्द्धन्य, संस्था यैह नहि क' रहल अछि । मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु कोनो ठोस काज नहि कयल जा रहल अछि ।

कलकत्ताक एक बैसार मे एक प्रवासी मैथिल अपन तर्क रखलनि जे मैथिली मे क्रोध व्यक्त करबाक उचित सामर्थ्य नहि छैक, जेहन कि हिंदी वा भोजपुरी मे छैक । चौधरीजीक आँखि एकबैग लाल भ' गेलनि । ओ एतेक जोर स' बजलाह, छाउर लगा क' सट्ट द' जीह खैंच लेब एखने । ओहि बेचारेक वाक-हरण भ' गेल ! उपस्थित लोक सकदम्मे रहि गेलाह । एक क्षणक हेतु वातावरण अत्यंत विषाक्त भ' गेल । मुदा तुरंते चौधरीजी हँसैत बजलाह, ''आब कहू, मैथिली मे क्रोधक नीक अभिव्यक्ति छैक कि नहि ?'' मैथिली भाषाक विरूद्ध ओ किछु सुनि नहि सकैत छलाह ।

हिंदी स' विरोध नहि छलनि । विरोध छलनि मैथिलीक मंच स' मैथिली द्वारा मातृभाषाक अपमान स' । पटनाक चेतना समितिक 1974क विद्यापति पर्वक आयोजन । नेपालक पूर्व प्रधानमंत्री मातृका प्रसाद कोइराला अपन उद्घाटन भाषण मैथिली मे कयलनि । किंतु अध्यक्षीय भाषण करबाक हेतु डा. जनार्दन मिश्र उठलाह एवं हिंदी मे संबोधन कयलनि । चौधरी जी अन्य अतिथिक संग प्रथम पंक्ति मे बैसल छलाह । ठाढ़ भ' गरजलाह–हाँ-हाँ, मंचकेँ अपवित्र नहि करू । मैथिली मे वाजू । अध्यक्ष पुनः अपन भाषण हिंदी मे शुरू कयलनि । चौधरी जी पुनः गरजलाह–मंच फेर अपवित्र भेल । हम सभाक बहिष्कार करैत छी आ विदा भ' गेलाह । चौधरजी मैथिली आंदोलनक निर्भीक सेनानीक परिचय देलनि ।

मिथिला-मैथिलीक आयोजन कोना कयल जाय । एहि संबंध मे 15-01-70 क एक पत्र मे रामकृष्ण झा 'किसुन' केँ कलकत्ता स' लिखैत छथि–सुपौल मे व्यवस्था कयने कोना की खर्च पड़तैक एवं कतेक दिन हमरा वा अन्य कार्यकर्ता केँ समय देमय पड़तैक, तकर सूचना दी । हमरा लोकनि की करय चाहैत छी से पत्र लिखि चुकल छी । तैयो किछु पुनः उल्लेख क' दैत छी। मैथिलीक कोनो मांगक पूर्ति बिनु आंदोलने संभव नहि तें जे कोनो आयोजन हो, तकर रूप एहन रह'क जाही चाहि स' आंदोलनक झलक जन साधारण तथा सरकारक ध्यान मे अबैक । एकरा ध्यान मे राखि केहन आयोजन हैबाक चाही, तकर अनुभव हमरा स' बेसी अपने केँ अछि । राजनीतिक दल स' आशा हमरा एखनो नहि अछि । मिथिलाक समस्त जिला मे हमरा लोकनि आयोजन करय चाहैत छी ।

कविवर सीताराम झाक पड़लोक गमन भेला पर स्मृति अंक मनोनुकूल प्रकाशित नहि क'सकलाह । 'मैथिली दर्शन'क जनवरी-फरवरी, 1976 मे लिखैत छथि, ''हमरा जनैत मैथिली दिस लोकक रुचि जगबै मे सब स' विशेष हाथ छनि सर्वश्री हरिमोहन झा, सीताराम झा आ मधुपजी आदिक । मुदा मिथिला मे सब धान बाइस पसेरीक भाव बिकाइत छैक । हमरा लोकनि जीबैत किनको पर्याप्त सम्मान त' दइये ने सकलिअनि, मृत्युक उपरांतो श्रद्धा ज्ञापन करै मे कतराइत रहैत छी । कविवर हम 'मैथिली दर्शन' परिवार आ मिथिला संघक दिस स' सादर प्रणाम ज्ञापन करैत यैह कहब जे जौं आइ मिथिला छोड़ि बंगाल, मद्रास, केरल आदि मे जन्म ग्रहण कयने रहितहुँ त' अपनेकेँ अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भेल रहैत ।'' चौधरीजीक उपर्युक्त उक्ति सत्य घटित भेल । हुनका जीवन मे ओ मृत्युक उपरांत ई समाज किछु कयलकनि हुनका लेल ? धन्य छथि कलकत्ताक प्रवासी मैथिली सब जे हुनक जन्मस्थान मे स्मारक बना रहल छथि ।

चौधरीजी तिलक-काटर व्यवस्थाक घोर विरोधी छलाह । जे बालकक विवाह मे टाका गनबैत छलाह, हुनका ओतय भोजन नहि करैत छलाह । अपन सब काज बिनु टाका गनने कयने छलाह । विहार सरकार 1976 मे विधेयक द्वारा टाका गननिहार-गनोनिहार दुनूकेँ सजाक प्रावधान कयलक । एहि पर

हुनक प्रतिक्रिया 'मैथिली दर्शन'क जनवरी-फरवरीक संपादकीय मे देखल जाय, ''हमरा स्मरण अछि जे 1948 स' 50 धरि कलकत्ताक संस्था द्वारा एकरा विरूद्ध मे जे आंदोलन सौराठ सभा मे भेल छल ओकर नीक प्रभाव पड़ल रहैक, परंच संस्थाक प्रतिनिधिये (विशेष रूप स' पदाधिकारी लोकनि) सब अपना बेटा आ भातिजक बेर मे निर्लज जकाँ हजारक हजार गना लेलनि त' जनताक दोषे कोन ? अपने (तत्कालीन मुख्यमंत्री जगन्नाथ मिश्र) टाका गनोनिहार पर निर्मम प्रहार द्वारा तिलक प्रथा बन्न क' मिथिला मे एक टा नव कीर्तिक स्थापना करू । दर्शन अपनेक पूर्ण समर्थन करत ।'' किंतु सरकारक विधान एहि सब मे कानूनक किताबक शोभा बढ़ा रहल अछि आ संस्थाक प्रयास असफल भेल ।

चौधरजी जहिना नाटक ओ संगीत मे प्रेम रखैत छलाह, तहिना फुटबॉल खेल मे सेहो । मोहन बगान टीमक पैघ भक्त छलाह । हमरा खेल-कूद मे रुचि नहि, माठ मे मैच नहि देखने छलहुँ । एक बेर ल' गेलाह । खेल की देखब हम एखन खेलुआट भेल छी, ओ ओहि समय मे छलाह । चाहक भाड़ (चुकिया) गेंद जकाँ हुनका माथ पर खसल । हम अकचका गेलहुँ । ओ कहलनि–एहि सब मे एहिना होइत छैक । मैच खत्म भेल तखन घर फिरलाह। हम जहिना मिथिला-मैथिली आंदोलन मे संग दैत छलियनि, अपन 20 वर्षक प्रवास मे खेलक मैदान मे कहियो संग नहि देलियनि ।

सामान्य मनुष्यक जन्म होइत छनि सांसारिक भोग-विलासक हेतु । विशिष्ट व्यक्ति अबैत छथि, ओ अपन अवदान छोड़ि, एहि असार-संसार मे सारभूति तत्वक स्थापना कय, महाप्रयाण करैत छथि । लोक चर्चित होइत रहैछ अपन क्रिया-कलाप स', सुकृति-प्रकृति स'–युग पुरुष युगस्त्रष्टा होइछ, निर्मात्ता होइछ । अपन वैशिष्ट्य स' सदा चमत्कृत करैत रहलाह मिथिला मैथिलीक ई अमर सपूत । पहिने सोचैत रही, जाहि दिन मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम् अनुसूची मे स्थान भेटि जायत, ओहि दिन एहि महामानवकेँ असली श्रद्धांजलि हैत । मुदा आबक स्थिति त'...

—o—

जनकवि यात्रीजी

मैथिली साहित्य मे नवयुगक महान प्रवर्त्तक कविवर यात्रीजीक नाम वैद्यनाथ मिश्र छनि, जिनकर जन्म 'दीन-हीन-कृषक-कुल' मे ज्येष्ठ पूर्णिमा 1911 मे तरौनी (तरुवनी) गाममे नहि मातृकमे भेल छलनि । तरौनी संस्कृत शिक्षाक प्राचीन केन्द्र छल । हिनक शिक्षा तरौनी, काशी (वाराणसी), कोलकाता ओ कोलम्बो मे भेल छलनि । संस्कृत ओ पाली भाषाक माध्यमे यात्रीजी साहित्य ओ दर्शन मे निष्णात भेलाह । संस्कृत, पाली, प्राकृत, अप्रभंश, मैथिली, हिन्दी, बांग्ला, गुजराती आदि कतोक भाषाक गहनवेता छलाह। बुद्ध, मार्क्स आ फ्रायर्ड हिनका मे रचल-बसल छलनि । अति मानवीय सत्ता पर मानवक प्रतिष्ठापन, अवचेतन मोनक आकुलता आ ह्रदयद्रावक करुणाक सत्यसार हिनका एतहि सँ प्राप्त भेल छलनि । वस्तुवादी जीवन दर्शन तथा मानववादी उद्घोष हिनक चुम्बकीय आकर्षण थिक । कलमे कोदारि छलनि–लेखन हिनक मुख्य कर्म रहल । छोट खुट्टीक लोक, गौर वर्ण-गहुमा कांति, धंसल आँखि, झुकल कान्ह, जीवटगर करेज आ खादीक पैजामा-कुर्त्ता मे सब समय। पण्डित रहितो बौद्ध, पारम्परिक रहितो परम्पराक भंजक, संघर्षशील रहितो संवेदनशील, विद्रोही रहितो घोर आशावादी, उग्रपन्थी रहितो महान उदारवादी आ सर्वथा उन्मुक्त छलाह यात्रीजी। 1934 मे यात्री भेलाह । एहिसँ पहिने 1929 मे पहिल कविता मे वैद्यनाथ 'विद्यार्थी' तरौनी निवासी लिखने छलाह। दू सालक बाद हिन्दी मे 'विदेह' भऽ गेलाह । नागार्जुन नाम भेलनि श्रीलंकाक बौद्ध मठ मे । तहिया सँ मैथिली मे यात्री आ हिन्दी मे नागार्जुन लिखैत रहलाह।

यात्रीजीक विवाह 18 वर्षक अवस्था मे मधुबनी जिलाक बक्सीटोल हरिपुर गाम मे भेल छलनि । चारि पुत्र-शोभाकान्त, सुकांत, श्रीकान्त आ श्यामाकान्त तथा दू कन्या उर्मिला आ मंजू । विवाहक दू वर्ष बाद साधु भऽ गेलाह । बौद्ध-भिक्षुकक रूप ग्रहण कयलनि । पैत्रिक गाम तरौनीक मोहमाया छोड़लनि आ लिखलनि-

अहिवातक पातिल फोड़ि-फाड़ि
परिजन-पुरजन कें छोड़ि-छाड़ि
हम जाए रहल छी आन ठाम
माँ मिथिले ई अन्तिम प्रणाम ।

सन्तान कोनो कारणवश वा भावावेश मे अपन जन्मभूमि, परिजन आ स्वजनकें बिसरि जयबाक आ छोड़बाक निश्चय करए किन्तु सह्रदय मायक अन्तःकरण मे जे निस्सीम प्रेम अपन सन्तानक प्रति रहैत छनि से अन्ततोगोत्वा विजयी होइछ आ मिथिलाक अपन लौहपुरुष अपन यात्रीजी लिखैत छथि-

निन्न टूटल कैल निश्चय, किछु होअओ,
बितायब नहि आयु आब प्रवास मे ।

ओहि समय मे स्वामी सहजानन्द सरस्वती बिहार मे अंग्रेजी राज आ जमींदारक अन्यायक विरोध संघर्ष कऽ रहल छलाह । पत्राचार चलि रहल छलनि । स्वामीजी राय देलनि अतीतकें छोड़ि वर्तमानक खुजल मैदान मे जाउ। सधुक्कड़ीक वेश-भूषा मे यात्री जी बिहटा आश्रम पहुँचि गेलाह । सत्याग्रह मे शामिल भऽ गेलाह । मारि खेलनि आ जेल सेहो गेलाह । चम्पारण मे राहुल सांकृत्यायन किसान आंदोलन कयलनि । यात्रीजी संग देलखिन्ह । जेल गेलाह। हिनक पत्नी पर सेहो वारंट निकलल छलनि, मुदा ओ जेल नहि गेलखिन्ह । यात्रीजी दू बेर राहुल सांकृत्यायन संग तिब्बतक यात्रा कयने छलाह । एक बेर हिमपातक कारण घूमि कऽ चल अयलाह ।

क्षीणकाय रहितहुँ यात्रीजी भीतर सँ लौह पुरुष छलाह । ओ सामाजिक विषमता आ सत्ताधारीक निरंकुश शोषण नीतिक विरूद्ध आजीवन संघर्षरत

रहलाह । ओहि पीढ़ीक महापुरुष छलाह जे देशक स्वतंत्राक संग्राम अवर्णनीय योगदान देलनि । किसान सभाक कार्यक्रम मे घनिष्ठ रूपें जुड़ल रहथि । आततायी जमींदारक विरूद्ध संघर्ष करबा मे कनेको नहि सकुचाइथ । यात्रीजी शोषण-विहीन समाजक प्रबल पोषक रहथि । हिनका मे विद्रोह अंकुर जीवनक प्रथमे विद्रोही रुखि बरकरार रखलनि । देश मे 1974 मे आपातकालीन स्थिति लागू भेला पर जयप्रकाशजीक संग इन्दिरा गांधीक तानाशाहीक विरोध मे सक्रिय भऽ गेलाह । सम्पूर्ण क्रांतिक समर्थन मे जेल यात्रा करय पड़लनि। इन्दिरा गांधीक विरूद्ध लिखलनि-

इन्दुजी क्या हुआ आपको
भूल गयी बाप को ।

एक दिस यात्रीजीक सरलता-विनम्रता आ दोसर दिस हुनक अपार ज्ञान भंडार सहजहि लोककें आकृष्ट कऽ लैत छल । हुनक रचना पाठक कें झंकृत कऽ दैत छल । विचार-व्यवहार सँ एवं आकृति सँ भारतीय संस्कृतिक प्रतीक परिलक्षित होइत छलाह । त्याग आ निःस्वार्थ सेवा भाव हुनकर व्यक्तित्वक कण-कणकें आच्छादित कयने रहैत छलनि । जहिना ज्ञान संचय मे अग्रणी रहथि तहिना अर्थ-संचय मे भागल फिरथि । सदिखन ज्ञान दान करैत रहलाह। जन समुदायकें सद्भाव दिस उलेड़ित करब हिनक मुख्य कार्यक्रम एवं एकमात्र उद्देश्य रहैत छलनि ।

जन-जीवनक जीवंत चित्रकार यात्रीजी मूलतः कवि छलाह, तखन किछु आओर । जतय हिन्दी मे हिनक रचनाक-कथा, कविता आ उपन्यास-पथार लागल अछि । मैथिली मे मात्र दू गोट कविता संग्रह छपल छनि । 'चित्रा' 1949 मे प्रकाशित भेल जाहि मे 28 कविता संकलित अछि । एहिमे प्रकाशित 'कविक स्वप्न' एक मील पाथर सिद्ध भेल जे कविता कें विनोद, विलासिता आ कोठा-सोफ़ाक चकाचौंध सँ निकालि गरीब दुखियाक घर-आंगन मे ठाढ़ कऽ दैछ ।

अन नै छै कैंचा ने छै
गरीबक नेना कोना पढ़तैक
उठह कवि तों दहक ललकारा कने
गिरि-शिखर पर पथिक दल चढ़तैक रे ?

मैथिली कविताक ई जनवादी स्वर नवता ओ आधुनिकताक जनक छलाह। प्रगतिवादक ई ध्वजोत्तोलन मैथिली कविता कैँ नव रंग, नव शिल्प, नव भावबोध ओ नव अभिव्यक्ति क्षमता देलक । कविक हृदय मे गरीब-गुरबाक प्रति कतेक ठोस पीड़ा छलनि से एहि कविता सँ स्पष्ट होइछ । यात्रीजीक रचना यथार्थवादक माटि-पानि सँ भीजल-तीतल छनि । हिनक रचना यथार्थवाद ओ क्रमिक समाजवादी यथार्थवाद तथा प्रगतिवादक एवं मनोवैज्ञानिक यथार्थवादक ढ़ेरी पर पसरल अछि ।

'पत्रहीननग्नगाछ' यात्रीजीक दोसर काव्य संग्रह 1967 मे प्रकाशित भेलनि । एहि मे 43 कविता आ 8 गीत संकलित अछि । सर्वश्रेष्ठ कृतिक रूप मे एहि पोथीकैँ साहित्य अकादमी 1968 मे पुरस्कृत कयलक । सम्पूर्ण सामाजिक रूढ़ि जड़ता ओ पाखंडक प्रतीक अछि ई संग्रह । नगर सभ्यताक क्षरण ओ ध्वंसपर तीव्रतम कुठाराघात करैत छैक । जनता जनार्दनक सुधि लैत अछि। कल-कारखानाक विशाल श्रमशक्ति धरि, हरवाह-चरवाह सँ खेत खरिहान धरि ओ किसान आंदोलन सँ सत्ता परिवर्त्तन धरि जोरदार ढ़ंग सँ अजमाइश करैत अछि । सादगी, सरलता उन्मुक्ता हिनक प्रकृति धर्म छलनि। प्रवंचित, प्रताड़ित विशाल जनमासक प्रति पूर्णतया समर्पित छलाह । ठेठ मिथिलाक ठाठ ओ गाम-घरक सौरभ-सुवास देखय मे अबैछ । मुक्त छन्दक महान शिल्पकार छलाह यात्रीजी ।

1946 मे यात्रीजीक 'पारो' उपन्यास प्रकाशित भेल छल । विवाह वैषम्यक धुरी पर ई उपन्यास नारीक अवचेतन मोनक कुंठा, अवसाद आ विह्लताक बन्हेज-वर्जनाक विरूद्ध मुखर स्वर अछि । एहि मे ममिऔत-पिसिऔत

भाइ-बहिन बीच वर्जित आकर्षणक उल्लेख अछि । दुनूक हृदय मे संचरित मधुरभाव निश्चित रूप सँ ध्वनित भेल छैक । पन्द्रह वर्षक पारोक विवाह पैंतालीस वर्षक वर सँ भऽ जयबाक कारण ओकर समस्त आशा ओ अभिलाषा ध्वस्त भऽ जाइत छैक । स्पष्ट अछि जे बीसम शताब्दी मे मिथिला मे अनमेल विवाहक खूब प्रचलन छल । 1954 मे यात्रीजीक दोसर उपन्यास 'नवतुरिया'क प्रकाशन भेल । सामाजिक कतिपय रूढ़िवादी आ कुरीति पर जोरदार प्रहार छैक । पण्डित खोखाइ झा अपन पुत्रीक विवाह वृद्ध वर सँ कयलनि आ हिनका अपन पुत्रीक दाम्पत्य जीवन सँ कोनो सरोकार नहि छलनि । पांजिक महत्व सर्वाधिक छल । ओहि समय मे एहि तरहक वैवाहिक संबंध मिथिला मे देखल जाइछ । बाल-विधवाक संख्या मे बढ़ोतरी छल । एहि सामाजिक समस्याकैँ मूल मे राखि यात्रीजी नवतुरिया उपन्यासक माध्यम सँ सामाजिक जागृतिक लेल नवतुरिया वर्गक नवीन सोच ओ नव परम्परा कैँ प्रतिबिम्बित कयने छथि । सामाजिक चेतनाक जागृति करबाक सफल प्रयास छलनि । यात्रीजीक तेसर उपन्यास 'बलचनमा'क प्रकाशन मिथिला सांस्कृतिक परिषद् कोलकाता द्वारा भेल छल । किसान आंदोलनक उर्जा सँ भरल-पूरल अछि ई उपन्यास । ओहि समयक समान्तवादी युगक वर्णन ओ समाज मे एकर प्रति आक्रोशक प्रस्फुटन छैक । निर्दयी जमींदार द्वारा शोषित वर्गक कुकृत्यकैँ समक्ष आनल गेल छैक । बलचनमाक विद्रोही स्वर शोषित समाजक लेल क्रान्तिक चिनगारी बनैत अछि जे सुसुप्त ज्वालामुखी जकाँ समुचित समाजक प्रतीक्षा मे अछि । यात्रीजी बलचनमा कैँ सर्वहारा समाजक प्रतिनिधिक रूप मे सामाजिक चेतनाक अलख जगाए सामन्तवादी सोचक उन्मूलन करबाक सफल प्रयास कयने छथि ।

ग्राम्य-जीवनक विरल व्याख्याता यात्रीजीकैँ गाम नहि छोड़लकनि । मधुश्रावणी आ कोजागरा, माछ आ मखान, कोदरिकट्टा मेघ, कुतरूमक चटनी, जितिया पावनि, डोमा बंबई, सलच्छा सिहिं, ललमुहा रोहू, रूद्ररूपा कोसिकिक धार आ सिन्दूर तिलकित भाल हिनका बराबरि आकृष्ट करैत

रहलनि । जेठक दुपहरिया, आसिनक इजोरिया, पाकल कटहर, बाँसक छाहरि, कदमक फूल, कोजागराक मखान, दीदिक इनारक पानि, देवउठान आ नबान, गमकैत मेंही धान हिनक काव्यक विषय बनैत रहल । अपन परम्परा मे मज्जित, जन्मभूमिक प्रति सहज अनुरक्ति सँ लबालब यात्रीजी अपन लोक-वेदक आधि-व्याधि ओ उत्पीड़नक बड्ड कलात्मक आख्यान देलनि । यात्रीजीक रचना जीवन संघर्षक गाथा अछि । समाज मे व्याप्त बाधा सँ लड़बाक प्रयास, सामंतवाद आ साम्राज्यवादक विरूद्ध युद्धक आह्वानकारी उद्घोष अछि । ई क्रांतिधर्मिता ओढ़ल नहि छलनि, हिनकर स्वयं केँ भोगल यथार्थ छल जे राष्ट्र मे क्रांतिक संचार करैत छल । भोगल यथार्थक महान चित्रकार छलाह यात्रीजी।

यात्रीजी बहु-भाषाविद् छलाह । अन्य भाषा मे रचनाक पथार लागल छनि। तहिना हिनक रचनाक अनुवाद देशक अनेको भाषा मे भेल छलनि । साहित्य अकादमीक महत्तर सदस्य, मध्यप्रदेश सरकारक मैथिलीशरण गुप्त सम्मान उत्तरप्रदेश सरकारक भारत-भारती, बिहार सरकारक राजेन्द्र पुरस्कार भेटल छलनि । क्रांतिक अमर दीपशिखा कविवर यात्रीजी 25 नवंबर 1998 केर प्रभात वेला मे अनन्त पथ पर महाप्रयाण कयलनि । प्रेरणाक अजस्त्र स्रोत, युग-युग धरि लोक चेतना मे रचल-बसल रहताह । ***'कीर्तिर्यस्यसजीवति'***-हिनक यशः शरीर अजर अमर रहत ।



मिथिला राज्यक प्रथम उद्घोषक- डा. लक्ष्मण झा

मिथिलाक गौरवमय इतिहास मे महामानवक अवतरणक परंपरा अछि । राजर्षि, महर्षि, दार्शनिक, साधक, भक्त, कवि, लेखक-एक स' एक विलक्षण प्रतिभाक व्यक्ति होइत आयल छथि । परंच राजनैतिक क्षमताक एतय अभाव ज' नहियो, त' विरलता अवश्य रहल अछि । मिथिलाक लोक त' परमार्थी होयताह-संसार स' निर्लिप्त आ नहि त' घोर सांसारिक-परिवार मे लिप्त । समाजक विस्तृत परिधि केँ व्याप्त कयनिहार मिथिलाक राजनैतिक दिशाकेँ गति-बोध देनिहारक शृंखला एतय नगण्य । बीसम शताब्दीक एहि तिक्तता-रिक्ता केँ दूर कयनिहार समाजसेवी चिंतक राजनैतिक पुरुष मे डाक्टर लक्ष्मण झाक नाम अग्रगण्य अछि ।

एहि महामानवक जन्म दरभंगा स' 60 किलोमीटर दूर कमलाक कछेर मे बसल एहि जिलाक सुदूर पूर्वी क्षेत्रक ग्राम रसियारी मे दिसंबर 1916 मे भेल छलनि । पिताक पैघ दबंग परिवार-सात भाइक भैयारी । हिनक पिताक नाम छल कारी झा, जनिका तीन बालक । एहिमे सब स' छोट लखनजी-लक्ष्मण झा । पिता अशिक्षित । लखनजी गाम मे गाय चरबैत छलाह आ शोभालाल दासजी स' पढ़ैत छलाह । लोअर प्राइमरी धरि हिनके स' पढ़लनि । एकर बाद मधेपुर हाई स्कूल मे नाम लिखौलनि । तखन ओहि स्कूल मे दासजी हेडमास्टर छलाह, बाद मे मिथिलाक अद्वितीय विद्वान रमानाथ झाजी हेडमास्टर भेल रहथि । 1937 मे मैट्रिक परीक्षा मे प्रथम श्रेणी-जे ओहि समय मे विरले केँ होइत छल मे उत्तीर्ण भेलाह आ हिनका दसटा स्कालरशिप भेटल छलनि। डा. झाक किशोरावस्थाक संबंध मे जे किछु ज्ञात भ' सकल से हुनक

बालसखा ओही गामक श्री कमलाकांत मिश्र स' जेबिहार प्रशासनिक सेवा स' अवकाश प्राप्त क' संप्रति पटने मे रहैत छथि ।

मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक बाद लखनजी टी. एन. जे. कॉलेज, भागलपुर मे नाम लिखौलनि एवं ओतहि स' आइ. ए. परीक्षा पास कयलनि।

बी. ए. मे पटना कॉलेज मे नाम लिखौलनि संस्कृत मे प्रतिष्ठा । बी. ए. आनर्स मे अपना विषय मे सर्वप्रथमक संगहि संपूर्ण विश्वविद्यालयक ओहि वर्षक सब विषयक परीक्षा मे सबस' बेसी अंक हिनके भेटल रहनि । एम. ए. (संस्कृत) मे नाम लिखौलनि, किंतु जखन एम. ए. छठम वर्ष मे रहथि तखनहि 1942क स्वतंत्रता संग्राम मे सक्रिय भ' गेलाह एवं आंदोलनक क्रम मे दरभंगा जेल मे राखि देल गेलाह । एम. ए. परीक्षा पूरा नहि क' सकलाह।

1943 मे जेल स' छुटलाक बाद बिहार विभूति अनुग्रह नारायण सिंहक संपर्क मे आबि गेलाह । हिनक प्रतिभा स' प्रभावित भ' ओ हिनका विलायत अध्ययन हेतु पठयबाक पूर्ण प्रयास कयलनि । राज्य सरकार स' ओतय जयबाक खर्चाक व्यवस्था एवं लंदन विश्वविद्यालय मे पी-एच.डी. करबाक जोगार क' देलथिन । 1942क आंदोलन मे सक्रिय भ' जयबाक कारण डा. झा एम. ए. नहि क' सकल छलाह । नियम केँ शिथिलक' अनुग्रह बाबू हिनका विश्वविद्यालय स' अग्रिम अनुमति दिया देलथिन जे अनुमति अपना विश्वविद्यालय स' एखन धरि इतिहास मे मात्र डा. लक्ष्मण झा केँ भेटल छनि। 1945 मे लंदन विश्वविद्यालय मे पी. एच-डी.क अध्ययन हेतु चल गेलाह। हिनक शोधक विषय छल 'मिथिला एंड मगध' 1948 मे पी. एच-डी.क उपाधि प्राप्त क' स्वदेश आपस आबि गेलाह ।

राज्य सरकार हिनका विदेश जयबाक हेतु जे छात्रवृत्ति देने छल ओहिमे एक शर्त छल जे देश लौटलाक बाद राज्य सरकारक नोकरी मे योगदान करय पड़त । ओहि समय बिहार सरकार मे शिक्षा सचिव जे. सी. माथुर छलाह । हिनका पटना पठा देल गेल । के. पी. जायसवाल रिसर्च इंस्टीच्यूट, जे राज्य

सरकार द्वारा तखन स्थापित भेल छल, ओहि मे सर्वप्रथम रिसर्च पदाधिकारी नियुक्त कयल गेलाह । अल्टेकर एहि संस्थाक अवैतनिक निदेशक सेहो छलाह। हिनका अल्टेकर महोदय स' नहि पटलनि । गाम चल गेलाह । हिनक राज्य सरकारक सेवाक एतहि अंत भ' गेल ।

1928 ई. मे जखन मात्र बारह वर्षक रहथि, भारतीय कांग्रेस पार्टीक सक्रिय सदस्य भ' गेलाह । कांग्रेसक 'डेलीगेट'क उम्मीदवार भेलाह, किंतु अपना हेतु कोनो प्रचार नहि कयलनि । किछु मित्रक सहयोग स' डेलीगेटक चुनाव मे विजयी भेलाह।

ई मिथिला मैथिलीक विकासक हेतु सतत चिंतित रहैत छलाह । जखन लंदन मे पढ़ैत छलाह ओहि समय ब्रिटेन मे कृष्ण मेनन भारत सरकारक अधिकारी छलाह । जवाहरलाल नेहरू ओतय गेल रहथि । डा. झा नेहरूक समक्ष मिथिला ओ कोसीक संकट केँ कठोर शब्द मे प्रस्तुत कयलनि । नेहरू नाराज भ' गेलाह एवं कृष्ण मेननक मार्फत हिनका विरूद्ध बिहार सरकारकेँ नालिश कयल गेल। 1943क मध्य मे (प्रायः जूनमे) जवाहरलाल नेहरू पटना आयल छलाह । कोसी क्षेत्रक कांग्रेसी कार्यकर्त्ता हिनका नेतृत्व मे कोसी संकटक प्रति स्मारपत्र देलक । नेहरू सहानुभूतिपूर्ण उत्तर देल एवं आश्वासन देल जे शासन मे अयला पर अवश्य एकरा पूरा करब । मुदा शासन मे अयला पर कांग्रेसी नेता लोकनि मिथिलाक संकट केँ दूर करबाक कोनो प्रयास नहि कयल । कांग्रेसी लोकनि स' हिनका नहि पटलनि । बाद मे रामनंदन मिश्रक प्रयास स' समाजवादी पाटी में सक्रिय भेलाह । एतय हिनका जयप्रकाश नारायण, आचार्य कृपलानी, सूरज नारायण सिंह, कर्पूरी ठाकुर आदि समाजवादी नेता स' घनिष्ठ संपर्क भेलनि । सुनल अछि जे ई आजाद दस्ताक सक्रिय कार्यकर्त्ता छलाह । राज्य सरकार द्वारा देल गेल नौकरी–के. पी. जायसवाल इन्स्टीट्यूट वला केँ पदत्याग कयलनि एवं 1952क संसदक पहिल चुनाव मे समाजवादी पार्टीक टिकट पर दरभंगा संसदीय क्षेत्र स' उम्मीदवार भेलाह । मुदा कांग्रेसी उम्मीदवार अनिरूद्ध सिंह स' हारि गेलाह ।

1 जनवरी 1943 मे दरभंगा जेल मे मिथिला इतिहास परिषद्‌क स्थापना हिनकर प्रयास स' भेल छल । एकर अध्यक्ष प्रो. बलदेव नारायण सिंह, मंत्री रामेश्वर प्रसाद सिंह तथा संयुक्त मंत्री छलाह लक्ष्मण झा । एहि परिषद्‌क उद्देश्य छल मिथिलाक संस्कृति एवं सभ्यताक रक्षार्थ मिथिलाक सुसंबद्ध इतिहास तैयार करब । पुनः हिनके प्रयास स' जनवरी 1947 मे मिथिला यूनिवर्सिटी कमेटी बनल जकर अध्यक्ष धरणीधर बाबू, उपाध्यक्ष गंगाधर मिश्र एवं हरिनाथ मिश्र सचिव बनायल गेलाह । मिथिला मे शिक्षाक विकासक हेतु पांच टा विश्वविद्यालय निर्माणक योजना सरकारक समक्ष 1952 मे प्रस्तुत कयने रहथि ।

1951क प्रारंभ मे डा. लक्ष्मण झा पटना स्थित प्रगतिशील मैथिली लोकनिक संग मिथिलाक साहित्य, संगीत, कला ओ विज्ञानक उन्नतिक हेतु 'मिथिला मंडल'क स्थापना कयलनि । सचिव छलाह डा. लक्ष्मीनारायण सिंह। अक्टूबर 1951कैं मिथिला मंडलक प्रधान कार्यालय पटना स' दरभंगा स्थानांतरित कयल गेल । मिथिलाक प्रत्येक प्रमुख स्थान मे मंडलक शाखा कार्यालय बनाओल गेल । एकर कार्यालय पटना, कलकत्ता, कटक तथा बनारस मे सेहो स्थापित भेल ।

27 जुलाइ 1952कैं डा. लक्ष्मण झाक अध्यक्षता मे दरभंगा नगर भवन मे आयोजित दरभंगा मजदूर सम्मेलन दू गोट प्रस्ताव मैथिली मे स्वीकृत कयल। प्रथम प्रस्ताव छल भाषाक आधार पर मिथिला तथा अन्य प्रांतक निर्माण । एतहि स' प्रारंभ होइछ मिथिला राज्यक आंदोलन एवं मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु प्रथम राजनैतिक प्रयास । अन्य प्रस्ताव छल शिक्षा संबंधी जाहिमे सरकार स' आग्रह कयल गेल छल जे–

(1) हाई स्कूल एवं विश्वविद्यालय शिक्षाक अनिवार्य विषय स' अंग्रेजीकैं अविलंब हटा देल जाय ।

(2) शिक्षाक आधार मैथिली हो;

(3) हाई स्कूलक पाठ्य विषय मे ऐच्छिक विषयक ग्रुप विभाजन हटा देल जाय;

(4) प्रारंभिक शिक्षा 16 वर्षक वयस धरि अनिवार्य हो;

(5) दरभंगा मे शीघ्रातिशीघ्र विश्वविद्यालय स्थापित हो ।

मैथिली महासभा, दरभंगा जे ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ कैं मैथिल कहैत छलाह एवं जकर सदस्यता मात्र एहि वर्णक हेतु छल तकर पुरजोर विरोध कयलनि । कारण मिथिला मे रहनिहार सब जाति वर्णक लोक मैथिल छथि। मैथिल महासभा 1951 मे सर्वप्रथम मिथिला राज्यक मांग कयलक–महाराजा दरभंगाक नेतृत्व मे जे स्वतः प्रस्तावक संगे मरि गेल । जमींदारी प्रथाक अंतक आशंका स' चिंतित भ' अपन नेतृत्व बरकरार रखबाक हेतु ई महराजी प्रस्ताव छल । अपन नेतृत्व रखबाक हेतु 1952क संसदीय चुनाव मे दरभंगा महाराज ठाढ़ सेहो भेल रहथि मुदा जमानत जब्त भ' गेलनि ।

डा. झा पुनः 26 जुलाइ 1953 कैं दरभंगा नगर भवन मे मिथिला राज्य आंदोलन कैं सफल बनयबाक हेतु विशेष सम्मेलन कयलनि । एहिमे मिथिला राज्यक स्थापनाक ओ मैथिलीक माध्यम स' शिक्षाक प्रस्ताव छल । 22 नवंबर 1953कैं हिनक नेतृत्व मे 'कलकत्ता मैथिली संघ' एक पैघ प्रदर्शन मिथिला राज्यक निर्माणक हेतु कयने छल जे आधा मील लंबा छल आ अंत मे कलकत्ताक गिरीश पार्क मे सभा भेल । 15000 स' बेसी मैथिल एहिमे भाग लेने छलाह। कलकत्ता ओ बाहरक प्रेस मिथिला राज्य आंदोलन कैं विस्तृत रूप स' प्रचारित कयलक । 1953 मे पुनः कलकत्ताक कालेज स्ट्रीटक एक रेस्ट्रां मे ई कलकत्ताक प्रेस कैं संबोधित कयलनि जाहि मे मिथिला, एकर भौगोलिक स्थिति, भाषा, लिपि, साहित्य ओ आर्थिक स्थितिक विस्तृत विवरण प्रस्तुत कयलनि । प्रेसवला हिनका स' प्रश्न कयलनि जे जखन अहाँक लोक एतेक संकट मे छथि तखन पटना ओ दिल्ली मे अहाँ लोकनिक प्रतिनिधि (विधानसभा ओ संसद) जोरदार मांग किएक नहि करैत छथि ? हिनक उत्तर छल जे भविष्य मे करताह एहन आशा करैत छी ।

मिथिला राज्य आंदोलन जोर पकड़लक । अखिल भारतीय कांग्रेस पार्टीक अधिवेशन जनवरी 1952 मे कल्याणी (पश्चिम बंगाल) मे आहूत छल । किछु कांग्रेसी जानकीनंदन सिंहक नेतृत्व मे एहि आंदोलन स' प्रभावित भ' 22 जनवरी 1954कैं कांग्रेस अधिवेशन मे मिथिला राज्य निर्माणक मांग करय जा रहल छलाह जाहि मे 56 गोटे आसन सोल रेलवे स्टेशन पर बिहार सरकारक अनुरोध पर बंगाल सरकारक पुलिस द्वारा गिरफ्तार कयल गेलाह । एकर प्रतिक्रिया मे मिथिलाक सब शहर ओ गाम, कलकत्ता ओ पटना मे जन आंदोलनक रूप ल' लेलक । भाषाधार प्रांतक मांग सबल भेल ।

भाषाधार प्रांतक निर्माण भारतीय संसद मे सरकार स्वीकार कयलक । सैयद फजल अलीक अध्यक्षता मे 22 दिसंबर 1953कैं सरकार भाषाधार प्रांतक निर्माण आयोग गठन कयलक जाहिमे हृदयनाथ कुंजरू एवं के. एम. पनिक्कर सदस्य नियुक्त भेल छलाह । 26 फरवरी 1954कैं पटना विश्वविद्यालय अधिवेशन आयोजित छल जाहि मे के. एम. पनिक्कर अधिवेशन कैं संबोधित करय आयल छलाह । मिथिला राज्य निर्माणक ओ जोरदार विरोध कयने छलाह।

डा. झा भाषाधार राज्य निर्माण समितिकैं मिथिला राज्यक निर्माण हेतु स्मारपत्र देल । किन्तु पटना ओ दिल्ली सरकारक षड्यंत्र सफल भेल एवं समिति मिथिला राज्यक निर्माणकैं अस्वीकृत क' देलक । ई भाषाधार प्रांतक समर्थक छलाह एवं 22 भाषाक हेतु 22 राज्यक सिफारिश कयने छलाह । 1931क जनगणनाक आधार पर मैथिली भाषा-भाषीक संख्या सातम स्थान पर छल मुदा एकरा संविधानक आठम अनुसूची मे शामिल नहि कयल गेल, तकर विरोध कयने छलाह । मैथिली भाषीकैं हिंदीक अपभ्रंश मानि लेल गेल छल। एकरा ओ राजनैतिक चालि कहैत छलाह ।

मिथिला राज्य आंदोलन कैं व्यापक बनयबाक हेतु डा. झा किछु पोथी लिखलनि जाहि मे 'मिथिला ए यूनियन रिपब्लिक' 1952 मे अंग्रेजी मे प्रकाशित भेल । प्रकाशक छलाह डा. लक्ष्मीनारायण सिंह, सचिव, मिथिला मंडल, दरभंगा एवं चंद्रिका प्रेस मे छपल छल । एकर मुद्रक छलाह जयकृष्ण

दास । एहि पुस्तक मे सात अध्याय अछि । मिथिला राज्यक संविधान ओ देशक नक्शा सेहो अछि । एहि वर्ष ओ मैथिली मे 'मिथिला भाषा' स्वयं लिखलनि एवं डा. डा. लक्ष्मीनारायण सिंह 'मैथिलीये मे मिथिलाक आर्थिक स्थिति' लिखलनि । 1952 मे डा. लक्ष्मीनारायण सिंह 'मिथिला मे शिक्षा' लिखल । एहि मे 12 अध्याय अछि मिथिलाक भाषा, सरकारक शिक्षा नीति, परीक्षा पद्धति, विश्वविद्यालय आंदोलन आदिक आंकड़ा संग विवरण ।

1953 मे 'मिथिला इन इंडिया' अंग्रेजी मे लिखल जे सुधाकर प्रेस, दरभंगा मे छपल । एहिमे मात्र तीन अध्याय अछि । 1954 मे 'मिथिला ए सौवरेन रिपब्लिक' अंग्रेजी मे लिखलनि । 1955 मे अंग्रेजी मे 'मिथिला विल राइज' लिखलनि । एहि मे 20-21 पृष्ठ मे लिखैत छथि जे ब्राह्मणक व्यवहार एतयक शूद्रक प्रति ठीक नहि रहल । ब्राह्मणक भाषा मैथिली नहि छल, संस्कृत छल । मैथिली शूद्र ओ महिला बजैत छलीह । मैथिलीकैं एत'क संस्कृत पंडित समाज गमई भाषा कहैत छलाह । शूद्र कैं ब्राह्मणक चंगुल स' निकलबाक प्रयास करक चाही मुदा राज्य आंदोलन ओ अपन आर्थिक विकासक हेतु एकजुट भ' संग्राम करक चाही । स्वतंत्र मिथिला एकसरे कोना चलायत । एकर उत्तर छल जे की स्वतंत्र भारत अपनाकैं एकसरे चला रहल अछि-राष्ट्रमंडल, संयुक्त राष्ट्रसंघ, यूनेस्को, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्वबैंक आदि स' आर्थिक सहायता लैत अछि । जहिना स्वीटजरलैंड, हालैंड, बेलजियम, डेनमार्क, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड आदि छोट राज्य अपन व्यवस्थाक' रहल अछि ओहि स' उत्तम ढ़ंग स' मिथिला अपन व्यवस्था करत । आधुनिक युग मे आत्मनिर्भरता ने संभव छैक ने अपेक्षित ।

मिथिलांचलक उत्तरी सीमाक बंटवारा अंग्रेज जो नेपालक गोरखा लोकनि अपन सुविधानुसार कयलनि । दुनूक बीच अनेक संघर्ष भेल आ अंत मे दिसंबर 1815 मे सुगौलीक समझौत भेल जे दिसंबर 1816 मे लागू भेल । दूनू देशक सीमा जे पहिने नदी पहाड़ स' बांटल जाइत छल से इंटाक पाया द्वारा बंटवारा भेल । एहि क्षेत्रक मिथिलावासीक घर-दलान पायाक एहि कात भारत मे आ खेत-पथार नेपाल मे पड़ल । कतेकोक घर द्वारि नेपाल मे आ

खेत-पथार भारत मे । ई भू-भाग खूब उपजाऊ अछि एवं एहि अंचलक विकास मे पाया आंदोलन शुरू कयलनि । यात्रा सुरसंड स' प्रारंभ भेल आ जयनगर मे समाप्त भेल । पायाक दुनू भागक गाम मे जन-आंदोलन चलायल गेल । एहि आंदोलन मे एहि पंक्तिक लेखक सेहो सम्मिलित भेल छलाह । एकर अध्ययन कयलाक बाद 1955 मे डा. साहेब 'द नार्दर्न बोर्डर' अंग्रेजी मे लिखलनि । मिथिलाक सर्वांगीण विकास बिना नेपालक अधीन तराइ भूभागकेँ मुक्ति करौने संभव नहि । ई भूभाग सुगौली संधिक पूर्व कहियो नेपालक अधीन नहि छल ।

1956 मे लोकसभा चुनावक समय डा. साहेब तीन पोथी, 'द टीचर्स इन मिथिला', 'यूनिवर्सिटी फॉर मिथिला' एवं 'द वोटर्स इन मिथिला' लिखलनि। एहि मे मैथिली मतदाताकेँ सब तरहें सचेत कयलनि जाहि स' सही प्रतिनिधित्व भ' सकय ।

हिनके प्रेरणा स' 1955 मे प्रो. विद्यापति सिंह 'मिथिलाक उद्योग ओ व्यापार' मैथिली मे लिखलनि । एहि पोथीक प्रस्तावना मे डा. साहेब लिखैत छथि–मिथिला कें ने लोकक अभाव अछि ने प्राकृतिक साधन–भूमि, जल, वन, पर्वत आदिक । अभाव अछि केवल व्यवस्थाक । एकरा सब मैथिल-मिथिलावासी पढ़ू, अपन बलक ओ दुर्दिनक ध्यान करु तथा उद्धार लेल कटिबद्ध होउ । 1957 मे दोसर पोथी डा. लक्ष्मीनारायण सिंह लिखलनि *'वेल्थ ऑफ मिथिला'।*

सितंबर 1959 मे 'मिथिला' साप्ताहिक मैथिली पत्रिका दरभंगा स' प्रकाशित करय लगलाह । संपादक बनायल गेल छलाह श्री भोलानाथ मिश्र एवं ललिता प्रेस दरभंगा स' मुद्रित होइत छल । बड्ड उग्र पत्र छल। नहि चलि सकल । बंद भ' गेल । 1948 मे 'लंदन के पत्र' हिंदी मे सेहो प्रकाशित कयने छलाह ।

डा. साहेब सतत अध्ययन करैत छलाह । विषय बहुआयामी छल । करीब पचास स' ऊपर साठिक लगभग पोथी अंग्रेजी, मैथिली, संस्कृत, मिथिलाक्षर

मे लिखलनि । द्रव्याभावक कारण अप्रकाशित रहल । एहि पोथी सबकेँ राष्ट्रीय ग्रंथ गृह, दिल्लीकेँ देबाक योजना छल ।

डा. साहेब लंदन विश्वविद्यालय स' शिक्षा समाप्तिक बाद स्वदेश फिरबाक तैयारी करय लगलाह । हिनक प्रतिभा स' प्रभावित इष्ट-मित्र हिनक जीविकाक व्यवस्था करय लगलाह । ओतयक सुख-सुविधा हिनका आकर्षित नहि क' सकल । अपन हितैषी स' कहल जे अहाँक देश मे जे सब सुविधा अछि से हमरा अपना देश मे बनयबाक अछि । कोसी-कमला-बलानक पीड़ाकेँ नहि बिसरने छलाह । पटना अयला पर राज्य सरकारक नोकरी करबाक हेतु बाध्य कयल गेल । नहि क' सकलाह । 1951 मे काशी प्रसाद जायसवाल इंस्टीच्यूटक नोकरी स' त्यागपत्र द' संसद सदस्यताक हेतु समाजवादी पार्टीक उम्मीदवार भेलाह । विजयी नहि भ' सकलाह । 1952 मे दरभंगाक मिथिला कालेज मे अध्यापन करय लगलाह । छोड़ि देलनि । हिनक विद्वता स' प्रभावित भ' दरभंगाक महराजाधिराज इंडियन नेशन अखबारक हेतु लेख देबाक आग्रह कयलनि । मास मे दू गोट लेख छपय लागल । ईहो व्यवस्था बेसी दिन नहि चलल । 1976-77 मे जयप्रकाश नारायणक आग्रह पर एवं तत्कालीन मुख्यमंत्री कर्पूरी ठाकुरक सत्यप्रयास स' मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपतिक आसन ग्रहण कयलनि । मात्र एक टाका मासिक वेतन लेब स्वीकार कयलनि । आधुनिक माहौल मे कुलपतिक काज हिनका सन व्यक्तिक हेतु संभव नहि । त्यागपत्र द' देलनि ।

डा. साहेब राज्य सरकारक छात्रवृत्ति स' विदेश पढ़य गेल छलाह । जकर मुख्य शर्त छल राज्य सरकारक नोकरी । से नहि क' सकलाह । कांग्रेसक राज्य छल । पार्टी मे सेहो नहि रहलाह । सरकार अपन पाई हेतु मोकदमा कयलक । हिनक हिस्साक गामक जमीनक जब्ती-कुर्की भेल । मुदा सरकार एकर अनुपालन नहि कयलक ।

कलकत्ताक महाजाति सदन बनि रहल छल । ओहिमे अखिल भारतीय लेखक सम्मेलन आयोजित कयल गेल छल । मैथिली लेखकक नाम नहि छल। मिथिले संघक प्रयास स' मैथिली लेखकक नाम जोड़ल गेल एवं डा.

लक्ष्मण झाकेँ निमंत्रण देल गेलनि । जवाहरलाल नेहरू आयल छलाह । प्रत्येक लेखक केँ तीन मिनट समय देल गेल । डा. झा अपन सब बात अढ़ाइ मिनट मे रखलनि जकर समुचित उत्तर देबाक हेतु नेहरू बाध्य भ' गेल रहथि ।

मिथिलाक्षर लिखबाक हेतु बहुत जोर दैत छलाह । संयुक्ताक्षरवला एहि लिपि मे लिखबा मे किछु कठिनता छैक । एकरा सुगम बनयबाक हेतु हलंत चिह्नक प्रयोग क'क' संयुक्ताक्षर लिखबाक प्रचार आवश्यक बुझि तदनुसार मिथिलाक्षर वर्णमाला केँ प्रकाशित कयलनि जे छात्र लोकनिक बीच खूब प्रचारित भेल ।

हिनके प्रेरणा ओ मार्गदर्शन स' डा. प्रबोधनारायण सिंह, डा. अणिमा सिंह, बाबू साहेब चौधरी, देवनारायण झा एवं कलकत्ताक समस्त मैथिली भाषीक अथक प्रयास स' मैथिली केँ साहित्य अकादमी मे स्थान भेटि सकल । प्रबोध बाबू नव गाड़ी खरीदने छलाह । हिनके गाड़ी स' देवघर स' जे अभियान चलल से मिथिलांचलक प्रत्येक गाम गेल एवं ओतय स' पोस्टकार्ड द्वारा दिल्लीक अधिकारी केँ एहि हेतु मांग कयलक ।

डा. सुनीति कुमार चटर्जी अध्यक्षता मे 'संस्कृत आयोग' दरभंगा गेल छलाह । एकर सदस्य सब ओतयक संस्कृत पंडितक संग अधलाह व्यवहार कयने छल। डाक्टर साहेब केँ ई सूचना भेटि गेल छलनि । एहि कमीशनक नागरिक अभिनंदन लक्ष्मीश्वर पब्लिक लाइब्रेरी मे सायंकाल आयोजित भेल एवं अध्यक्षता क' रहल छलाह पं. गिरींद्र मोहन मिश्र । धन्यवाद प्रस्ताव डा. लक्ष्मण झा कयलनि । अपन भाषण डाक्टर साहेब अंग्रेजी मे देल एवं बंगाली अधिकारी लोकनि द्वारा मैथिली भाषी केँ कोन तरहें बर्ताव भेल छल, तकर उल्लेख कयल । सुनीति कुमार चटर्जी किछु उत्तेजित भेलाह, शांत कयल गेलाह । एहि घोंघाउज मे केयो व्यक्ति पाछू स' हिंदी मे उत्तेजित भेलाह, शांत कयल गेलाह । एहि घोंघाउज मे क्यो व्यक्ति पाछू स' हिंदी मे बजलाह जे ई जतय जाइत छथि अहिना करैत छथि । सभा भंग भेलाक बाद जोर स' गरजला जे के लगटवा छल जे अपन भाषा मे गारि नहि द' उर्दू मे (हिंदी) मे गारि देलक। अपन भाषाक प्रति एतेक साकांक्ष रहैत छलाह ।

हम 1975क दिसंबर मे कलकत्ता स' पटना आबि गेल छलहुँ । बोरिंग केनाल रोड मे निवास-स्थान छल । राज्यक सब विश्वविद्यालय कुलपतिक मीटिंग पटना वीमेंस कालेजक सभागार मे आयोजित छल । डा. साहेब ओहि बेर परिसदन मे टिकल छलाह । भोरका जलखै हमरे निवासस्थान पर कयलनि। अपनहि संगे विश्वविद्यालयक गाड़ी स' हमरा ल' क' मीटिंग मे गेलाह। हम गाड़ी स' अपन कार्यालय चल गेलहुँ । किंतु सांझ मे रातिक भोजन ल' क' जखन परिसदन मे पहुँचलहुँ, बिगड़ि गेलाह । कारण ड्राइवर विलम्ब स' गाड़ी ल'क' पहुँचलनि । हम पूछि बैसलियनि मीटिंग नहि भेलै? चोट्टहि कहलनि–उच्च शिक्षा निदेशक जाहि तरहें मुँह पर धुआं फेकय लगलाह, मीटिंग की करितहुँ । काल्हि स' छात्र ओ प्राध्यापक लोकनि विश्वविद्यालय मे यैह व्यवहार करय लगताह । केहन अनुशासन माननिहार छलाह, एहि स' दृष्टिगोचर होइछ।

दोसर घटना । जमींदारी प्रथा के घोर विरोधी छलाह । 14 वर्षक अवस्था मे जमींदारक अमला लोकनिक अत्याचारक खिलाफ घोर आंदोलन कयने छलाह । कुलपति भेला पर सर्वप्रथम काज कयलनि विश्वविद्यालय परिसर जे पैघ छहर देबाली स' घेरल छल ओकरा तोड़बाय लोहाक छड़ स' घेरबोलनि। कारण जखन राज दरभंगाक जमींदारी छल ओहि परिसर मे सर्व साधागणक प्रवेश नहि छल लोक सब ट्रेन स' आकि बाहर स' उचकि क' ओहि राजभवन सबकेँ देखबाक प्रयास करैत छल । तें सर्वसाधारणक हेतु एकरा खोलि देल गेल एवं दृष्टिगोचरक देल गेल ।

डा. साहेब गामक स्कूल मे जखन पढ़ैत छलाह, वेश-भूषा बहुत साधारण धोती, देह पर चादरि, पैर मे जूता नहि । धोती मे नील नहि देल, लोहा नहि देल । यैह परिधान अंत तक रहल । बाद मे पैर मे खड़ांव ओ जूता रहय लागल । भोजन बड्ड साधारण । कूकर मे लकड़ीक कोइला पर बनैत छल। सब किछु उसिनल । शाकाहारी भोजन । 1959-60 मे मिथिला अंचल मे अन्न-संकट भेल । सांझुक भोजन बंद क' देलनि । उच्च रक्तचापक रोगी छलाह ।

पटना स' दरभंगा गेला पर लहेरियासराय मे बाबू चंद्रधारी सिंहक 'चंद्र निकेतन' मे रहैत छलाह । बाद मे कैदराबाद एक भाड़ाक मकान मे, तकर बाद बेला चौक पर एक प्राध्यापकक मकान मे । ई प्राध्यापक एहि सरस्वती पुत्रक संग अमानुषिक व्यवहार कयलनि । हिनक विशाल पुस्तकालय कें वेलाक सड़क पर राखि देलनि । तखन पूर्व विधायक प्रेमचंद्र मिश्रक निवास स्थान, सारा मोहनपुर मे रहय लगलाह । गाम स' अबरजात बराबरि छलनि । अंत मे गाम चल गेलाह एवं अंतिम समय ओतहि बीतलनि ।

डा. साहेब शिखा-सूत्र नहि रखने छलाह । बाल ब्रह्मचारी रहथि । एहि संबंध मे एक किंवदंती अछि । जखन गामेक स्कूल मे पढ़ैत छलाह हिनक विवाह रसियारीक बगलक गाम मे ठीक कयल गेलनि । बरियाती दल ल' कें बिदा भेलाह, रास्ता मे पेट दर्द आदि बहाना कयलनि, खूब मारि लगलनि । बरियाती बरक संग गाम घुरि गेलाह । एकर बाद परिवारक दिस स' बियाहक कोनो प्रस्ताव नहि आयल ।

आधुनिक नेताक कोनो गुण डा. साहेब मे नहि छलनि । बेला, दरभंगाक डेरा पर पुछलनि--अहाँ माटिक बर्तन कीनने छी ? हम कहल--कीनने नहि छी, कीनव देखने छी । की देखल ? उत्तर छल--लोक हाथ स' बजाक' कीनैत छथि । यैह व्यवहार हिनक अपन कार्यकर्त्ता संग रहल ।

सामंतवादी प्रवृत्तिक घोर विरोधी, अपन विद्वता ओ सादगीक हेतु सतत मान्य पुरुष, मिथिला राज्य निर्माणक प्रथम उद्घोषक डा. लक्ष्मण झा एहि असार संसार कें त्यागि 23 जनवरी, 2000 कें 84 वर्षक अवस्था मे चल गेलाह । ज्योतिष्मान् नक्षत्र जकाँ मिथिलाक माटि-पानि पर उदित भेलाह ओ नक्षत्रपति जकाँ अस्त भेलाह ।

मिथिला मैथिलीक विकास अवश्य हेतै एहेन हिनकर धारणा छलनि । हिनकहि शब्द मे (12 मार्च, 1956 मे भीमशंकरक सभाक भाषणक अंश जे मिथिलाक मुक्ति'क नाम स' छपल छल)

''एहि समाजक प्राचीन उज्जवल अछि । एकरा स्मरण करी । घमंड लेल नहि, सत्कर्मक प्रेरणा लेल । इहलोक पड़लोक सब फेर सुधरतै । अधैर्य

कथीक? सब हेतै, गण्डकी, कोसी आदिक नहरि स' खेत पटतै, पर्याप्त अन्न उपजतै, केओ किए भूखल रहत ? हिमालयक पाथर स' चलय लेल बढ़िया सड़क ओ रहय लेल नीक घर बनतै, जल विद्युत स' अपन कल-कारखाना, रेल, मोटर आदि सवारी चलतै; रोगीक आरोग्य लेल अस्पताल ओ धियापुताक साधारण स' उच्चतम शिक्षाक लेल स्कूल, कॉलेज ओ विश्वविद्यालय बनतै। एखन तक नहि बनलै तें होइ अछि जे कतौ नहि ने बनै । से कतउ होइ। एखनधरि एहि वस्तु सभक खोज कहाँ कैलियै जे भेटैत ? कोन देश, कोन समाज आलस्य, औदासीन्य मे संपन्न भेल अछि ? कर्म मे चित्त, हृदय मे वैराग्य राखि चलू, कल्याण के छीनि सकत?''

जखनहि मिथिला मैथिलीक सर्वांगीण विकास हैत तखनहि एहि महामानवक प्रति असली श्रद्धांजलि हैत । मिथिलांचलक श्रद्धा-कुशक हमर तीन आंजुर अश्रु मिलल जल सभक्ति अछि, ओहि मिथिलाक महान सपूतक पावन स्मृति मे–

ओऽम मिथिला मैथिली गोत्रस्य
मिथिला समृद्ध कर्णधार कर्मयोगी
डा. लक्ष्मण शर्मा तृप्यतामिदम्
तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा, तस्मै स्वधा ॥

—o—

मिथिला-मैथिलीक उन्नायक-
प्रो० डा० प्रबोधनारायण सिंह

मैथिली भाषा, साहित्य, कला आ मिथिलाक सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक चेतना आइ जतयधरि पहुँचल अछि आ अपन परिचय आ स्थान बनौलक अछि ओहिमे नहि जानि कतेको गोटेक जीवन भरिक समर्पण, त्याग ओ योगदान अछि । लक्ष्य एखन आर आगू धरि अछि, मुदा पूर्वजक समर्पण मे आस्था स' प्रेरणा ल'क' आगूक बाट पर बढ़ल जासकैत अछि । एहने आस्थापूर्ण समर्पण हम प्रबोध बाबू मे देखने छलियनि । 21 मार्च 2005 क सांझ अनुज अग्निपुष्पक एहि सूचना पर सहजे विश्वास नहि भेल जे प्रबोध बाबू नहि रहलाह । अपन प्रेरणाक अवसान पर विश्वास कोना होइत । डा. लक्ष्मण झा, डा. लक्ष्मीनारायण सिंह एवं अन्य सहयात्री आ सहयोद्धा प्रबोध बाबूक संग 1956 स' 1975 धरि अपन कलकत्ताक प्रवास मे मिथिला-मैथिलीक सर्वांगीण विकासक लेल सतत सक्रिय एहि महापुरुषक संग डेग मिलबैत रहलहुँ । हमर आगूक डेग एना आलोप्त भ' जायत से विश्वास नहि भेल । एखनो हमरा होइत छल जे हम हुनक नरेंद्र सेन स्क्वैयरक आवास पर हुनका स' गप्प क' रहल छी जतय ओ कलकत्ता प्रवास मे पहिल बेर अगस्त 1956 मे भेटल छलाह । कहने छलाह जे काल्हि संध्या 6 बजे आउ । मिथिला संघक बैसार छैक सब स' परिचय भ' जायत। जखन हम पहुँचलहुँ, देखल जे एक मुस्लिम कार्यकर्त्ता मैथिली मे भाषण क' रहल छलाह । बहुत प्रभावित भेलहुँ । 1954 स' मिथिला-मैथिलीक काज मे डा. लक्ष्मण झा ओ प्रो. लक्ष्मीनारायण सिंहक संग संलग्न छलहुँ । मुदा मुसलमान कार्यकर्त्ताक संग काज करबाक ई पहिल मौका छल । प्रबोध बाबू करुणा, उदारता ओ लोकोपकारक जीवंत मूर्त्ति छलाह । हमरा देखल अछि जे अनेकानेक प्रतिभाशाली मुदा गरीब विद्यार्थी हिनक सहयोग पाबि कलकत्ता मे अध्ययन करैत छलाह तथा योग्य भेला पर कतेको व्यक्ति उत्तम कोटिक नोकरी पाबि गेलाह । कम

पढ़ल लिखल लोकक हेतु-दरबान, चपरासी, मोटर गाड़ी चालक तथा अन्य काजक व्यवस्था करैत छलाह । कोसी क्षेत्रमे जन्म लेनिहार मिथिला विभूति प्रो. प्रबोध नारायण सिंह स्वतंत्रता संग्रामक योद्धा आ मिथिला-मैथिलीक उन्नायक आब हमरा लोकनिक बीच विद्यमान नहि, हुनक पंचभूत शरीर कलकत्ताक गंगाक कछेर मे विलीन भ' गेल, मुदा ओ अपन अमर कीर्ति स' चिरंजीवी छथि आ रहताह । ओहि महान आत्माकेँ शत्-शत् नमन ।

सहरसा जिलाक सोनबरसा प्रखंड मे तिलाबय नदीक तट पर बसल सहमौरा गाम छनि प्रबोध बाबूक, किंतु हिनक जन्म भेल छनि 12 दिसंबर 1924केँ हिनक मातृक पस्तपार गाम मे । प्रारंभिक शिक्षा घर मे भेल छलनि। 1938 मे शाह आलमनगर स' मिडिल स्कूलक परीक्षा उत्तीर्ण भेल छलाह । सहरसा हाई स्कूल मे आगूक शिक्षा हेतु प्रवेश कयलनि मुदा 1942 मे देशक अगस्त क्रांति मे सक्रिय भ' गेलाह । देशकेँ ब्रिटिश शासन स' मुक्तिक हेतु जोरदार आंदोलन कयलनि । 1942 मे ब्रिटिश ओ बलूची फौज जखन सहरसा पहुँचल तखन अस्त्र-शस्त्र, तीर, धनुष, भाला, फर्सा स' युवा कार्यकर्त्ता केँ शस्त्रज्जित कयलनि । हिनक क्रांतिकारी एवं आक्रामणकारी गतिविधिक कारणें देखते ही गोली मार देने का आदेश' जारी कयल गेल छल । ब्लैक वारंट स्वाधीनता पूर्व तक रहलनि । क्रांतिकारी गोष्ठीक सक्रिय सदस्यक कारणें भूमिगत रहय पड़लनि । 1944मे प्रमुख अधिवक्ता लोकनिक सहयोग स' मधेपुरा स' मैट्रिक परीक्षा पास कयलनि । दू वर्ष एहि आंदोलन मे गमौलनि। 1945 मे 'साहित्यलंकार' ओ 1947 मे 'साहित्यरत्न' हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग स' उपाधि प्राप्त कयलनि । भागलपुर मे इंटर परीक्षा पास कयलाक बाद 1946 मे पटना विश्वविद्यालय मे संस्कृत मे स्नातक परीक्षा मे प्रवेश कयलनि। 1948 मे संस्कृत मे स्नातक (प्रतिष्ठा) पास क' प्रबोध बाबू बिहार छोड़ि कलकत्ता आबि गेलाह । 1950 मे एम. ए. परीक्षा ससम्मान कलकत्ता विश्वविद्यालय स' उत्तीर्ण भेलाह, जाहि मे हिनका दू टा स्वर्णपदक प्राप्त भेलनि । 1968 मे 'तुलनात्मक भाषा विज्ञान', 1969 मे 'पाली', 1970 मे 'फारसी' परीक्षा मे उत्तीर्ण भेल छलाह कलकत्ता विश्वविद्यालय स' जाहि मे एकाधिक स्वर्णपदक प्राप्त भेलनि । 1972मे प्रबोध बाबू कलकत्ता विश्वविद्यालय स' मैथिलीमे डी. लिट्. कयलनि । 1976 मे मगध विश्वविद्यालय,गया स'

हिंदी मे डी. लिट कयलनि । भाषा आ साहित्य मे समान कुशलता छलनि । प्राय: 12 गोट छात्र-छात्रा हिनका अधीन मे पी-एच.डी. कयने छलाह ।

देशकेँ स्वतंत्र भेलाक पश्चात् प्रबोध बाबू राष्ट्र सेवाक हेतु अध्यापनकेँ चुनलनि । प्राय: 40 वर्ष-1950 स' 1990 धरि-हिंदी, पाली, फारसी ओ तुलनात्मक भाषा, भाषा विज्ञानक अध्यापन कयलनि । प्रारंभ मे 1953 तक कलकत्ताक चारू चंद्र कॉलेज मे हिंदीक प्राध्यापक तथा 1953-1960 जून तक जयपुरिया कॉलेज मे हिंदी मे अध्यापन कयलनि । जुलाइ 1960 मे कलकत्ता विश्वविद्यालय मे हिंदी विभाग मे व्याख्याता नियुक्त भेलाह । बाद मे एही विश्वविद्यालयक हिंदी विभागाध्यक्ष रहलाह । 1990मे एतहि स' सेवानिवृत्त भेलाह ।

प्रबोध बाबूक पहिल पत्नी-इलारानी सिंहक मायक देहांत 1947 मे भ' गेलनि। पुन: 28 जुलाई 1950 मे अपन विवाह सहपाठिनी अणिमा धर स' कयलनि । एहि स' दू पुत्र रत्न-बुबी (उदय) ओ अजय भेलनि । उदय भाषा साहित्य ओ विज्ञान मे निष्णात छथि ओ भारत सरकारक उच्च शिक्षा विभाग मे कार्यरत छथि । अजय आयकर विभाग मे उच्च पद पर आसीन छथि । अणिमा जी बंगाल सरकारक लेडी ब्रेबोर्न कॉलेज मे हिंदीक प्रोफेसर छलीह तथा ओतहि स' सेवानिवृत्त भेलीह । अणिमा जी प्रबोध बाबूक संग मिथिला-मैथिलीक विकास मे वर्कर जकाँ काज कयलनि तथा ओ लोक साहित्यक एक निष्णात अध्येत्री छथि । इला सेहो हिंदी आ मैथिली मे पी-एच.डी. ओ डी. लिट्. कयने छलीह तथा भागलपुर ओ कलकत्ता मे अध्यापन करैत छली । हुनक आकस्मिक मृत्यु स' प्रबोध बाबू अत्यधिक मर्माहत भेल छलाह ।

प्रबोध बाबू मिथिला-मैथिली आंदोलनक मात्र प्रमुख संघर्षशील पदप्रदर्शकेँ नहि, अपितु मैथिली, हिंदी एवं उर्दूक विशिष्ट विद्वान, लेखक, अनुवादक तथा संपादक सेहो छलाह । पटना मे जखन ओ स्नातकक छात्र छलाह एकटा हिंदी पत्रिका 'मेल-मिलाप' मे काज करैत छलाह । पटना मे एक छोट लेटर प्रेसक जोगाड़ सेहो कयने छलाह । पटना विश्वविद्यालय स' संस्कृत मे बी. ए. (आनर्स) कयलाक उपरांत कलकत्ता विश्वविद्यालय मे हिंदी मे एम. ए.

पढ़वाक हेतु गेला पर अपन जे प्रेस छलनि से अपन प्रिय मित्र अर्थशास्त्री लक्ष्मीनारायण सिंह केँ द' देलथिन । जाहि प्रेसकेँ हमर गुरुवर लक्ष्मीबाबू कार्यशील नहि राखि सकलाह । ई गप्प हमरा लक्ष्मी बाबू स्वयं कहने छलाह। प्रबोधबाबू एहि पर कहियो चर्चा नहि कयलनि । कलकत्ता मे पुन: सिंह प्रेस स्थापित कयलनि ओ ओतहि स' अपन ओ परिवारक रचना प्रकाशन करय लगलाह । मिथिला-मैथिली आंदोलनकेँ मुखर करबाक हेतु 1951 स' 'मिथिला दर्शन' मासिक पत्रिकाक प्रकाशन करय लगलाह । अपना अतिरिक्त क्रमश: श्रीमती अणिमा सिंह ओ श्रीमती इला रानी सिंह के एहि काज मे भिड़ा देलनि। एक साक्षात्कार मे अणिमाजीक उक्ति 'ई (प्रबोधवाबू) पढ़ाई, लोकगीत, 'मिथिला दर्शन' ओ अन्य मे हंगामाक सृष्टि क' दैत छलथिन आ [illegible] सब टा सोझराबय पड़ैत छल ।'' 'मिथिला दर्शन' प्रारंभ स' हिनक पत्र छल । वहुत बाद मे अखिल भारतीय मिथिला संघक मुख्यमपत्र भ' गेल'। किंतु दर्शन प्रकाशन हेतु अर्थक व्यवस्था हिनका स्वयं करय पड़ैत छलनि । 'मिथिला दर्शन'क उद्बोधन वाक्य शुरु स' कविवर सीताराम झाक ई पद छल जे एखनो 'मिथिला दर्शन' अपनौने अछि-

'अछि सलाइ मे आगि बरत की बिना रगड़ने ।
पायब निज अधिकार कतहु की बिना झगड़ने ॥

प्रबोध बाबू 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे सब समय एहि मूलमंत्र केँ अपनौने रहलाह । हुनका मिथिला-मैथिलीक प्रति समर्पण, सजगता, कार्यशीलता आ प्रयासरत रहबाक प्रमाण 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे भेटैछ । भाषाक आधार पर राज्यक पुनर्गठन भेल, किंतु ताहि मे सत्तालोलुप कांग्रेसी सरकार द्वारा घोर पक्षपात स' काज लेल गेल । जाहिठामक जनता शांत रहल ताहि-ताहि ठामक कोनो मांग दिसि कानहु धरि नहि देल गेलैक । अढ़ाई करोड़ मैथिलीभाषी जनताक प्रतिनिधिमंडल स' साक्षात्कार कय, ओकर स्मार-पत्र ग्रहण कय, बहुत कालधरि तर्क-वितर्क कए, तखनहुँ राज्य पुनर्गठन आयोग अपन विवरण मे मैथिली भाषी जनताक मांग धरि नहि उल्लेख कयलक। एहि कारणें प्रबुद्ध मैथिली समुदाय मे जे क्षोभ व्याप्त छैक से चिंताक विषय । अंत मे लिखैत छथि-आइ कांग्रेस सत्ताक लोभ मे पड़ि राष्ट्रीय एकताकेँ विनष्ट करबाक पाप अपना कपार पर किएक लैत छथि ?

प्रत्येक प्रांतक बहुसंख्यक जनताक भाषा केँ स्वीकृति दए तथा अन्यान्य स्वीकृत भाषा जकाँ समान राजकीय सहायता प्रदान कए संविधानक आदेश पालन करब दिल्ली सरकारक परम कर्त्तव्य थिक । ('मिथिला दर्शन' जुलाइ 1960) । ओहिना मोन अछि प्रबोध बाबू अपन नेतृत्व मे एहि आयोग स' भेट कयने रहथि । पुन: 1961 मे पंजाब प्रांतक आंदोलनकर्त्ता लोकनि प्रांत पुनर्गठनक लेल संघर्ष केँ नेहरू राष्ट्रविरोधी षड्यंत्र कहल । किंतु अगस्त 1961क 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे जोरदार शब्द मे कहैत छथि 'पंजाबी वा मैथिली कोनो सम्मानीय भारतीय भाषाक समुन्नति स' देशक कोनो क्षति नहि भए सकैछ । तखन तकरा उचित अधिकार नहि देब कतय धरि नीक।'

मैथिली भाषाक विकासक हेतु जन आंदोलनक आह्वान करैत दर्शनक मइ-जून 1961क अंक मे लिखैत छथि, 'मैथिली भाषाक प्रति गणतंत्रात्मक सरकार स' न्याय तथा औचित्यक रक्षाक आशा करब व्यर्थ । ओ सर्वदा जनमतक समक्षहि झुकैत अछि । जन आंदोलनक समक्ष सरकार ओहिना कंपायमान भए जाइछ जेना बिलाड़क सम्मुख मुसरी । बिहार मे आधा स' अधिक लोक मैथिली भाषा-भाषी छथि । एक वा दू जिलाक त प्रश्न नहि, कोन प्रांतक दू तृतीयांस निवासी मैथिली बजैत छथि । ताहिठाम मैथिलीक कोनो मर्यादा नहि । एहि अभागलि, किंतु भारतक सर्वप्रसिद्ध एवं समृद्ध भाषाकेँ ने त' भारतीय संविधान मे कोनो स्थान देल गेल छैक आने प्रांतीय स्तर पर एकरा प्रांतीय भाषा घोषित कयल गेल छैक । ई किएक ? एहि लेल जे मिथिलाक जनता आंदोलन नहि करैछ । ओ गणतंत्रात्मक प्रशासन पद्धति समर्थक नेता लोकनिक विवेक पर निर्भर रहि आयल अछि । हुनका लोकनिक नैतिकता, विवेक एवं औचित्य-ज्ञान पर भरोस क' ओ बहुत किछु गमौलक। संप्रति मिथिला मे जागरण भए रहल छैक । लोक बुझि गेल अछि जे नपुंसक जकाँ हाथ पर हाथ दए बैसल रहने तथा नेता लोकनिक हाथ मे भविष्य अर्पित क' देने और बेसी नहि चलत । हमरा दृष्टिएँ दूरदर्शी केंद्रीय सरकारक ई कर्त्तव्य थिकै जे वातावरण मे विषाक्ताक सम्प्रसार हैवा स' पहिने मैथिली केँ अपन अचित अधिकार दए राष्ट्रीय एकताकेँ दृढ़ करय एवं अन्यायी हैवाक कलंक स' बांचि जाय ।

अक्टूबर 1966 मे मैथिली आंदोलनक जनप्रियता स' प्रबोधबाबू अत्यधिक उत्साहित भेल छलाह । जे हुनक 'मिथिला दर्शन'क अक्टूबर मासक संपादकीय स' स्पष्ट होइछ । संप्रति मैथिली आंदोलन यथेष्ट जनप्रियता प्राप्त क' लेने अछि । लोक सब मे नव उत्साह, नव लगन, नव आशाक संचार भ' रहल छैक । ई सौभाग्यक विषय जे अन्य क्षेत्रीय भाषाक आंदोलन जकाँ ई अन्ध नहि, वरन, राष्ट्रीयता-संवलित एवं निर्माणोन्मुख अछि । कलकत्ता, पटना, दड़िभंगा, सहरसा, पूर्णिया, प्रयाग, कानपुर एवं बंबई आदि स्थान मे नीक तथा अनुकरणीय काज भ' रहल अछि । एखन आवश्यकता अछि भागीरथी–व्रती नेतृत्वक । समुचित नेतृत्व पौने ई आंदोलन पवित्र सलिला भागीरथी जकाँ समस्त मिथिलांचलक दु:ख दैत्य दुरितादिक सत्वर प्रक्षालन कए सकैछ । यद्यपि नैसर्गिक तेज-वशात् मैथिल लोकनि ककरहु अपन नेता मानबा लेल तत्पर नहि भ' सकैत छथि, तथापि ई समय एहन अछि जखन दूरदर्शी, सहनशील, निर्भीक एवं सशक्त नेतृत्व मे सबस' बेसी अभिष्ट बुझाइछ ।

प्रबोध बाबूक सत्प्रयास स' 24 मई 1967 केँ सिन्दिरी स्थित विद्यापति परिषद्क तत्वावधान मे देशक अधिकतम मैथिली सेवी संस्था मिलि क' 'अखिल भारतीय मैथिली महासंघ'क निर्माण कयल । प्रो. सरोजानंद चौधरी (जमशेदपुर) अध्यक्ष ओ प्रो. प्रबोध नारायण सिंह (कलकत्ता) मुख्य सचिव बनायल गेलाह । कार्यालय छल 162/80, लेक गार्डेन्स, कलकत्ता अर्थात प्रबोध बाबूक निवास स्थान । मुख्य उद्देश्य छल मैथिलीक अधिकारक प्राप्तिक लेल व्यापक आंदोलन जकर नामकरण कयल गेल छल 'मैथिली संग्राम' । अहिंसात्मक विधि स' संग्राम संचालनक हेतु मैथिल सैनिक संग्रह कयल गेल छल । अधिकांश मैथिली सेवी संस्था महासंघ स' संबंधित भ' गेल छल । एकर सफलता पर दिसंबर 1967क मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे लिखैत छथि–अखिल भारतीय मैथिली महासंघक बहुमुखी अभियान स' समाजक चिंतनशील वर्ग मे एक नव चेतनाक प्रसार भेल छैक । महासंघक समक्ष एहन कोनो कारण नहि छैक जाहि स' ओकरा कनेको निराशाक बोध होइक । अंत मे लिखैत छथि–सिंदरी, पटना तथा दड़िभंगाक अधिवेशन स' अनुभव, प्रेरणा एवं शक्ति अर्जन क' पुन: जमशेदपुर मे 19 नवंबर केँ आयोजन भेल अछि जकरा मे महासंघ महत्त्वपूर्ण पदनिक्षेप कयने अछि ।

सरकार द्वारा मैथिली भाषाक उपेक्षा पर 'मिथिला दर्शन'क फरवरी 1968क अंकक संपादकीय मे लिखैत छथि, ई लज्जाक विषय जे कोटि-कोटि मिथिलावासी लोकनिक मातृभाषा उपेक्षित अछि । कोनो देशक इतिहास मे संसार भरि मे एहन दोसर उदाहरण कतहु नहि भेटत जतय अढ़ाइ कोटि जनताक मातृभाषाकेँ राजकीय स्तर पर भाषा-पद धरि प्राप्त नहि भेल हो । मिथिलाक अढ़ाइ कोटि जनता एहि ग्लानि स' पीड़ित, अपमानित एवं लांछित अछि । हमरा हिंदी वा आन कोनो भाषा स' विरोध नहि । हिंदी हमर राष्ट्रभाषा थिक, तें ओकरा माथ पर रखबैक । मैथिली हमर मातृभाषा थिक, तें ओकरा हृदय सिंहासन पर रखबैक । किंतु, हिंदीक लेल हम सब मातृभाषाक निरादर कदापि नहि करब । जौं बांग्ला, उड़िया तथा गुजराती आदि स' देशक एकता पर कोनो आंच नहि अबैत छैक त' मैथिलीक मान्यता स' एतेक विरोध किएक?' अंत मे लिखैत छथि 'मातृभाषा आइ क्रांति एवं बलिदान मांगि रहल अछि ।'

मैथिली ग्रंथ प्रकाशनक प्रसंग दिसंबर-जनवरीक 'मिथिला दर्शन'क संपादकीय मे लिखैत छथि, 'ई आनंदक विषय जे मैथिली ग्रंथक प्रकाशक लोकनिक संख्या दिनानुदिन बढ़ले जा रहल अछि । एहि स' ई स्वयमेव सिद्ध भ' जाइछ जे मैथिली ग्रंथक बिक्री भ' रहल अछि । पुनः अनुवादक प्रति भारतक आन भाषाक साहित्य स' अथवा अंतरराष्ट्रीय साहित्य स' परिचय प्राप्त करबाक लेल मैथिलीक पाठक केँ अपन भाषा छोड़ि आनहि भाषाक आश्रय ग्रहण करय पड़ैत छनि । यदि प्रकाशक लोकनि आन-आन भाषाक प्रसिद्ध ग्रंथक अनुवाद सेहो प्रकाशित करथि त' एहि अभावक पूर्ति बहुत दूर धरि भ' सकैत अछि । अनुवाद स' भाषा छोट नहि होइत छैक, ओकर गौरव ताहि स' और बढ़बे करैत छैक ।...कोनो भाषा अपन प्राचीन साहित्यहि टाक बलें सम्मान नहि पाबि सकैछ । ओकरा लेल ई आवश्यक होइत छैक जे ओ आधुनिकतम चेतना स' अनुप्राणित होइत रहय और ज्ञानक दौड़ मे पाछाँ नहि पड़ि जाय ।' अनुवाद काज केँ खूब प्रोत्साहन करैत छलाह । हमर पत्नी–पन्ना झा–स' अनेको कथा अनुवाद करौने छलाह तथा प्रकाशित कयने छलाह । अंग्रेजी लेखक इबस्सनक नाटक 'घोस्ट' केँ हिनका स' अनुवाद करौने छलाह जे अप्रकाशित रहल, कारण मिथिला कॉलेज दरभंगाक अंग्रेजी प्राध्यापक दामोदर ठाकुर द्वारा कयल अनुवाद पहिने प्रकाशित भ' गेल ।

देशक स्वतंत्रता संग्रामकेँ धर्मक संग आंदोलित करबाक हेतु लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक गणपति पूजाक आवाह्न कयने छलाह । प्रबोध बाबू 'मिथिला दर्शन'क मइ, 1968क अंक मे मैथिली दिवस मनयबाक अपील करैत छथि । 'सब दिशा स' ई आग्रह भए रहल अछि जे मैथिलीक लेल उग्र आंदोलनक श्रीगणेश अविलंब क' देल जाय । आंदोलनक इच्छा मात्र स' आंदोलन नहि होइत छैक । एहि दिशा मे सक्रिय प्रयास करै पड़ैत छैक । से प्रयास व्यक्ति विशेष वा संस्था विशेष स' अनुप्राणित भनहि भ' जाय, पूर्ण रूपें व्यवस्थित, संचालित तथा नियंत्रित नहि भ' सकैछ । एकर व्यापक प्रस्तुतिक लेल समाजक सब क्षेत्रक लोककेँ साकांक्ष होमय पड़तनि । आगामी मास मे श्री जानकी नवमी अछि । एकरा हमरा लोकनि मैथिली दिवसक रूप मे उद्घोषित करी । मैथिलीक उद्धारक लेल जानकी नवमी दिन स' पैघ आन कोनो अनुकूल दिवस नहि भ' सकैछ । एहि दिन प्रत्येक गाम मे प्रत्येक संस्था द्वारा मैथिलीक लेल प्रभात फेरी, शोभा-यात्रा आदि संपादित हो तथा अपन-अपन उच्च सरकारी पदाधिकारी केँ मैथिलीक अधिकार लेल लिखित प्रतिवेदन प्रेषित कैल जाय, जकर विवरण 'मिथिला दर्शन' तथा अन्यान्य पत्र-पत्रिकादि मे प्रकाशित भ' चुकल छैक ।' मैथिली दिवस, जानकी नवमी केँ मनायल जाय लागल । मैथिलीकेँ भारतीय संविधान आ अन्य स्थान मे मान्यता प्राप्त भ' चुकल अछि तथा एखनो मैथिली सेवी संस्था एकरा मना रहल छथि । पटना मे मैथिली महिला संघ प्रत्येक वर्ष बहुत उत्साह स' एहि पर्व केँ मनबैत अछि ।

मिथिलावासीकेँ युगक अनुकूल परिवर्तन परमावश्यक । एहि संबंध मे प्रबोध बाबू दर्शनक मार्च 1961क संपादकीय मे लिखैत छथि, 'बुद्धिमान हुनके लोकनि केँ मानल जा सकैछ जे युग परिवर्तनक अनुसार अपनहुँ मे यथावश्यक परिवर्तन क' लेथि । रीति-नीति, शिक्षा-दीक्षा, राजतंत्र-समाजतंत्र, सबमे आवश्यक परिवर्तन क' ओहि सबकेँ जीवनानुकूल बना लेब आवश्यक। कोनो समय मे केवल हठयोग स', केवल कीर्तन स', वा केवल शास्त्र चर्चा स' काज चलि जाइत छल, किंतु आजुक युग मे पूर्ण राजनैतिक चेतनाक जागरण आवश्यक । आइ हम युगानुरूप क' अपन मातृभाषा, अपन संस्कृति, अपन अधिकार एवं गंतव्यक पूर्ण निर्धारण नहि क' लैत छी त' हमरा लोकनि

सृष्टिक विकास-क्रम मे सहज लुप्त भ' जायवला अनेक जीव-जंतु जकाँ अपन अस्तित्व कें हेरा क' मेटा जायब, एहिमे कोनो संदेह नहि । संसार मे वैह टा जाति जीवित रहि सकल अछि जे अपना मे युगानुरूप परिवर्तन क' लेलक ।

वर्ष 1962क साधारण निर्वाचनक समय दर्शनक माध्यम स' प्रबोध बाबूक सुझाव मिथिलांचलक मतदाताकेँ–साधारण निर्वाचन समय सन्निकट अछि । संप्रति मिथिलांचलक चतुर कंगरेसिया नेता लोकनि मैथिलीयहि मे भाषण देब प्रारंभ करि देने छथि । ओ लोकनि कतहुँ-कतहुँ मैथिली भाषा एवं साहित्यिक उपेक्षा पर चिंता सेहो प्रकट करैत छथि जे मैथिलीक उन्नयनक लेल हम सदैव प्रयत्नशील रहब । किंतु, अपन दल (पार्टी)क सम्मुख ओ लोकनि मैथिलीक प्रश्न उपस्थित करबा मे सदा उदासीन रहलाह अछि । अंत मे, आशा अछि जे मैथिली प्रेमी जनता एहन दुरंगी नीतिवला अखढ़िया नेता लोकनिकेँ चिन्हबा मे भूल नहि करत । जे प्रबुद्ध वर्ग अपन भाषा, साहित्य तथा संस्कृतिक रक्षाकेँ अपन परम कर्त्तव्य बुझैत अछि से एहि निर्वाचनक अवसर पर अन्यान्य संकीर्ण नीति तथा वैयक्तिक लाभालाभ कें विस्मृत क' योग्य नागरिक हैबाक परिचय देत, एहिमे कोनो टा संदेह नहि । संगहि ईहो आशा अछि जे नेता लोकनि लोक-भावनाक सम्यक समाहार करबा मे आलस्य नहि देखा अपन कर्त्तव्य एवं भविष्यक प्रति जागरूक रहताह (मिथिला दर्शन, नवंबर-दिसंबर 1961)

मैथिली रंगमंचक विकासक प्रसंग प्रबोध बाबू लिखैत छथि, 'इतिहास एहि बातक साक्षी अछि, जे जाहि भाषा मे रंगमंचक उत्तरोत्तर विकास नहि तकरा जीवित रहनाइ असंभव । जाहि भाषाक बजनिहार लोकनि केवल आने-आन भाषाक नाटक तथा संगीत द्वारा मनोरंजन करबाक लेल बाध्य होइत छथि तकर लोप अवश्यंभावी । आगू कहैत छथि–आइ स' सात सौ वर्ष पूर्व जखन आन कोनो भारतीय भाषा मे नाटक-रचना धरि नहि होइत छलै तखन मैथिलीमे अनेक स्थान पर विकसित रंगमंच सेहो छलै, जाहिमे विशुद्ध मैथिली नाटकक अभिनय होइत छलै । संप्रति मैथिली रंगमंचक लेल चाही उच्च स्तरक चरित्रक एवं द्रव्यवान लोक सभक प्रचेष्टा एवं युवक-युवती लोकनिक व्रत-निष्ठा । घूर्णायमान रंगमंचक आविष्कार स' नाटक आइ नीक जकाँ चलचित्रक सामना क' सकैत अछि । यावत् धरि नाटककेँ उच्चस्तरीय सामाजिक मान्यता नहि

प्रदान कयल जाइछ एवं संभ्रांत कुलक युवती लोकनिक हेतु अभिनयशीलता विशिष्ट गुण नहि भानल जेतनि तावतधरि मैथिली रंगमंचक दिवास्वप्न चरितार्थ भेनाइ असंभव ('मिथिला दर्शन' जून 1960क संपादकीय स' उद्धृत)। अपने मूल ओ अनुवाद मैथिली नाटक रचना कयलनि एवं मैथिली रंगमंचक हेतु खुद सचेष्ट रहैत छलाह । हिनक यशस्वी पुत्र प्रो. उदयनारायण सिंह अनेको मैथिली नाटकक रचना कयने छथि । मैथिलीक सर्वप्रथम चेंबर ड्रामा हिनक निवास 162/80 लेक गार्डेन्स, कलकत्ता मे आयोजित भेल छल।

प्रबोधबाबूक संपादन काल मे 'मिथिला दर्शन' मातृभाषाक प्रति जागरूक करबाक सशक्त अभियान कयलक तथा मिथिला राज्य आंदोलन मे सक्रिय भूमिका निभौलक । दरभंगा रेडियो स्टेशन, मिथिला विश्वविद्यालयक निर्माण, दरभंगा मे भारत सरकार द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, समस्तीपुर तक बड़ी लाइन ओ अन्य विकास काज के अत्यंत सजग भूमिका 'मिथिला दर्शन'क छल। संगहि मैथिली साहित्यिक सर्वांगीण विकास मे अपेक्षित सहायता कयलक । ई पत्रिका मिथिला, मैथिल एवं मैथिलीक भविष्य, शिक्षाक माध्यम, साहित्य अकादमी एवं संविधान मे एकरा स्थान एवं जनगणना मे मातृभाषा मैथिली लिखायब आदि कतिपय समस्यादिक समाधान अभियान कयलक । सफलता सेहो भेटलै–साहित्य अकादमी मे मान्यता, मिथिला विश्विविद्यालय, समस्तीपुर तक बड़ी लाइन, दरभंगा मे रेडियो स्टेशन, ओतहि सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा मैथिलीकेँ संविधान मे मान्यता । प्रायः 23 वर्ष प्रबोध बाबूक संपादकत्व मे 'मिथिला दर्शन' अपन कीर्तिमान स्थापित क' बंद भ' गेल एवं ओतहि स' मैथिली दर्शनक प्रकाशन शुरू भेल जे प्रायः तीन वर्षक अभ्यंतर मे काल कवलित भ' गेल । पुनः श्री रामलोचन ठाकुरक संपादकत्व मे नव कलेवर मे 'मैथिली दर्शन'क प्रकाशन अखिल भारतीय मिथिला संघ प्रारंभ कयने अछि।

मिथिला-मैथिली आंदोलन मे कलकत्ताक अखिल भारतीय मिथिला संघ अपन कीर्तिमान स्थापित कयने अछि । एकर सर्वोपरि नायक छलाह प्रबोध बाबू आ हिनक टीम । मिथिला राज्यक प्रवल समर्थक, मैथिली भाषाक समर्थ साधक प्रबोध बाबू मैथिली आंदोलनक झंडा उठओलनि आ आगू बढ़लाह आ बढ़िते गेलाह । अपन विलक्षण व्यक्तित्व, सहज-सौम्य स्वभाव, अपूर्व विद्वतापूर्ण

आकर्षण भाषण शेली तथा अभिनव नेतृत्व क्षमता छलनि । साहित्य अकादमी मे मान्यताक लेल संघ पोस्टकार्ड ओ हस्ताक्षर अभियान चलौलक । प्रबोध बाबू सपत्नीक कलकत्ता स' अपन गाड़ी मे प्रस्थान कयलनि आ देवघर स' कार्यक्रम चालू भेल । संघक कार्यकर्त्ता अपन-अपन स्थान पर पहुँच गेल छलाह। मिथिलांचल मे सघन हस्ताक्षर अभियान चलौलनि । श्रीमती अणिमाजी अपना संग एक टेप रेकार्डर ल' गेल छलीह। प्रबोध बाबू दलान पर लोककेँ एकत्रित क' अपन काज करैत छलाह आ अणिमाजी अपन टेप रिकार्डर मे दादी-काकी स' विलुप्त होइत मैथिली लोकगीत केँ टेप करैत छलीह । एक अभियान मे दू काज भेल । साहित्य अकादमीक मान्यताक हेतु प्रयास आ अणिमाजी द्वारा एकत्रित लोक-गीत केँ पुस्तकाकार । यैह पोथी भेल अणिमाजीक पी.-एच.डीक थिसिस ।

साहित्य अकादमी मे मान्यताक हेतु कलकत्ता, प्रयाग, दरभंगा, मधुबनी सहरसा ओ अन्य जगह स' समुचित प्रयास भेल । एक गोपनीय घटना हम खोलि रहल छी । जाहि दिन साहित्य अकादमी मे मैथिलीक मान्यताक एजेंडा छल ओहि मे कलकत्ता स' दू विशिष्ट विद्वानकेँ जयबाक छलनि । प्रबोध बााबू केँ बुझल छलनि जे एकगोटे मैथिलीक विरोध करताह । जोगाड़ कयलनि एवं हिनका कलकत्ता विश्वविद्यालयक काज मे ओझरा देलनि । गोटी सुफल भेल एवं एहि बैसार मे मैथिलीक मान्यता भेटल ।

कॉटन स्ट्रीटक जैन प्रेक्षागृह मे विद्यापति पर्व समारोह आयोजित छल । एहि वर्षक पर्व मे हम स्वागत मंत्री ओ उड़ीसा राज्यक वर्त्तमान राज्यपाल श्री रामेश्वर ठाकुर स्वागताध्यक्ष छलाह । एहि पर्वक दू घटना ओहिना स्मरण अछि। पर्वक अवसर पर विशिष्ट लोकक पत्र अबैत छल जे पढ़िक' सुनायल जाइत छल । श्री सोमदेवजीक पत्र सेहो आयल छल । कार्यकारिणी समिति मे एहि पत्र पर दू तरहक विचार उत्पन्न भेल । आंदोलनकारी पत्र पढ़ल जयबाक पक्ष मे । घमर्थन भेल । कोनो निर्णय नहि भेल । प्रबोध बाबू एक मध्य रास्ता निकालि दुनू पक्षकेँ शांत कयलनि । एहि पर्वक उद्घाटनकर्त्ता छलाह भारत सरकारक मंत्री सत्यनारायण सिंह । निश्चय भेल जे हिनक भाषण छापल जाय। हम आर प्रबोध बाबू विड़ला हाउस मे जाय मंत्रीजी ठहरल छलाह,

संपर्क कयल । कहल गेल जे भाषण लिखि क' लाउ । देखि क' स्वीकृत भ' जायत। हम दुनू गोटे विक्टोरिया मेमोरियल मे गाड़ी मे भाषण लिखल । स्वीकृत करायल गेल । सत्यनारायण बाबू सबटा पढ़ि देलनि आ भाषणक अंत मे कहल जे किछु बात हमरा स' जे कहायल गेल से मंत्रीक हैसियत स' हमरा नहि बाज'क चाही । अस्तु, अहाँ सभक काज हैत । एतेक अल्प समय मे भाषण लिखब एवं प्रेस मे छापब, मात्र प्रबोध बाबूक' सकैत छलाह ।

प्रबोध बाबू साहित्य साधना, मैथिली साहित्य मे प्रकाशन, भाषा ओ राज्यक लेल आंदोलन, मैथिलकेँ व्यवस्थित करबाक संग चंदा अभियान मे सेहो ओतबे सक्रिय रहैत छलाह । एक बेरक घटना स्मरण अबैत अछि-हमर पत्नी एम. ए. (मनोविज्ञान) पढ़'क हेतु कलकत्ता गेलि छली । हम स्वयं सी. ए. फाइनलक बांचल एक ग्रुपक तैयारी मे लागल छलहुँ । सामूहिक चंदा करबाक छलै । हम ब्रजनाथ मित्र लेनक एक कोठली ल' क' रहैत छलहुँ। दक्षिण कलकत्ता मे प्रबोध बाबूक संग चंदाक हेतु घुमैत-घुमैत राति 12.30 बाजि गेल । आब अपन डेरा नहि आबि सकैत छलहुँ । प्रबोध बाबू अपन निवास ल' गेलाह आ हम सब बांटि-चुटि क' भोजन कयल । आनंदक वातावरण छल । जखन दोसर दिन भोर मे अपन निवास अयलहुँ, बिना सूचना केँ राति नहि अयबाक कारणें, पत्नी द्वारा जे दशा भेल से ओहिना मोन अछि।

प्रयाग स' मैथिलीक विशिष्ट विद्वान सपत्नीक कलकत्ता आयल छलाह । प्रबोधबाबू हिनका अपन निवास स्थान मे सत्कार पूर्वक रखलनि । किंतु, हिनका टंट-घंट बेसी । एहि महारथीक पत्नी भानस करथिन तखने भोजन करताह । ओहि समय मे भनसाघर मे आजुक व्यवस्था कहाँ छल । वर्त्तन-जारनिक इंतजाम करय पड़लनि । हिनका निवास स्थान पर चहल-पहल बेसी काल रहैत छल । मात्र मिथिलांचलक विद्वाने नहि, साधारण कंडक्टर, ड्राइवर, खलासी, दर्जी आ अन्य सब अबैत-रहैत छलाह । सब संतुष्ट भ' क' जाइत छलाह ।

ओहिना मोन अछि एक धनाढ्य सेठक बेटा केँ कोना मनुख बनौलनि । एहि सेठक बेटा अपन धंधा मे ठीक स' योगदान नहि करैत छल । कोनो काजक नहि छल । ओ भोरे प्रतिदिन प्रबोध बाबूक आवास पर अबैत छल ।

एकरा सामान्य गप्प क' बिदा क' दैत छलथिन । किछु दिनक पश्चात सेठक ई बुड़ल बेटा अपन वनस्पति कंपनीक प्रबंध निदेशक बनायल गेलाह ।

प्रारंभिक कालमे देशक स्वतंत्रता संग्राम–अगस्त क्रांति मे सक्रिय भेलाह। क्रांतिकारी भ' गेलाह । कलकत्ता प्रवास मे समाज सुधारक आ एकटा सामाजिक सांस्कृतिक तपल तपायल कार्यकर्त्ताक रूप मे प्रबोध बाबू सब स' आगाँ रहलाह । मैथिली भाषा तथा मिथिला राज्य आंदोलनकेँ नव-नव दिशा प्रदान करैत रहलाह । अखिल भारतीय मिथिला संघ, अखिल भारतीय मैथिली महासंघ, मैथिली रंगमंच, लोक साहित्य परिषद्, राजेंद्र छात्र भवन न्यास समितिक माध्यम स' कतेको काज कयलनि । अनेक विश्वविद्यालय आ संस्थाक उपदेष्टा समिति आ कार्यकारिणी सभाक सम्मानित सदस्य छलाह । साहित्य अकादमी हिनका उर्दू स' कुर्तुल एन हैदरक 'पतझड़ की आवाज'क मैथिली अनुवादक लेल 2002 मे पुरस्कृत कयने छल । वर्ष 1998 मे भीषण रक्तक्षयक कारणें प्रबोधबाबू पूर्ण रूप स' अस्वस्थ वाक् रहित आ चलबाक-शक्ति स' वंचित भ' गेल छलाह । 20 मार्च 2005केँ हिनक निधन भ' गेलनि ।

मिथिला विभूति प्रबोध बाबूक पंचभूत शरीर हमरा लोकनिक बीच आब नहि ओ अपन अमर कीर्ति मे चिरंजीवी छथि आ सतत् रहताह । ***'कीर्तिर्यस्य स जीवति ।'***

